●वर्ष : 16 ●अंक : 257 ●मूल्य : 02 रूपया मात्र पृष्ठ : 08 RNI No. DELHIN/2008/23928

दैनिक लोकतंत्र की शान

लोकतंत्र का स्तंभ

दिल्ली से प्रकाशित

गुरूवार 09 जनवरी 2025

Mfg & mkt by.. ANGEN PHARMACEUTICALS (OPC) PRIVATE LIMITED

Distributorship ke liye contact Karen .
(9315755133 / ya email Karen)
angenpharmaceuticals@gmail.com

समाचार

फ्रीबीज को लेकर सुप्रीम कोर्ट का तीखा सवाल

चुनाव आयोग ने भी कही ये बात

नई दिल्ली। देश में चुनाव के समय अलग-अलग राज्यों की सरकार जनता को लुभाने के लिए कई रेवड़ियां यानी फ्री बी बांटने का ऐलान करती है. आम मतदाताओं तक पहुंचने के लिए तमाम राजनीतिक दल अपने अपने हिसाब से अलग-अलग की तरह की घोषणाएं करती है. कोई महिलाओं को हर महीने 1000 रुपये देने की बात करता है तो कई सत्ता में आने पर महिलाओं को 2500 रुपये तक देने की बात करता है. अलग-अलग राजनीतिक दल अलग-अलग आयु वर्गे के हिसाब से अलग-अलग रेवड़ियों की घोषणाएं करती रही है. इसे लेकर चुनाव से पहले और चुनाव के बाद तमाम तरह की बहस भी हुई है. कई राजनीतिक दल इसे जनता के वेलफेयर से जोड़कर देखते हैं तो कई इसे पैसे की बबार्दी बताते हैं. अब इस मामले पर सुप्रीम कोर्ट ने पहली बार राज्यों की सरकारों को फटकार लगाई है. ये फटकार एक दूसरे मामले की सुनवाई के दौरान लगाई गई है। सुप्रीम कोर्ट ने जजों के वेतन और पेंशन के मामले की सुनवाई के दौरान मंगलवार को बड़ी टिप्पणी की थी. कोर्ट ने कहा था कि राज्यों के पास ऐसे लोगों को मुफ्त में देने के लिए पर्याप्त पैसे हैं, जो लोग काम नहीं करते हैं।

भारत में एचएमपीवी के 9 केस

मुंबई में वायरस से संक्रमित हुई 6 महीने की बच्ची

नूना न्यूज एजेंसी।

नई दिल्ली। चीन में कहर मचा रहे कोरोना वायरस जैसे ह्यूमन मेटान्यूमोवायरस यानी एचएमपीवी के मामले अब भारत में मिलने लगे हैं। देश में अब तक इसके 9 केस सामने आए हैं। नौंवा केस बुधवार को मुंबई में मिला है। यहां 6 महीने की बच्ची एचएमपीवी वायरस से संक्रमित पाई गई है। बच्ची 1 जनवरी से बीमार चल रही थी। खांसी, सीने में जकड़न और ऑक्सीजन लेवल 84% तक गिरने की वजह से अस्पताल में भर्ती किया गया था। हालांकि, अब वह ठीक है। इलाज के बाद उनकी स्थिति कंट्रोल में है. अब तक महाराष्ट्र में एचएमपीवी के 3, कर्नाटक और तमिलनाडु में 2-2, पश्चिम बंगाल और गुजरात में 1-1 केस मिला है। केंद्र सरकार ने विश्व स्वास्थ्य संगठन को पहले ही कह दिया है कि हमें समय-समय पर ह्यूमन मेटान्यूमोवायरस (एचएमपीवी) वायरस से संबंधित अपडेट देते रहना चाहिए. केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा ने कहा है कि भारत का निगरानी नेटवर्क सतर्क बना हुआ है। देश किसी भी उभरती स्वास्थ्य चुनौती का तुरंत जवाब देने के लिए तैयार है।

एचएमपीवी एक RNA वायरस है, जो आमतौर पर सर्दी जैसे लक्षण पैदा करता है। इससे खांसी या गले में घरघराहट हो सकती है। ऐसा 3 से 5 दिन रह सकता है। इस दौरान नाक बह सकती है. गले में खराश हो सकती है. ठंड लगकर तेज बुखार आ सकता है।

बरतें ये सावधानियां

-साबुन से बार-बार हाथ धोइए।
-बिना धुले हाथों से अपनी आंखें, नाक या मुंह को छूने से बचना चाहिए।
-ऐसे लोगों के साथ संपर्क से बचना चाहिए, जिनमें बीमारी के लक्षण दिख रहे हों।
-खांसते और छींकते समय मुंह और नाक को ढकना जरूरी है।
-बुखार, खांसी और छींक आ रही है, तो पब्लिक कॉन्टैक्ट से दूर रहें।
-खूब पानी पिएं और पौष्टिक भोजन खाएं।
-संक्रमण को कम करने के लिए सभी स्थानों पर बाहरी हवा के साथ पर्याप्त वेंटिलेशन का ख्याल रखिए।
-अगर आप बीमार हैं, तो घर पर रहें और दूसरों से संपर्क सीमित रखें।
-बीमार हैं तो लोगों से हाथ न मिलाएं. टिशू पेपर और रुमाल का इस्तेमाल करिए।

एचएमपीवी वायरस को लेकर कैसी है राज्यों की तैयारी?

-झारखंड में स्वास्थ्य विभाग के निर्देश पर एचएमपीवी के संदिग्धों की स्क्रीनिंग की प्रक्रिया बुधवार से शुरू हो गई है. रांची स्थित राजेंद्र इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (रिम्स) और जमशेदपुर स्थित महात्मा गांधी मेमोरियल मेडिकल कॉलेज को नोडल सेंटर बनाते हुए सैंपल की जांच की व्यवस्था की गई है।
-पड़ोसी राज्य पश्चिम बंगाल में एचएमपीवी के केस मिलने की वजह से एहतियाती तौर पर एयरपोर्ट, रेलवे स्टेशन और बस स्टैंड पर भी स्क्रीनिंग शुरू करने के निर्देश दिए गए हैं. स्वास्थ्य मंत्री के निर्देश पर सभी प्रमुख अस्पतालों में आइसोलेशन वार्ड बनाए गए हैं।
-बिहार की राजधानी पटना में जिला प्रशासन ने लोगों से केंद्र और राज्य सरकार द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का पालन करने का आग्रह किया. जिला प्रशासन ने एक बयान जारी कर कहा, "लोगों को एचएमपीवी को फैलने से रोकने के लिए संबंधित अधिकारियों द्वारा जारी स्वास्थ्य संबंधी सलाह का पालन करना चाहिए।
चीन में फैले एचएमपीवी वायरस से भारत में दहशत, 7 मामले आए सामने, जानें किन लोगों को ज्यादा खतरा?
-पटना के जिलाधिकारी (डीएम) चंद्रशेखर सिंह ने जिला सिविल सर्जन को मौसमी इन्फ्लूएंजा और एचएमपीवी समेत सांस रोगों से पीड़ित रोगियों के उचित इलाज के लिए अस्पतालों के बेहतर संचालन को सुनिश्चित करने का भी निर्देश दिया।
-महाराष्ट्र के नागपुर में मंगलवार को ह्यूमन मेटान्यूमोवायरस यानी एचएमपीवी के 2 मामले सामने आए. 13 और 7 साल की दो लड़कियों में यह लक्षण दिखाई दिए थे. राज्य के सार्वजनिक स्वास्थ्य विभाग के सूत्रों के अनुसार, दो दिन तक लगातार बुखार रहने के बाद इन लड़कियों ने एक निजी लैब में जांच कराई. उनकी रिपोर्ट पॉजिटिव आई. इनका घर पर ही इलाज किया गया. अधिकारियों ने कहा कि दोनों बच्चों की हालत स्थिर है।
-पंजाब में बुजुर्गों और बच्चों को मास्क पहनने की सलाह दी गई है. अस्पतालों में आइसोलेशन वार्ड बनाए जा रहे हैं।
- गुजरात में अस्पतालों में आइसोलेशन वार्ड बनाए जा रहे हैं। हरियाणा में भी स्वास्थ्य विभाग को एचएमपीवी केसेस पर निगरानी रखने के आदेश दिए गए हैं।

क्या आपके हेल्थ इंश्योरेंस में कवर होगा एचएमपीवी का इलाज?

इस बीमारी के फैलने की खबरें सुनने के बाद आप भी ये जरूर जानना चाहेंगे कि क्या इसका इलाज आपके हेल्थ इंश्योरेंस में कवर होता है या नहीं। nsurity की चीफ क्लेम ऑफिसर सुमन पाल ने कुछ वेबसाइट्स को इस बारे में विस्तार से जानकारी दी है. जिसके मुताबिक हेल्थ इंश्योरेंस पॉलिसी में एचएमपीवी का इलाज भी स्टेंडर्ड रेसपिरेटरी इलनेस के तहत ही कवर करती हैं. जिसमें हॉस्पिटल में भर्ती होने, पीसीआर और रेसपिरेटरी पैथोजन्स के टेस्ट के लिए डायग्नोस्टिक टेस्ट, आउट पेशेंट कंसल्टेशन और ट्रीटमेंट का खर्च शामिल है।

ज्वलंत मुद्दा
सम्पादकीय

राहुल गांधी तय करेंगे, कौन बनेगा दिल्ली का अगला मुख्यमंत्री ?

चुनाव आयोग ने दिल्ली में विधानसभा चुनाव की तारीख का ऐलान कर दिया है। देश के मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार ने मंगलवार को बतौर सीईसी अपनी आखिरी प्रेस कांफ्रेंस में दिल्ली में विधानसभा चुनाव की तारीख का ऐलान करने के साथ ही अपने ऊपर लगाए जा रहे तमाम आरोपों का भी एक-एक करके जवाब देने की कोशिश की। दिल्ली में इस बार मतदाताओं की संख्या एक करोड़ 55 लाख 24 हजार 858 है जिसमें से महिला मतदाताओं की संख्या 71 लाख 73 हजार 952 है। जाहिर तौर पर, देश के कई अन्य राज्यों की तरह दिल्ली में भी महिला मतदाता, चुनावी जीत-हार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने जा रहे हैं। हालांकि इस बार दिल्ली की चुनावी लड़ाई बहुत ज्यादा दिलचस्प होने जा रही है। देश की राजधानी दिल्ली में 5 फरवरी को होने जा रहे मतदान में मुख्य मुकाबला अरविंद केजरीवाल की आम आदमी पार्टी और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की भारतीय जनता पार्टी के बीच में होने जा रहा है। अरविंद केजरीवाल के लिए इस बार का विधानसभा चुनाव, उनके अस्तित्व के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण और निर्णायक चुनाव होने जा रहा है। दिल्ली के मुकाबले कहीं ज्यादा बड़े और महत्वपूर्ण राज्य- पंजाब में सरकार होने के बावजूद देश की राजधानी दिल्ली का केजरीवाल के लिए अपना महत्व है। अगर केजरीवाल दिल्ली का यह विधानसभा चुनाव जीत नहीं पाते हैं तो आम आदमी पार्टी पर उनकी पकड़ कमजोर हो जाएगी और साथ ही विपक्षी इंडिया गठबंधन में भी उनका दबदबा कमजोर होता चला जाएगा। घोटाले के आरोप में जेल तक की यात्रा करने वाले अरविंद केजरीवाल यह बखूबी जानते और समझते हैं कि दिल्ली की हार एक बार फिर से उन्हें राजनीतिक रूप से अछूत बना देगी। क्योंकि विपक्षी गठबंधन की सबसे बड़ी पार्टी कांग्रेस ने लोकसभा चुनाव के दौरान भले ही मजबूरी में कई राज्यों में आप के साथ गठबंधन किया था लेकिन सच्चाई तो यही है कि सोनिया गांधी इस देश की राजनीति में नीतीश कुमार और अरविंद केजरीवाल पर कतई भरोसा नहीं करती है।

SYED ZAKI HAIDER
(EDITOR / PUBLISHER CUM MANAGING DIRECTOR
OF NAI UMMEED NEWS AGENCY
MOBILE NO. 9911371802
EMAIL SYEDZAKIHAIDER786@GMAIL.COM

भुवनेश्वर में 3 दिन का प्रवासी भारतीय दिवस सम्मेलन

पीएम मोदी 9 जनवरी को करेंगे उद्घाटन

नूना न्यूज एजेंसी।

भुवनेश्वर। ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर में आज से तीन दिवसीय प्रवासी भारतीय दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है. 50 से ज्यादा देशों के गणमान्य इस कार्यक्रम में शिरकत कर रहे हैं. वहीं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 9 जनवरी को इस कार्यक्रम का औपचारिक रूप से उद्घाटन करेंगे। वहीं राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू 10 जनवरी को समापन भाषण देंगी.विदेश मंत्रालय के अनुसार, इसमें मुख्य अतिथि त्रिनिदाद और टोबैगो की राष्ट्रपति क्रिस्टीन कार्ला कंगालू का डिजिटल तरीके से संबोधन होगा. सम्मेलन का विषय ह्यविकसित भारत में प्रवासी भारतीयों का योगदान' है।

>> 5 हजार से ज्यादा प्रवासी भारतीय होंगे शामिल

वहीं, मुख्य सचिव मनोज आहूजा ने बताया कि इस कार्यक्रम में 5 हजार से अधिक प्रवासी भारतीय शामिल होंगे। भुवनेश्वर, पुरी और जाजपुर में 21 जगहों को चुना गया है, जहां उन्हें ले जाया

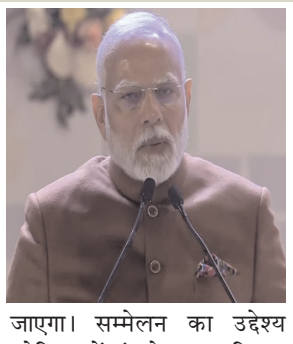

जाएगा। सम्मेलन का उद्देश्य ओडिशा में इंटरनेशनल टूरिस्ट्स को बढ़ाना है। अमित कुमार ने आईएएनएस से बातचीत में इस कार्यक्रम के बारे में कहा कि मैं भारतीय हूं और पिछले 16 साल से सिंगापुर में रह रहा हूं और वहीं काम कर रहा हूं. मैं स्टैंडर्ड चार्टर्ड बैंक में कार्यरत हूं. मैं भोजपुरी एसोसिएशन ऑफ सिंगापुर की तरफ से आया हूं और सिंगापुर के उच्चायोग ने हमें बुलाया था।

>> "पीएम मोदी ने हमें आमंत्रित किया"

मोहन चरण मांझी भी हमारे साथ थे, हम लोग उनसे मिले थे। उन्होंने भी हमें प्रधानमंत्री मोदी जी की तरफ से आमंत्रण दिया था और अपनी तरफ से भी हमें बुलाया था। यह बहुत सुखद बात है कि प्रधानमंत्री का संदेश हम तक पहुंचा और इसी तरह से यह संदेश दुनिया भर में फैल रहा होगा। आप समझ सकते हैं कि सरकार का दृष्टिकोण कितना स्पष्ट है कि वह जमीनी स्तर तक पहुंच रही है, और यह बहुत ही दुर्लभ है। विकसित भारत के बारे में आप क्या कहेंगे, और पिछले दशक में आपने क्या बदलाव महसूस किया है? इस पर उन्होंने कहा कि सबका विकास समान रूप से हुआ है और सब पर समान ध्यान दिया जा रहा है, चाहे वे देश में हों या किसी भी तबके से. आप देख सकते हैं कि हमारे लोकेश जो दुनिया में सबसे युवा चैंपियन बने, मोदी जी ने उन्हें बुलाया, उनसे बात की और पूछा कि वे देश को और कैसे आगे बढ़ा सकते हैं। अगर प्रधानमंत्री का दृष्टिकोण इतना स्पष्ट हो कि हर व्यक्ति तक पहुंचा जाए, तो इससे बड़ी बात और क्या हो सकती है?

>> भारतीय होने पर हमें गर्व

आपको यह भी पता है कि भारत की जनसंख्या आज दुनिया में पहले या दूसरे स्थान पर है, और इस तरह सभी तक पहुंचना संभव हो पाया है। जहां भी हम रहे, चाहे वह अफ्रीका में हो या ग्वाना में, हर कोई आज अपने आप को भारतीय होने पर गर्व महसूस करता है। भारतीयों का सम्मान विदेशों में बहुत बढ़ गया है, और इसे शब्दों में नहीं कहा जा सकता।

वहीं, डॉक्टर अरुण कुमार प्रहेराज ने कहा कि मैं इस कार्यक्रम में शिरकत करने के लिए बहरीन से आया हूं. पिछले 10 वर्षों में भारत में जो परिवर्तन और प्रगति देखी है, वह बहुत ही सकारात्मक रही है। ओडिशा में होने जा रहा 18वां प्रवासी भारतीय सम्मेलन एक महत्वपूर्ण अवसर है, क्योंकि यह हमारे माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में हो रहा है। ओडिशा में खनिज संसाधन, पर्यटन सुविधाएं और अन्य संभावनाओं से भरपूर अवसर हैं, जो राज्य को और अधिक विकसित बना सकते हैं।

बीजेपी मंदिर प्रकोष्ठ के कई नेता आप में हुए शामिल

100 से ज्यादा सदस्यों ने बदला पाला

नूना न्यूज एजेंसी।

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी मंदिर प्रकोष्ठ के कई नेता आम आदमी पार्टी में शामिल हो गए हैं. 100 से ज्यादा सदस्यों ने पाला बदल लिया है। दिल्ली विधानसभा चुनाव से पहले इसे बीजेपी के लिए झटका माना जा रहा है। हाल ही में आम आदमी पार्टी सरकार ने पुजारी-ग्रंथी सम्मान योजना का ऐलान किया था, जिसके तहत आप की सरकार बनने पर पुजारियों को 18000 रुपये देने का वादा किया गया। इसके बाद दिल्ली के पुजारियों ने खुशी जाहिर की थी। केजरीवाल ने पुजारी-ग्रंथी सम्मान योजना को लेकर 30 दिसंबर को एक्स पर लिखा था कि देश भर से फोन और मैसेज आ रहे हैं। सभी धार्मिक लोग बहुत खुश हैं. दिल्ली के कई पुजारी और ग्रंथी मुझसे मिलने आए और उन्होंने आशीर्वाद दिया। केजरीवाल ने कहा कि आम आदमी पार्टी के जीतने पर दिल्ली में मंदिरों के पुजारियों और गुरुद्वारा साहिब के ग्रंथियों को 18,000 रुपये प्रति माह देंगे। ये योजना समाज में उनके आध्यात्मिक योगदान और हमारी सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित रखने के उनके प्रयासों का सम्मान है।

>> इस मौके पर क्या बोले अरविंद केजरीवाल

इस मौके पर अरविंद केजरीवाल ने कहा कि बीजेपी के मंदिर प्रकोष्ठ ने समय समय पर वादे किए, लेकिन उन्होंने कुछ नहीं किया. आम आदमी पार्टी जो कहती है तो उसको करती है.। चुनाव के बाद पुजारी और ग्रंथि सम्मान योजना की शुरूआत करेंगे। बीजेपी के 'मंदिर प्रकोष्ठ' के कई सदस्य पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल, पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया और अन्य आप नेताओं की मौजूदगी में आप में शामिल हुए। आम आदमी पार्टी आज अपनी 'सनातन सेवा समिति' भी शुरू करने जा रही है। दिल्ली में चुनाव की तारीखों का ऐलान हो चुका है, ऐसे में हर पार्टी की तरफ आप भी अपने वोटर्स को लुभाने में लगी हुई है।

अवैध बांग्लादेशियों के बनाए गए फर्जी जन्म प्रमाण पत्र

महाराष्ट्र। के मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस ने बुधवार को मालेगांव में अवैध बांग्लादेशी प्रवासियों को जारी किए गए फर्जी जन्म प्रमाण पत्र के बारे में भाजपा नेता किरीट सोमैया के आरोपों की एसआईटी जांच के आदेश दिए है। महाराष्ट्र गृह विभाग ने बताया कि एसआईटी का नेतृत्व नासिक के डीआइजी करेंगे और जिला प्रशासन और पुलिस के अधिकारी भी एसआईटी में होंगे। एसआईटी जांच कर समस्या पर अंकुश लगाने के उपायों के साथ रिपोर्ट देगी। 2 जनवरी को, भाजपा नेता किरीट सोमैया ने आरोप लगाया था कि मालेगांव के लगभग 1,000 लोगों ने जन्म प्रमाण पत्र प्राप्त करने के लिए खुद को बांग्लादेशी रोहिंग्या के रूप में गलत तरीके से प्रस्तुत किया। उन्होंने आगे कहा कि नासिक कलेक्टर और नासिक नगर निगम ने मामले की पूरी समीक्षा शुरू कर दी है। उन्होंन कहा कि मैंने पाया है कि एक घोटाला किया गया था जहां मालेगांव के लगभग 1,000 लोगों ने खुद को बांग्लादेशी रोहिंग्या के रूप में गलत तरीके से प्रस्तुत किया।

दिल्ली वालों के दिल में क्या

>> वे मुद्दे कौन से जो इस बार हार-जीत तय करेंगे?

नूना न्यूज एजेंसी।

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा चुनाव अपने आप में बेहद रोचक होता रहा है। दिल्ली में कांग्रेस के पतन के बाद आम आदमी पार्टी बेहद मजबूत बनकर उभरी. आप की दिल्ली की राजनीति में एंट्री के बाद दिल्ली में चुनावी मुद्दे जो राष्ट्रीय हुआ करते थे वो विधानसभा चुनाव में स्थानीय हो गए। बिजली, पानी, शिक्षा जैसे मुद्दे पहले से अधिक गुंजने लगे. आइए जानते हैं कि इस चुनाव में कौन-कौन से वो मुद्दे हैं जो मतदाताओं को सबसे अधिक प्रभावित कर सकते हैं। इस चुनाव में आम आदमी पार्टी मुफ्त योजनाओं और कामकाजी मॉडल के दम पर मैदान में उतर रही है. वहीं भारतीय जनता पार्टी "मोदी फैक्टर" और विकास एजेंडा पर जोर देगी. कांग्रेस के पास खोने के लिए दिल्ली में कुछ भी नहीं है ऐसे में पार्टी अपने आप को मजबूत करना चाहेगी।

>> दिल्ली को पूर्ण राज्य का दर्जा

दिल्ली के लिए पूर्ण राज्य की मांग पुरानी रही है. आम आदमी पार्टी इसे लगातार उठाती रही है. कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी की तरफ से कभी भी इसे लेकर बहुत अधिक मुखरता नहीं दिखायी गयी है। हालांकि जनता के बीच इस मुद्दे का प्रभाव भी रहने की संभावना है।

दिल्ली की कानून व्यवस्था केंद्र सरकार के हाथ है. अरविंद केजरीवाल की तरफ से लगातार इसे लेकर आवाज उठाए जाते रहे हैं। दिल्ली की कानून व्यवस्था एक बड़ी चुनौती रही है। दिल्ली की जनता विधानसभा चुनाव में इसे भी एक फैक्टर के तौर पर रख सकती है।

अल्पसंख्यक मतों का किधर होगा रुझान

दिल्ली के अल्पसंख्यक समुदाय बीजेपी से दूर रहे हैं। शाहीन बाग, CAA और अन्य छोटे बड़े दंगे जो पिछले 5 साल में हुए उसे देखते हुए एक बार फिर अल्पसंख्यक वोटर्स का क्या रुख होता है वो बेहद अहम होगा. अल्पसंख्यक वोटर्स एक जमाने में कांग्रेस के परंपरागत वोटर्स रहे थे. हालांकि पिछले 2 चुनाव में आम आदमी पार्टी को यह वोट मिलता रहा है।

>> मुफ्त योजना के रास्ते पर सभी दल

आप की मुफ्त योजनाएं, जैसे मुफ्त बिजली, पानी, और बस यात्रा, इस बार भी चर्चा में है. आम आदमी पार्टी के बाद अब दूसरे दलों की तरफ से भी इस तरह की घोषणा होती रही है. बीजेपी इसे "रेवड़ी कल्चर" कहते हैं और तर्क देते हैं कि ऐसी योजनाएं सरकारी खजाने पर भारी बोझ डालती हैं। दिल्ली के मतदाताओं को मुफ्त योजनाओं का सीधा लाभ मिलता है। आप की लोकप्रियता के पीछे इसे अहम फैक्टर माना जाता है।

भाजपा के वरिष्ठ नेता फिरासत अली को घर में नजरबंद किया गया

नूना न्यूज एजेंसी।

हैदराबाद। भाजपा के वरिष्ठ नेता और पूर्व प्रवक्ता फिरासत अली बाकरी को मिर्चचौक पुलिस ने घर में नजरबंद कर दिया है, ताकि कांग्रेस के गुंडों द्वारा भाजपा जी.एस. डॉ. कसम वेंकटेश्वरलू जी पर किए गए हमले को रोकने के लिए मार्च को रोका जा सके। सिर में चोट लगने के बाद उन्हें नामपल्ली के केयर अस्पताल में आपातकालीन उपचार दिया जा रहा है। अभी-अभी उनसे मिलने गया। हिंसा की इन घटनाओं की कड़ी निंदा करता हूँ। मैं जिम्मेदार लोगों के खिलाफ तत्काल कार्रवाई की मांग करता हूँ।

मुख्य समाचार

मरम्मत कार्य के दौरान दो दिन बंद रहेगा स्याना फाटक

गढ़मुक्तेश्वर » नगर में स्थित मेरठ वाला रेलवे फाटक मरम्मत कार्य के दौरान दो दिन बंद रहेगा। इससे लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।गजरौला के वरिष्ठ इंजीनियर रेलवे ने पत्र जारी करते हुए जानकारी दी है कि नगर से कांकाठेर के बीच स्थित रेलवे गेट संख्या - 51/स्क(मेरठ वाला) पर ओवर हलिंग का कार्य चल रहा है। इसके चलते मेरठ वाला फाटक आठ जनवरी बुधवार सुबह आठ बजे से नौ जनवरी बृहस्पतिवार शाम आठ बजे तक बंद रहेगा। इससे मेरठ की ओर जाने वाले वाहनों को पुराना दिल्ली रोड पर स्थित फ्लाई ओवर से आवागमन करना पड़ेगा। इससे लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

दो शातिर गोकश को मुठभेड़ कर पुलिस ने गिरफ्तार किए

गाजियाबाद » मसूरी पुलिस ने अपनी बहादुरी दिखाते हुए दो शातिर गोकश को मुठभेड़ कर किया गिरफ्तार दोनों गोकश को मुठभेड़ के दौरान

पैर में गोली लगी और दोनों पुलिस कि गोली लगने से घायल हो गए और उन्हें अस्पताल मे भर्ती करवाया गया है चार जनवरी को थाना मसूरी पर बॉबी निवासी ग्राम नाहल मसूरी ने अपनी गाय चोरी हो जाने का मुकदमा दर्ज कराया गया था चोरी की गई गाय के अवशेष ढवारसी के जंगल में ईख के खेत में मिले थे बरामद अवशेष के आधार पर दर्ज मुकदमा कि जांच कि जा रही थी पुलिस कि जांच मे फैजान पुत्र अनीश निवासी ग्राम नाहल थाना मसूरी वह इस्तकार पुत्र इस्लाम निवासी ग्राम ढवारसी थाना मसूरी को किया गिरफ्तार और फैजान इस्तकार को पुलिस अपने साथ लेकर गई और गाय काटने के औजार व अवशेष भी बरामद किया ढवारसी के जंगल में आए जहां पर पहले से छुपाए हुए असलाह से पुलिस टीम पर जान से मारने की नीयत से फायर कर दिया पुलिस द्वारा की गई जवाबी आत्मरक्षार्थ फायरिंग में दोनों शातिर के पैर में गोली लगी दोनों को उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया। दोनो के पास से एक तमंचा 315 बोर एक खोखा एक कारतूस जिंदा एक एक छुरा एक बांक व काटे गए गोवंश के अवशेष बरामद कर लिए गए है

थाना लोनी पुलिस द्वारा अवैध शराब के साथ युवक गिरफ्तार,कब्जे से 40 पव्वे अवैध अंग्रेजी शराब बरामद

गाजियाबाद » थाना लोनी पुलिस टीम द्वारा चेकिंग के दौरान अवैध शराब के साथ एक अभियुक्त परवेज पुत्र मगलूद्दीन निवासी चांद मस्जिद के पास इकरामनगर लोनी गाजियाबाद, उम्र करीब 24 वर्ष को चौकी क्षेत्र कस्बा से गिरफ्तार किया जिसके कब्जे से 40 पव्वे अवैध अंग्रेजी शराब अरुणाचल प्रदेश मार्का बरामद हुई। गिरफ्तार अभियुक्त के विरूद्ध थाना लोनी पर आबकारी अधिनियम की धारा-60/63 के अन्तर्गत अभियोग पंजीकृत किया गया। अग्रिम वैधानिक कार्यवाही की जा रही है। अभियुक्त ने पूछताछ करने पर बताया कि मैं अरुणाचल प्रदेश से चोरी-छिपे अवैध शराब कम दामों पर खरीदकर लाता हूँ तथा मुनाफा कमाने के लिये आते-जाते लोगों को बेच देता हूँ तथा इससे जो रूपये मिलते है उनसे अपने शौक पूरे करता हूँ। पुत्र मगलूद्दीन निवासी चांद मस्जिद के पास इकरामनगर लोनी गाजियाबाद, उम्र करीब 24 वर्ष है।

पूर्व ब्लाक प्रमुख ने किया प्रो अल्टीमेट जिम टू का उद्घाटन

हाथरस। कस्बा सासनी के मुहल्ला विष्णुपुरी में श्री राधाकृष्ण मंदिर के निकट महिलाओं को सौष्ठवता के साथ अपने स्वास्थ्य एवं निरोगी रहकर

उनमें आत्मशक्ति जाग्रत करने के लिए प्रो अल्टीमेट जिम 2 का उद्घाटन किया गया। जिससे महिलाएँ अपने स्वस्थ और निरोगी रख सकें।मंगलवार को प्रो अल्टीमेट जिम टू का उद्घाटन पूर्व ब्लाक प्रमुख श्रीमती अंजली सोलंकी ने फीता काटकर किया। उन्होंने महिलाओं में आत्मशक्ति जाग्रत करते हुए कहा कि आज की नारी कमजोर नहीं है, वह बहुत मजबूत है। जिम में व्यायाम के माध्यम से जीने के गुर सीखकर आत्मविश्वास को बढ़ाना होगा। यदि हम स्वरक्षा के गुर सीख गए तो कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी अपने आत्मसम्मान की रक्षा कर सकती है। इस दौरान मनवीर चैधरी,पारस गुप्ता,शांति गुप्ता, सरोज जैन प्रज्ञा वार्ष्णेय, श्यामसुंदर जैन, टिंकू खान, लकी, विश्वास, राजीव अग्रवाल, मनोज अग्रवाल,आदि थे।

आपसी कहासुनी को लेकर दो पक्ष भिड़े

हाथरस। कस्बा सासनी के मुहल्ला कुम्हरियान में दो पक्ष आपसी कहासुनी को लेकर भिड गये। जिसमें जमकर लात घूंसे चले। एक युवक घायल हो गया। घटना की तहरीर एक पक्ष ने दूसरे पक्ष के खिलाफ कोतवाली में दी है। मंगलवार को मिली जानकारी के अनुसार कस्बा के मुहल्ला कुम्हरियान में एक युवक की कस्बा के ही युवक से कहासुनी हो गई। जिसे लेकर दोनों में पहले तो वाकयुद्ध हुआ फिर दोनों ओर से लात घूंसे चले। जिसमें एक युवक घायल हो गया। घटना की जानकारी होने पर मुहल्ले के लोगों की भीड़ जुट गई। किसी प्रकार लोगों ने दोनों पक्षों को शांत कराया। वहीं एक पक्ष का आरोप था कि दूसरे पक्ष का युवक उसकी बेटी के साथ छेड़खानी करता है। जिसे लेकर जब जब युवक से कहने गया तो युवक उस पर हावी हो गया और झगड़ा करने लगा। उधर घटना की जानकारी होने पर दूसरे पक्ष के लोग भी मौके पर पहुंच गये। और घायल युवक को उपचार के लिए निजी चिकित्सक के पास पहुंचे, जहां उसका उपचार किया गया। उधर प्रथम पक्ष ने घटना की तहरीर कोतवाली में दूसरे पक्ष के युवक के खिलाफ दी है। जिसे लेकर पुलिस मामले में जांच कर रही है।

श्री जयराम रमेश, संसद सदस्य, महासचिव (संचार) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, द्वारा जारी बयान

8 जनवरी, 2025 केंद्र सरकार द्वारा जारी किए गए आंकड़ों के मुताबिक वित्त वर्ष 2025 में सिर्फ 6.4% GDP ग्रोथ का अनुमान है। यह चार साल का सबसे निचला स्तर है, और वित्त वर्ष 2024 में दर्ज 8.2% के ग्रोथ की तुलना में स्पष्ट गिरावट है। यह RBI के हालिया 6.6% के ग्रोथ के उस अनुमान से भी कम है, जो खुद ही पहले के 7.2% अनुमान से कम है। कुछ ही हफ़्तों में, भारतीय अर्थव्यवस्था निचले स्तर पर आ गई है - अत्यंत महत्वपूर्ण महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर उस तरह से नहीं बढ़ रहा है जिस तरह से बढ़ना चाहिए। सरकार अब भारत के ग्रोथ में गिरावट की वास्तविकता और इसके विभिन्न पहलुओं से इंकार नहीं कर सकती है:

1. सामूहिक खपत में स्थिरता: पिछले दस वर्षों में, भारत की उपभोग कहानी रिवर्स स्विंग में चली गई है और भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए सबसे बड़ी समस्या बनकर उभरी है। इस वर्ष की दूसरी तिमाही के आंकड़ों में, निजी अंतिम उपभोग व्यय (PFCE) ग्रोथ पिछली तिमाही के 7.4% से घटकर 6% रह गया। कारों की बिक्री चार साल के निचले स्तर पर आ गई है। भारतीय उद्योग जगत के कई उपड ने खुद ही 'सिकुड़ते' मध्यम वर्ग को लेकर चिंता जताई है। स्थिर खपत न केवल GDP ग्रोथ रेट को सीधे तौर पर प्रभावित कर रही है, बल्कि इस वजह से ही प्राइवेट सेक्टर निवेश करने की इच्छा नहीं दिखा रहा है।

2. सुस्त निजी निवेश: सकल स्थिर पूंजी निर्माण (पब्लिक और प्राइवेट) में ग्रोथ के लिए सरकार का अनुमान है कि इस वर्ष यह धीमा होकर 6.4% हो जाएगा, जो पिछले वर्ष 9% था। यह आंकड़ा भी भारत में निवेश करने के लिए प्राइवेट सेक्टर की अनिच्छा की वास्तविकता को दिखाता है। जैसा कि सरकार के अपने आर्थिक सर्वेक्षण (2024) ने स्वीकार किया, मशीनरी और उपकरण और बौद्धिक संपदा उत्पादों में प्राइवेट सेक्टर का GFCF (सकल निश्चित पूंजी निर्माण) वित्त वर्ष 2023 तक चार वर्षों में संचयी रूप से केवल 35% बढ़ा है... यह अच्छा मिश्रण नहीं है।" वित्त वर्ष 2023 और वित्त वर्ष 24 के बीच प्राइवेट सेक्टर द्वारा नए प्रोजेक्ट की घोषणाओं में 21% की गिरावट के साथ यह और भी बदतर हो गया है। नई उत्पादक क्षमता में निवेश करने में प्राइवेट सेक्टर की अनिच्छा का मतलब है कि हमारे मीडियम टर्म का ग्रोथ प्रभावित होता रहेगा।

साई कराटे एकेडमी के खिलाड़ियों ने 14 पदकों पर जमाया कब्जा

रिपोर्ट :- रजत शर्मा

गुड़गांव। उत्तरप्रदेश के मेरठ स्थित राधा गोविंद पब्लिक स्कूल में आयोजित 2 दिवसीय जेकेएस साउथ एशिया कराटे चैंपियनशिप में गुरुग्राम की साई कराटे एकेडमी के खिलाड़ियों ने जबरदस्त प्रदर्शन करते हुए 6 स्वर्ण, 3 रजत व 5 कांस्य पदकों पर कब्जा जमाया है। एकेडमी के संचालक सुनील सैनी, कोच लकीमणि व विक्रम तिहाल का कहना है कि प्रतियोगिता में पंजाब, उत्तर प्रदेश, कर्नाटक, चेन्नई, तमिलनाडु, असम, गुवाहाटी, दिल्ली, गुजरात, कश्मीर, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश,

बेंगलुरु, हरियाणा सहित 22 प्रदेशों के करीब 560 खिलाड़ियों ने भाग लिया। 12 खिलाड़ी गुरुग्राम से भी इस प्रतियोगिता में पहुंचे। गुरुग्राम के खिलाड़ियों ने अपने- अपने आयु वर्ग में बेहतरीन प्रदर्शन किया। जिनमें अर्णीत कश्यप व मायरा रावत ने स्वर्ण व कांस्य, तारुश कटारिया ने रजत, रुद्र ध्रुवन ने स्वर्ण, काव्यांजलि साहू और उज्ज्वल कटारिया ने स्वर्ण, दीक्षा मक्कर ने कांस्य, हितेश गौतम और अनय्य पंचावतकर ने रजत, सायांश भारद्वाज और श्रेयांश शाश्वत ने कांस्य, कुमार करण खुल्लर ने स्वर्ण पदक जीता। उनका कहना है कि कुछ खिलाड़ियों का अंतर्राष्ट्रीय स्तर की कराटे प्रतियोगिताओं के लिए चयन किया गया है। खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन कर उन्हें आगामी प्रतियोगिताओं में बेहतरीन प्रदर्शन के लिए आशीर्वाद दिया।

होगी हर जरुरत पूरी... दिल्ली में कांग्रेस है जरूरी

दिल्ली। की दो करोड़ जनता अब बदलाव चाहती है और वो उसके लिए अपनी पुरानी साथी - कांग्रेस पार्टी की तरफ देख रही है।

हमने दो महत्वपूर्ण घोषणाएं की हैं

» प्यारी दीदी योजना

महिलाओं को हर महीने 2,500 की सम्मान राशि।

» जीवन रक्षा योजना

दिल्ली के प्रत्येक नागरिक को 25 लाख का मुफ़्त स्वास्थ्य सुरक्षा बीमा।

दिल्ली प्रदेश, भारत का प्रतीक है। यहाँ की खुशहाली देश की समृद्धि है। जन-कल्याण, सामाजिक न्याय और दिल्ली के आर्थिक एवं आधारभूत विकास को लौटाने के लिए कांग्रेस ही एकमात्र विकल्प है। इसलिए, केवल कांग्रेस को वोट दें।

गढ़ टोल प्रबंधन ने किया वाहनों पर रिफ्लेक्टर लगाकर जागरुक

गढ़मुक्तेश्वर » हाईवे पर अल्लाबक्शपुर गांव में स्थित टोल प्रबंधन द्वारा मंगलवार को वाहनों पर रिफ्लेक्टर लगाकर जागरुक किया। लोगों को जागरुक करके कोहरे के दौरान हो रहे हादसों पर लगाम लगाई जा सकेगी।टोल प्रबंधक टोल के प्रबंधक नंद किशोर महाजन ने बताया कि टोल प्लाजा पर लोगों को जागरुक करते हुए वाहनों पर रिफ्लेक्टर लगाने का अभियान चलाया गया। उन्होंने बताया कि बड़ी संख्या में वाहनों पर रिफ्लेक्टर नहीं लगे हुए है। इससे हादसे का खतरा बना रहता है। वाहनों पर रिफ्लेक्टर लगाकर लोगों को जागरुक किया गया। सीजेएम दिनेश कुमार ने बताया कि जागरुकता से कोहरे में रिफ्लेक्टर न लगे होने से हो रहे हादसों पर अंकुश लगाया जा सकता है। क्रय केंद्रों से गन्ना लेकर आने वाले ओवरलोड वाहनों में तो रिफ्लेक्टर दिखाई तक नहीं देते है। ऐसे में कई बार लोगों को दुर्घटनाओं का शिकार तक होना पड़ जाता है। लोगों को दुर्घटनाओं से बचाने के लिए प्रशासन को अधिक से अधिक वाहनों पर रिफ्लेक्टर लगाने के लिए ठोस कदम उठाने चाहिए। इसके लिए टोल टैक्स जैसे स्थानों का चयन करना चाहिए।

भारतीय किसान यूनियन (टिकैत) ने कलेक्ट्रेट का घेराव कर दिया ज्ञापन

गढ़मुक्तेश्वर » भारतीय किसान यूनियन (टिकैत) ने कलेक्ट्रेट का घेराव किया इस दौरान अध्यक्षता धर्मवीर त्यागी और संचालन जिला प्रवक्ता कुंवर खुशनूद ने किया और किसानों की समस्याओं से एडीएम संदीप कुमार को अवगत कराकर ज्ञापन दिया।

जिला अध्यक्ष दिनेश खेड़ा ने जानकारी देते हुए बताया है कि एडीएम को दिए गए ज्ञापन के माध्यम से एमएसपी गारंटी कानून बनाए जाने की मांग व किसानों की आर्थिक स्थिति देखते हुए सरकार को अवगत कराते हुए गन्ना मूल्य बढ़ाया जाए और आवारा पशुओं से किसानों की फसल लगातार बर्बाद होने के साथ साथ सड़क दुर्घटनाओं से भी किसान की जान का नुकसान हो रहा है जिसके मद्देनज़र आवारा पशुओं की धरपकड़ जल्द से जल्द कराई जाए और वही बिजली विभाग द्वारा उपभोक्ताओं को बिल प्रत्येक महीने न मिलने के कारण बिल अधिक होता है जिस कारण ब्याज भरने को मजबूर होना पड़ रहा है इस लिए प्रत्येक महीने विधुत उपभोक्ताओं को मिलना चाहिए ताकि किसान व मजदूर समय से ही बिजली बिल जमा कर पाए वही विधुत विभाग की टीम द्वारा बकायेदारी को लेकर कनेक्शन काटने में पक्षपात न किया जाए और किसान की खतौनियों में त्रुटि लगातार चल रही है जो ठीक होना अति आवश्यक है समेत समस्याएं ज्ञापन में सम्मलित की गई है।

इस दौरान महिला विंग जिला अध्यक्ष नीलम त्यागी, रोशनी सैफी, महिला जिला उपाध्यक्ष कल्पना सिंह, शोभा सिंह, सरिता सिंह, मुस्कान, युवा जिला अध्यक्ष ज्ञानेश्वर त्यागी, युवा जिला महा सचिव कुलदीप राठी, मेरठ मंडल संगठन मंत्री महिपाल सिंग उर्फ गुजराल, जिला महासचिव कैप्टन राजेश चौधरी, बहादुरगढ़ ग्राम अध्यक्ष फरमान कुरैशी, शब्बू चौधरी, मुनव्वर अली, ओमवीर सिंह, रविंदर सिंह, सुंदर गुर्जर, मण्डल उपाध्यक्ष धनवीर शास्त्री, पुष्पेंद्र, अरविंद, अखिल कुमार, नवीन त्यागी, आज़ाद तोमर समेत मौजूद रहे।

पालिका की बोर्ड बैठक संपन्न, कुछ सभासदों द्वारा प्रायोजित तरीके से किया हंगामा

हाथरस। नगर पालिका बोर्ड की बैठक आज पालिका के सभागार में आयोजित की गई और पालिका बोर्ड बैठक में कुछ सभासदों द्वारा प्रायोजित तरीके हंगामा किया। चंद सभासदों द्वारा पालिकाध्यक्ष की छवि धूमिल करने के उद्देश्य से क्षेत्र में विकास के कार्य न होने और जनसमस्याओं पर ध्यान न देने का आरोप लगाया। इस दौरान सभासदों में आपस में भी कहासुनी हुई, नगर पालिका बोर्ड की बैठक में कुछ प्रस्ताव पास किये गये। बोर्ड की बैठक पालिका सभागार में पालिकाध्यक्ष श्वेता चौधरी की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में कुछ सभासदों द्वारा प्रस्ताव पर आपत्ति जताते हुए हंगामा किया गया। सभासदों का यह भी कहना था कि, नगर पालिका के कुछ अधिकारी उनका फोन तक नहीं उठाते।बैठक के दौरान सभासदों में आपस में तीखी नोक-झोंक हो गई। पालिका बोर्ड बैठक में नगर पालिका सीमांतर्गत गेट एंट्री, यूटिलिटी, यूनिपोल, एलईडी और विज्ञापन प्रदर्शित करने हेतु ठेके की स्वीकृति, शहर में 75 स्थानों पर अलाव जलवाने हेतु लकड़ी की आपूर्ति, संविदा सफाई कर्मचारियों की

बोर्ड की बैठक को सम्बोधित करती हुई पालिकाध्यक्ष श्वेता चौधरी

गर्म वर्दी, नगर पालिका के 35 वार्डो में जीआईएस सर्वे कराने, कावड़ यात्रा के दौरान टेंट आदि की व्यवस्था कराने, मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के दौरान टेंट व्यवस्था आदि पर होने वाले व्यय की आपूर्ति, बंदरों को पकड़ने हेतु वित्तीय स्वीकृति, कंबल वितरण, विभिन्न स्थानों पर सड़क और पुलिया निर्माण तथा 4 मिनी टिपरों पर आठ सफाई मजदूरों को आउटसोर्सिंग पर रखे जाने जैसे प्रस्तावों पारित किये गये।बैठक उपरांत पालिकाध्यक्ष श्वेता चौधरी ने बताया कि विरोधियो के बहकावे में आकर विकास कार्यो के मुद्दों पर भी हंगामा करना कुछ सभासदो की आदत सी पड़ गई है ,मैंने जनता से जो वादा किया है उसे हर हाल में पूरा करूँगी।

बैठक में नगर पालिका के अधिशासी अधिकारी रोहित सिंह के अलावा सभासदों में सुनील पंडित, मनीष अग्रवाल, नवीन सबलोक, दिनेश ठाकुर, रामजीलाल वर्मा, शाहरुख, अतुल चौधरी, अशोक गोला, सुंदरम शर्मा ,श्रीमती बीना जैन, श्रीमती रचना गोयल, धर्मेंद्र पिप्पल, शाहरुख, सूरज माहौर, हिमांशु कौशिक आदि सभासद मौजूद थे। पालिका बोर्ड बैठक का संचालन विजय स्वर्णकार द्वारा किया गया।

आपको कितने बंगले चाहिए?

शीश महल विवाद के बीच वीरेंद्र सचदेवा का आतिशी से सवाल

दिल्ली। विधानसभा चुनावों के लिए प्रचार जोरों पर चल रहा है। राष्ट्रीय राजधानी में मुख्यमंत्री का निवास, जिसे भाजपा 'शीश महल' बता रही है, बड़ा मामला बन गया है। आम आदमी पार्टी पर इसको लेकर भाजपा और कांग्रेस दोनों निशाना साध रहे हैं। दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने एबी 17 मथुरा रोड का दौरा किया, यह आवास दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी को आवंटित किया गया है, क्योंकि उन्होंने आरोप लगाया था कि केंद्र ने 6 फ्लैगस्टाफ रोड पर सीएम आवास के लिए उनका आवंटन रद्द कर दिया है। वीरेंद्र सचदेवा ने आतिशी के आरोपों को खारिज करते हुए पूछा कि उन्होंने 6 फ्लैगस्टाफ रोड पर कब्जा क्यों नहीं किया। उन पर और हमला करते हुए, दिल्ली भाजपा प्रमुख ने कहा कि उस आवास में प्रवेश करने का मतलब आतिशी को 'शीश महल' की चल रही जांच में सहयोग करना होगा। उन्होंने कहा कि आतिशी को आवंटित इस आवास से शीला दीक्षित ने 15 साल तक सरकार चलाई, तो आतिशी को 'शीश महल' क्यों चाहिए, और जब यह आवंटित किया जा रहा था, तो उन्होंने 3 महीने पहले से कार्यभार क्यों नहीं संभाला? भाजपा नेता ने

कहा कि ऐसा इसलिए क्योंकि इसकी जांच हो रही थी और सीएम को सहयोग करना होगा, जो आतिशी नहीं चाहती थीं और अब जब आचार संहिता लग गई है तो इसकी मांग की जा रही है। एबी 17 मथुरा रोड आधिकारिक तौर पर उन्हें आवंटित किया गया है और वह कालकाजी में रहती हैं। तो आप कितने आवास चाहते हैं? उन्होंने कहा कि जब संजय सिंह, सत्येन्द्र जैन और मनीष सिसोदिया जमानत मिलने के बाद वहां गए थे या जब स्वाति मालीवाल के साथ मारपीट हुई थी तब 'शीश महल' मीडिया को क्यों नहीं दिखाया गया? आतिशी को यह आवास (एबी-17, मथुरा रोड) कालकाजी वाले आवास के साथ ही आवंटित किया गया है। उन्हें कितने बंगले चाहिए?

केजरीवाल का दावा, भाजपा के पंडित प्रकोष्ठ के कुछ सदस्य आप की सनातन सेवा समिति में शामिल हुए

दिल्ली। आम आदमी पार्टी (आप) के संयोजक अरविंद केजरीवाल ने सोमवार को दावा किया कि दिल्ली विधानसभा चुनाव से पहले भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के पंडित प्रकोष्ठ के कुछ सदस्य उनकी पार्टी की सनातन सेवा समिति में शामिल हुए हैं। दिल्ली विधानसभा के लिए पांच फरवरी को मतदान होगा और मतगणना आठ फरवरी को होगी। केजरीवाल ने प्रेस वार्ता में कहा कि आप में शामिल होने के लिए भाजपा के पंडित प्रकोष्ठ को छोड़ने वालों में विजय शर्मा, जितेंद्र शर्मा, बृजेश शर्मा, मनीष गुप्ता, दुष्यंत शर्मा और उदयकांत झा शामिल हैं। इस अवसर पर मनीष सिसोदिया, संजय सिंह और सौरभ भारद्वाज सहित पार्टी के कई नेता शामिल थे। सोमवार को आप प्रमुख ने घोषणा की थी कि अगर उनकी पार्टी दिल्ली में एक बार फिर सत्ता में आती है तो वह ह्यपुजारी ग्रंथी सम्मान योजना शुरू करेगी। उन्होंने मंदिरों के पुजारियों और गुरुद्वारा के ग्रंथियों को 18,000

रुपये मासिक भत्ता देने का वादा किया। नए सदस्यों का स्वागत करने के बाद दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा, मुझे खुशी है कि हमने शिक्षा और स्वास्थ्य क्रांति शुरू की और अब हम अपने पुरोहितों के लिए भी यह क्रांति शुरू कर रहे हैं। उन्होंने आगे दावा किया कि आम आदमी पार्टी भाजपा के विपरीत अपने सभी वादे पूरे करती है। उन्होंने कहा, हम इन पुजारियों के मार्गदर्शन में अपने पुजारियों को वादे के अनुसार 18,000 रुपये प्रदान करेंगे। आगामी चुनाव आप के लिए एक महत्वपूर्ण परीक्षा है क्योंकि वह दिल्ली में लगातार तीसरी बार सरकार बनाने का लक्ष्य लेकर चल रही है।

समाचार

भाजपा जिलाध्यक्ष पद हेतु कृष्ण कुमार शर्मा ने कराया नामांकन

लोक तंत्र की शान
प्रवीण अग्रवाल जिला प्रभारी अमरोहा

अमरोहा। बुधवार को पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार कृष्ण कुमार शर्मा साथियों सहित भारतीय जनता पार्टी जिला कार्यालय अमरोहा पर पहुंचे और जिला चुनाव अधिकारी बहोरन लाल मौर्य एवं दर्शना सिंह की मौजूदगी में जिलाध्यक्ष पद हेतु नामांकन पत्र भरकर जमा किया। श्री शर्मा ने बताया कि युवावस्था से ही भारतीय जनता पार्टी की संगठन की जिम्मेदारियों का निर्वहन किया है। ग्राम समिति अध्यक्ष, न्याय पंचायत अध्यक्ष, ब्लाक सदस्यता प्रभारी, ब्लाक अध्यक्ष हसनपुर, जिला कार्यकारिणी सदस्य के साथ विविध संगठनों में भी खंडकार्यवाह आर एस एस, भारतीय किसान संघ में प्रांतीय युवा प्रमुख,जिला मंत्री, दो बार जिलाध्यक्ष के पद पर कार्य किया है। साथ ही क्षेत्र पंचायत सदस्य व वर्तमान में बहुद्देशीय सहकारी समिति भदौरा पर सभापति हैं। उन्होंने अवसर मिलने पर अपने लंबे अनुभवों से पार्टी संगठन का पूरी ईमानदारी से काम करने का संकल्प व्यक्त किया। इस अवसर पर महिपाल सिंह, हेमराज सैनी, जिला सहकारी बैंक डायरेक्टर राहुल राणा, सुशील भगत जी, दशरथ कौशिक, प्रेम शर्मा , अमरपाल सिंह चौहान, सतवीर सिंह आदि मौजूद रहे।

गोल्ड मेडलिस्ट अमित कुमार आनंद बने अमरोहा के नए पुलिस अधीक्षक

लोक तंत्र की शान
प्रवीण अग्रवाल जिला प्रभारी अमरोहा

अमरोहा। उत्तर प्रदेश शासन द्वारा आईपीएस अमित कुमार आनंद को अमरोहा जिले का नया कप्तान बनाया गया है बताते चलें कि अमरोहा के नए कप्तान अमित कुमार आनंद एक तेजतर्रार आईपीएस अधिकारियों में से एक हैं मेरठ, मुरादाबाद में तैनाती के दौरान उन्होंने कई बड़ी घटनाओं का जल्द खुलासा कर अपराधियों को जेल भेजने का काम किया, बताते चलें कि कन्नौज में तैनात रहे 2016 बैच के आईपीएस अमित कुमार आनंद को अमरोहा एसपी की जिम्मेदारी दी गई है एसपी अमित कुमार आनंद बेहतर पुलिसिंग के लिए जाने जाते हैं वह मूल रूप से उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जनपद के बड़ेसर गांव के रहने वाले हैं, अमित कुमार आनंद स्पोर्ट्समैन की पहचान रखते हैं उन्हें शूटिंग के साथ वेट लिफ्टिंग का भी शौक है, पढ़ाई के दौरान उन्होंने जिला और मंडल स्तर पर अलग-अलग प्रतियोगिताओं में 7 गोल्ड मेडल जीते थे,अब देखना यह है कि क्या तेज तरार नए कप्तान अमित कुमार आनंद जिले की पुलिस व्यवस्था को और भी बेहतर बनाने में क्या कदम उठाएंगे।

ग्राम प्रधान, हल्का लेखपाल, सिपाही पर जबरिया जेसीबी लगवाकर चकरोड निर्माण कराने का आरोप

तौफीक खान संवाददाता बस्ती

बस्ती। पुरानी बस्ती थाना क्षेत्र के रानीपुर निवासी धर्मेन्द्र पुत्र गंगाराम ने जिलाधिकारी को सम्बोधित पत्र उनके प्रशासनिक अधिकारी को सौंपा। मांग किया कि रानीपुर के ग्राम प्रधान द्वारा उनकी जमीन में जबरन चकरोड निकलवाने और हरे वृक्ष को काटकर बेच लिये जाने के प्रकरण में जांच कराकर दोषियों के विरूद्ध कारवाई कराया जाय। इसके साथ ही उनकी जमीन से जे.सी.बी. द्वारा निकाली गई मिट्टी पाटकर चकरोड बनाने वृक्ष काटकर बेंच लिये जाने के मामले में उन्हें समुचित क्षतिपूर्ति दिलाया जाय। आरोप है डीएम को सम्बोधित पत्र में कहा गया है कि हल्का लेखपाल अनन्त कुमार, पुरानी बस्ती थाने में तैनात हल्का सिपाही अभिषेक शर्मा ने रानीपुर के ग्राम प्रधान के दबाव प्रभाव में आकर स्थगन आदेश के बावजूद अवैध ढंग से उनकी जमीन पर जे.सी.बी. लगवाकर चकरोड पटवा दिया गया और हरे पेड़ों को कटवाकर लगभग 30 हजार रुपए में बेचकर बन्दरबांट कर लिया गया। मांग किया कि मामले की निष्पक्ष जांच कराकर हल्का लेखपाल, सिपाही और ग्राम प्रधान के विरूद्ध कार्रवाई कर जबरिया बनवाये गये चकरोड को गिरवाकर उन्हें क्षतिपूर्ति दिलाया जाय।

पीलीभीत टाइगर रिजर्व के बाहर आया गुलदार, वीडियो वायरल

लोकतंत्र की शान
संवाददाता मंजीत शर्मा

पीलीभीत। पीलीभीत टाइगर रिजर्व के बाहर आया गुलदार वीडियो वायरल खेतों में चहल कदमी करता दिखा गुलदार, जंगल के बाहर निकाला गुलदार चहलकदमी करते दिखा गुलदार वीडियो वायरल, गुलदार होने की सूचना के बाद ग्रामीणों में दहशत का माहौल, रहागीरों ने वीडियो बनाकर किया सोशल मीडिया पर वायरल, पीलीभीत के हजारा थाना क्षेत्र के नहरोसा का मामला।

इलावांस देवल तालाब में मगरमच्छ देखे जाने पर मचा हड़कंप। वन विभाग की टीम ने किया रेस्क्यू।

लोकतंत्र की शान
संवाददाता मंजीत शर्मा
पीलीभीत बीसलपुर।

इलावांस देवल के तालाब में ग्रामीणों द्वारा मगरमच्छ देखे जाने पर गांव में हड़कंप मच गया। ग्रामीणों की सूचना मिलते ही पहुंची वन विभाग की टीम ने ग्रामीणों की मदद से मगरमच्छ को रेस्क्यू कर खन्नौत नदी में छोड़ दिया गया है। गांव इलावांस देवल के किनारे बने तालाब में खेतों पर जा रहे ग्रामीणों को मगरमच्छ दिखाई दिया। मगरमच्छ देखे जाने की सूचना मिलते ही तमाम ग्रामीण मौके पर जमा हो गए। मगरमच्छ देखे जाने की सूचना ग्रामीणों द्वारा वन विभाग को फोन द्वारा दी गई। सूचना मिलते ही पीटीआर दियोरिया रेंज के डिप्टी रेंजर विशाल के नेतृत्व में टीम गांव पहुंची। तब तक सामाजिक वानिकी की टीम भी मौके पर पहुंची और ग्रामीणों की सहायता से मगरमच्छ को रेस्क्यू कर लिया गया। डिप्टी रेंजर विशाल ने बताया कि मगरमच्छ को जंगल में बह रही खन्नौत नदी में छोड़ दिया जाएगा।

भाकियू शंकर ने विभिन्न मांगों को लेकर किया धरना प्रदर्शन, मुख्यमंत्री के नाम सौंपा ज्ञापन

लोक तंत्र की शान
प्रवीण अग्रवाल जिला प्रभारी अमरोहा

अमरोहा। बुधवार को भारतीय किसान यूनियन (शंकर) ने विभिन्न मांगों को लेकर संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष चौधरी दिवाकर सिंह के नेतृत्व में सैकड़ो कार्यकताओं व पदाधिकारियों ने कलेक्ट्रेट परिसर में जोरदार प्रदर्शन किया गया , वहीं विभिन्न मांगों को लेकर जिलाधिकारी के माध्यम से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी को सम्बोधित एक ज्ञापन भी सौंपा गया , राष्ट्रीय अध्यक्ष चौधरी दिवाकर सिंह ने कार्यकताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि सरकार द्वारा जनहित में किये जा रहे कार्यों को कुछ भृष्टाचारी अधिकारियों के द्वारा पलीता लगाया जा रहा है, सरकार अच्छा कार्य कर रही है किंतु कुछ प्रशासनिक अधिकारियों व कर्मचारियों की उदासीनता व लापरवाही के चलते जनता को सरकारी योजनाओं का सही तरीके से लाभ नहीं मिल पा रहा है। उन्होंने कहा कि घरेलू मीटरों के मीटर जम्पिंग कर रहे है जिस कारण उपभोक्ताओं के बिल 4 से 24 हजार तक आ रहे हैं, इसे तत्काल सही कराया जाए हसनपुर के नवनिर्मित तहसील भवन का तत्काल संचालन कराया जाए, इसके साथ ही रजिस्ट्री कार्यालय भी तहसील परिसर में संचालित कराया जाए। तिगरी गंगा धाम से लेकर ब्रजघाट तक गंगा रिवर फ्रंट बनाकर इसे पर्यटक स्थल घोषित किया जाए, साथ ही गंगाजल की स्वच्छता को ध्यान में रखते हुए विधुत शवदाहगृह का निर्माण कराया जाए। हसनपुर चीनी मिल का विस्तारीकरण घोषणा को 5 वर्ष बीत चुके हैं लेकिन अभी तक ये कार्य नहीं हुआ है, अतः इसका विस्तारीकरण किया जाना चाहिए। इस दौरान चौधरी सत्यवीर सिंह,चौधरी धर्मवीर सिंह, सत्यपाल सिंह, प्रधान वीरेंद्र सिंह,राकेश रतनपुर, डॉ भाग सिंह, मुकेश गर्ग, नेमपाल सिंह, सोनू नागर, विक्रम पवार, वीरपाल गुर्जर, चंद्रपाल सैनी, जगत सिंह चौहान, सरदार हैप्पी सिंह, गजराम नेताजी, कल्लू भगत जी ,डॉ हरपाल चौहान, नरपत सिंह मुखिया, रवि चौधरी, पप्पू पाल,चंद्रपाल सिंह, अमीपाल सिंह, निजाम प्रधान, अनिल भटनागर, अरुण सिंह,जौनी, पुष्पा गुप्ता,प्रीति चौधरी, मंजीत कौर, शिमला चौहान, संगीता रानी, बबिता रानी, जरीना, राशिदा जहां, शाहजहां, पूनम चौहान, निर्मला व अशोक चौधरी समेत हजारों कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

विद्युत उपभोक्ताओं के लिए देर रात तक कार्य कर रहे है विद्युत विभाग के अधिकारी

लोक तंत्र की शान
प्रवीण अग्रवाल जिला प्रभारी अमरोहा

हसनपुर। नगर में विद्युत उपभोक्ताओं को सरकारी छूट का पूरा फायदा दिलाने के लिए विद्युत उपखंड कार्यालय हसनपुर में तैनात वरिष्ठ लिपिक सरकार की महत्वाकांक्षी योजना एक मुस्त समाधान योजना के तहत आने वाले प्रत्येक आवेदक उपभोक्ता को सरकारी छूट का पूरा लाभ दिलाने के लिए दिन-रात एक किए हुए हैं जिसके चलते देर रात्रि में भी उपभोक्ताओं को लाभ पहुंचाने के लिए कार्यालय में तैनात वरिष्ठ लिपिक शिवम रस्तोगी प्रातः 10 बजे से देर रात्रि तक ऑफिस में आने वाले विद्युत उपभोक्ताओं के बिलों को देखते हैं और उनको सरकारी छूट का लाभ दिलाने के लिए उनके बिलों को तैयार कर-के जमा कराते हैं जहां एक और सरकार को रोजाना लाखों रुपए के बकाया विद्युत बिल की रकम प्राप्त हो रही है तो वही उपभोक्ताओं को भी लाभ मिल रहा है, जब हमारे संवाददाता ने रात्रि के समय में विद्युत उपखंड कार्यालय पर जाकर देखा तो उपभोक्ताओं की समस्याओं का समाधान करते हुए उनके बिलों को छूट आदि का लाभ दिलाते हुए देर रात तक भी वरिष्ठ लिपिक शिवम रस्तोगी अपने कार्य में व्याप्त थे, देर रात तक ऑफिस खोलने का कारण पूछने पर उन्होंने बताया कि सरकार की महत्वाकांक्षी योजना एक मुफ्त समाधान योजना का उपभोक्ताओं को लाभ दिलाने के लिए जब तक उपभोक्ता आते हैं तो रात्रि में भी उनका बिल छूट आदि दिलाकर कैश काउंटर पर जमा भी कराया जाता है, वहीं एस डी ओ मिथिलेश कुमार यादव भी देर रात तक अपने कार्यालय में बैठे हुए नजर आए तथा उनके साथ जे ई विद्युत हसनपुर भी कार्यालय में मौजूद थे, और कैश काउंटर भी खुला हुआ था ' वही इस संबंध में वरिष्ठ लिपिक शिवम रस्तोगी ने बताया कि एक मुस्त समाधान योजना का का यह दूसरा चरण चल रहा है तथा तीसरा चरण 15 जनवरी से 31 जनवरी तक चलेगा तथा उन्होंने उपभोक्ताओं से इस छूट का लाभ लेने का आवाहन किया है।

पीएम मोदी के नेतृत्व में भारत आज अपनी विरासत पर गौरव की अनुभूति कर रहा है- योगी

लखनऊ, 8 जनवरी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि उत्तर प्रदेश के निवासियों का सौभाग्य है कि उन्हें भारत की आध्यात्मिक विरासत को महाकुम्भ के माध्यम से प्रस्तुत करने का अवसर प्राप्त हो रहा है। उन्होंने कहा कि प्रयागराज में 13 जनवरी से 26 फरवरी तक आयोजित होने वाले महाकुम्भ में भारत की प्राचीन सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं को वैश्विक मंच पर एक नई पहचान मिलेगी। मुख्यमंत्री योगी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व की सराहना की और कहा कि उनके मार्गदर्शन में भारत अपनी प्राचीन विरासत पर गर्व कर रहा है। मुख्यमंत्री एक मीडिया समूह द्वारा आयोजित डिवाइन उत्तर प्रदेशः द मस्ट विजिट सेक्रेड जर्नी कॉन्क्लेव को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने कहा कि महाकुम्भ भारत की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक धरोहर का परिचायक है। यह आयोजन देश और दुनिया के लोगों को अपनी प्राचीन परंपराओं पर गर्व करने और अपनी सांस्कृतिक जड़ों को समझने का अवसर प्रदान करता है। उन्होंने कहा कि इस आयोजन का उद्देश्य न केवल धार्मिक आस्था को प्रोत्साहित करना है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा और मार्गदर्शन भी प्रदान करना है। मुख्यमंत्री ने कहा कि केंद्र और राज्य सरकारें संतों के सानिध्य में इस आयोजन को सफल और सुविधाजनक बनाने के लिए निरंतर प्रयास कर रही हैं।

आधुनिकता और आध्यात्मिकता का समागम है महाकुम्भ 2025

मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि इस बार का महाकुम्भ एक भव्य, दिव्य और डिजिटल आयोजन होगा। 10,000 एकड़ क्षेत्रफल में आयोजित यह महाकुम्भ स्वच्छता, सुरक्षा और आधुनिकता का आदर्श प्रस्तुत करेगा। श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए डिजिटल टूरिस्ट मैप, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से जुड़े सुरक्षा तंत्र और स्मार्टफोन के माध्यम से शौचालयों की स्वच्छता का आकलन करने की व्यवस्था की गई है।

एल. एच. चीनी मिल पीलीभीत का निरिक्षण

बरखेड़ा एवं एल. एच. चीनी मिल को जिला अधिकारी ने जारी किया कारण बताओ नोटिस

लोकतंत्र की शान
संवाददाता मंजीत शर्मा
पीलीभीत।

वर्तमान में जिले की सभी चारो चीनी मिलें संचालित हैं, जिस पर अधिकारियों द्वारा लगातार निरीक्षण किया जा रहा है। विगत दिनों जिला गन्ना अधिकारी, पीलीभीत एवं उप गन्ना आयुक्त बरेली द्वारा एल. एच. एवं बरखेड़ा चीनी मिलों का निरीक्षण किया गया था, जिसमें कुछ अनियमितता प्रकाश में आयी थी। निरीक्षण रिपोर्ट नियमानुसार विधिक कार्यवाही हेतु सहायक चीनी आयुक्त, बरेली को प्रेषित की गयी थी। प्रकरण का संज्ञान लेते हुये जिला अधिकारी पीलीभीत द्वारा दोनों चीनी मिलों को नोटिस जारी करते हुये जवाब दाखिल करने हेतु सात दिन समय दिया गया है। यदि समय से जवाब नहीं दिया जाता है अथवा जवाब संतोषजनक नहीं पाया जाता है तो चीनी मिल अध्यासी एवं सम्बंधित तौल लिपिक के विरुद्ध अर्थ-दंड की कार्यवाही की जायेगी। जनपद में 188 क्रय केंद्र संचालित हैं, जिसमें विभिन्न अधिकारियों द्वारा 232 निरीक्षण किये जा चुके हैं। इसी क्रम में आज खुशी राम भार्गव जिला गन्ना अधिकारी, पीलीभीत , राम भद्र द्विवेदी ज्येष्ठ गन्ना विकास निरीक्षक,एवं प्रदीप अग्निहोत्री,सचिव, सहकारी गन्ना विकास समिति, पीलीभीत द्वारा एल. एच. चीनी मिल के किसान विश्रामालय एवं मिल यार्ड का औचक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान पाया गया कि किसान विश्रामालय में किसानो को सर्दी से बचाव हेतु गद्दे एवं कंबल की समुचित व्यवस्था नहीं है। इसके साथ ही यार्ड में भी पर्याप्त अलाव की व्यवस्था मिल प्रबंधन द्वारा नहीं की गयी है। इसके पश्चात चीनी मिल बरखेड़ा एवं सहकारी चीनी मिल बीसलपुर मिल गेट का निरीक्षण किया गया। बरखेड़ा चीनी मिल में किसानों के लिये सर्दी से बचाव हेतु किसान विश्रामालय में बैठने की कोई व्यवस्था नहीं पायी गयी। इसके साथ ही शौचालय में साफ सफाई भी नहीं थी। तौल कार्य हेतु उपथित किसानों से वार्ता करने पर उनके द्वारा बताया गया कि तौल कार्य मे अधिक समय नहीं लग रहा है तथा उनके गन्ने की तौल समय पर हो जा रही है। इस सम्बन्ध में निरिक्षण रिपोर्ट तैयार कर विधिक कार्यवाही हेतु सहायक चीनी आयुक्त बरेली को प्रेषित कर दी गई है।

स्वस्थ महाकुम्भ अभियान के तहत प्रयागराज रेल मण्डल के स्टेशनों पर फर्स्ट एड बूथ तैयार

08 जनवरी - महाकुम्भ नगर। प्रयागराज में महाकुम्भ के दिव्य भव्य आयोजन को लेकर तैयारियां अंतिम चरण में हैं। इस दौरान महाकुम्भ में आने वाले श्रद्धालुओं और यात्रियों की सुरक्षा एवं स्वास्थ्य को प्राथमिकता देते हुए डबल इंजन की सरकार ने महाकुम्भ 2025 को स्वस्थ और सुरक्षित महाकुम्भ भी घोषित किया है। इसी दिशा क्रम में भारतीय रेलवे ने प्रयागराज रेल मण्डल के स्टेशनों पर 30 से अधिक फर्स्ट एड बूथ स्थापित किए हैं। रेलवे की यह पहल श्रद्धालुओं की सुविधा और आपात स्थिति में त्वरित चिकित्सा सेवा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से की गई है।

प्रयागराज रेल मण्डल के स्टेशनों पर तैयार हैं फर्स्ट एड बूथ

महाकुम्भ 2025 को ध्यान में रखते हुए प्रयागराज रेल मण्डल के लगभग सभी स्टेशनों पर फर्स्ट एड बूथ स्थापित किए गए हैं। महाकुम्भ में आने वाले श्रद्धालुओं के स्वास्थ्य और किसी भी तरह की आपात स्थिति में त्वरित स्वास्थ्य सुविधा प्रदान की जा सके। इस दिशा क्रम में प्रयागराज जंक्शन, नैनी जंक्शन, फाफामऊ, प्रयाग जंक्शन, झूंसी, रामबाग, छिवकी, प्रयागराज संगम और सूबेदारगंज रेलवे स्टेशन आदि पर फर्स्ट ऐड बूथ स्थापित किए गए हैं । जरूरत के मुताबिक प्रयागराज जंक्शन पर 14 बूथ, नैनी स्टेशन पर 03 ,छिवकी पर 03 और सूबेदारगंज स्टेशन पर 02 बूथ बनाए गए हैं। इसके अतिरिक्त प्रयागराज रेल मण्डल के विंध्याचल, मंकीपुल, संगम कैम्प क्षेत्र में एक-एक,प्रयाग स्टेशन पर 03 बूथ, फाफामऊ स्टेशन भी 01 फर्स्ट एड बूथ बनाया गया है। इसके साथ ही अयोध्या धाम, योध्या केंट और काशी स्टेशन पर भी एक -एक बूथ बनाए गए हैं।

अपने कार्यों से ऐसा उदाहरण प्रस्तुत करें, जो औरों के लिए प्रेरणादायी बनेः सीएम योगी

कानपुर, 8 जनवरीः मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि कार्य ही विधायिका में आपकी यात्रा को शानदार व स्मरणीय बनाएगा। कार्यकाल इस मायने में महत्व नहीं रखता कि कितना लंबा कार्य कर रहे हैं, बल्कि महत्वपूर्ण यह है कि कितने प्रभावी तरीके से आपने छाप छोड़ी है। यूपी की दृष्टि से आप छह से सात लाख और उत्तराखंड में साढ़े तीन से चार लाख लोगों की आबादी का नेतृत्व कर रही हैं। यह सौभाग्य लाखों में किसी एक को प्राप्त हो रहा है, इसलिए विधायिका के मंच से हमें भी अपने कार्यों से ऐसा उदाहरण प्रस्तुत करना है, जो औरों के लिए प्रेरणादायी बन सके। विधायिका में आपकी उपस्थिति तभी प्रभावी हो पाएगी, जब आप आमजन व धरातल से जुड़े मुद्दों को रख पाएंगे। विधायिका के मंच पर कही गई आपकी बात आने वाले समय के लिए धरोहर बनती है। मुख्यमंत्री ने बुधवार को उत्तर प्रदेश व उत्तराखंड विधान मंडल की महिला सदस्यों के सम्मेलन में शिरकत की। उन्होंने दोनों अध्यक्षों के प्रति आभार जताते हुए कहा कि यह पल मेरे लिए आह्लादित करने वाला है। मेरा दोनों प्रदेशों से जुड़ाव है, क्योंकि उत्तर प्रदेश मेरी कर्मभूमि और उत्तराखंड जन्मभूमि है। उन्होंने कहा कि ऋतु खंडूरी की पारिवारिक पृष्ठभूमि भी राष्ट्र के लिए समर्पण की है। उनके परिवार से अनुभव व विरासत की अद्भुत परंपराएं जुड़ी हैं।

इनोवेशन व नए प्रयोगों के लिए जानी जा रही उत्तर प्रदेश विधानसभा

मुख्यमंत्री ने कहा कि उत्तर प्रदेश देश की सबसे बड़ी विधानसभा है। यह पिछले ढाई-तीन वर्ष के अंदर इनोवेशन और नए-नए प्रयोगों के लिए जानी जा रही है। उप्र विधानसभा ने ई-विधान को सफलतापूर्वक लागू कर इसे पेपरलेस किया है। पॉर्लियामेंट्री डेमोक्रेसी में इन बातों को हम केवल बोल ही नहीं सकते, बल्कि उसका अनुभव भी कर सकते हैं। उप्र विधानसभा ने अनेक फील्ड से जुड़े विशेषज्ञों को मंच दिया। सामान्यतः विधानसभा में लोग दलीय प्रतिबद्धता से जुड़े होते हैं, इसलिए कॉमन सहमति नहीं बन पाती है, लेकिन अधिवक्ताओं, अभियांत्रिकी, चिकित्सकों, विज्ञान बैकग्राउंड या अलग-अलग पक्षों के प्रतिनिधि के साथ ग्रुप में बैठते हैं तो दलीय प्रतिबद्धता से ऊपर उठकर समाज व देश के बारे में सोचते हैं।

महाकुम्भ में श्रद्धालुओं के लिए 12 प्रकार के स्पेशल सुरक्षा ऑपरेशन

महाकुम्भनगर, 08 जनवरी : महाकुम्भ में श्रद्धालुओं की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए महाकुम्भनगर पुलिस प्रशासन ने 12 प्रकार के स्पेशल सुरक्षा ऑपरेशन शुरू किए हैं। इन ऑपरेशन का उद्देश्य मेला क्षेत्र में आने वाले श्रद्धालुओं की सुरक्षा सुनिश्चित करना और किसी भी प्रकार की संदिग्ध गतिविधियों पर नजर रखना है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर महाकुम्भनगर में आने वाले एक एक श्रद्धालु की सुरक्षा पर ध्यान दिया जा रहा है, ताकि उन्हें किसी तरह की असुविधा न हो।

श्रद्धालुओं की यात्रा सुरक्षित और सुगम बनाने की पूरी तैयारी

ऑपरेशन स्वीप के तहत संदिग्ध व्यक्तियों और वस्तुओं को ट्रैक करने के लिए लगातार जांच की जा रही है। जबकि ऑपरेशन पहचान के माध्यम से मेला क्षेत्र में रह रहे लोगों का सत्यापन किया जा रहा है। इन सभी सुरक्षा उपायों का उद्देश्य श्रद्धालुओं को बेहतर सुरक्षा प्रदान करना और मेला क्षेत्र को किसी भी प्रकार की अनहोनी से बचाना है। प्रशासन ने इस पूरे अभियान को अनवरत चलाने का निर्णय लिया है, ताकि श्रद्धालुओं की यात्रा सुरक्षित और सुगम हो सके।

इस तरह चलाए जा रहे ऑपरेशन

1. ऑपरेशन स्वीप- संदिग्ध व्यक्ति और वस्तुओं की चेकिंग।
2. ऑपरेशन पहचान- मेला क्षेत्र में रहने वाले व्यक्तियों का सत्यापन।
3. ऑपरेशन इंटरसेप्ट- रेण्डम व सरप्राइज चेकिंग।
4. ऑपरेशन सील- जिले की सीमा को सील किया जाना
5. ऑपरेशन एमवी- प्रमुख चौराहों पर यातायात नियमों की चेकिंग।
6. ऑपरेशन चक्रव्यूह- प्रवेश निकास के समस्त मार्गों पर चेकिंग
7. ऑपरेशन कवच- मुख चौराहों पर संदिग्ध व्यक्तियों की चेकिंग
8. ऑपरेशन बॉक्स- पार्किंग स्थलों पर चेकिंग।
9. ऑपरेशन महावीरजी- प्रमुख स्थलों व पाण्टून पुल के दोनों सिरों पर जांच।
10. ऑपरेशन विराट- प्रमुख पण्डालों और शिविर की चेकिंग।
11. ऑपरेशन संगम- स्नान घाटों एवं सकुर्लेटिंग एरिया में चेकिंग।
12. ऑपरेशन बाजार- बाजारों और प्रदर्शनी के साथ दुकानों की चेकिंग।

एक एक श्रद्धालु की सुरक्षा का पुख्ता इंतजाम : एसएसपी

महाकुम्भनगर के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक राजेश द्विवेदी के अनुसार यहां महाकुम्भनगर में देश विदेश से आने वाले लोगों की सुरक्षा हमारी प्राथमिकता है। यहां एक एक श्रद्धालु की सुरक्षा का पुख्ता इंतजाम किया जा रहा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर यहां महाकुम्भनगर में 12 प्रकार के सुरक्षा ऑपरेशन अनवरत चलाए जा रहे हैं। संदिग्ध गतिविधियों पर विशेष नजर रखी जा रही है। ऐसे लोगों के पकड़े जाने पर सख्त कार्यवाही अमल में लाई जाएगी।

आपातकालीन स्थिति से निपटने के लिए अखाड़ा क्षेत्र में मॉक ड्रिल

महाकुम्भ नगर, 8 जनवरी। महाकुम्भ-2025 के भव्य-सुरक्षित और सफल आयोजन को सुनिश्चित करने के लिए तथा किसी भी आपातकालीन स्थिति से निपटने के लिए महाकुम्भ पुलिस लगातार प्रयास कर रही है। थाना अखाड़ा महाकुम्भ मेला क्षेत्र में पुलिस उप महानिरीक्षक वैभव कृष्ण आईपीएस के दिशा-निदेर्शों पर आपातकालीन तैयारी की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए रात्रि 02 बजे अखाड़ा क्षेत्र में मॉक ड्रिल का आयोजन किया गया। मॉक ड्रिल में विभिन्न आपातकालीन स्थिति से निपटने के लिए अलार्म को सक्रिय करना, निकासी प्रक्रियाओं का अभ्यास करना, अग्नि सुरक्षा उपकरणों की कार्य क्षमता का प्रशिक्षण शामिल था।

आपात स्थितियों के लिए किया गया तैयार

मॉक ड्रिल का प्रथम उद्देश्य श्रद्धालुओं को आपात स्थिति के दौरान तुरंत और सही तरीके से प्रक्रिया करने के लिए तैयार करना व व्यक्तियों को अग्नि सुरक्षा उपकरणों के उपयोग और फायर कर्मियों के बीच समन्वय स्थापित करते हुए सुरक्षा/बचाव कैसे सुनिश्चित करना है, का अभ्यास करना था। इस दौरान मॉक ड्रिल में पुलिस उप महानिरीक्षक/वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक एवं अन्य राजपत्रित अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित रहे।

राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान में हरियाणा राज्य नारकोटिक्स कण्ट्रोल ब्यूरो द्वारा जागरूकता कार्यक्रम

प्रतिबंधित नशे मनुष्य के जीवन के लिए अभिशाप से कम नहीं- डॉ अशोक कुमार वर्मा

करनाल सुखविंदर सोही

फरीदाबाद। नशे की लत मौत का खत। नशा एक बुराई है जीवन की सच्चाई है। नशे को छोडो जीवन से नाता जोड़ो। नशा मुक्त हरियाणा जहां दूध दही का खाना। जैसे असंख्य नारों के साथ हरियाणा के युवाओं को नशे से दूर रहने के लिए जागरूक किया जा रहा है। हरियाणा राज्य नारकोटिक्स कण्ट्रोल ब्यूरो प्रतिदिन एक संकल्प के साथ नशा मुक्त हरियाणा अभियान के द्वारा लोगों को जागरूक करने में जुटी हुई है। हरियाणा राज्य स्वापक नियंत्रण ब्यूरो प्रमुख/ पुलिस महानिदेशक श्री ओपी सिंह, भापुसे साहब के दिशानिदेर्शों एवं मार्गदर्शन में पुलिस अधीक्षक श्री मोहित हांडा, भापुसे और श्रीमती पंखुडी कुमार जी के आदेशानुसार हरियाणा भर में नशे के विरुद्ध जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित किए जा रहे हैं। ब्यूरो के जागरूकता कार्यक्रम एवं पुनर्वास प्रभारी/ उप निरीक्षक डॉ. अशोक कुमार वर्मा साइकिल के साधन का प्रयोग करते हुए इस अभियान को आगे बढ़ा रहे हैं। वे एक गाँव से दूसरे गाँव, एक शहर से दूसरे शहर और एक विद्यालय से दूसरे विद्यालय तक यह अभियान लेकर पहुँच रहे हैं। आज वे राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान तिगांव में पहुंचे हुए थे। संस्थान के प्राचार्य प्रेम दीक्षित की अध्यक्षता में 175 प्रशिक्षणार्थियों 5 प्रशिक्षकों और 2 अन्य कर्मचारियों ने भाग लिया। ब्यूरो के जागरूकता कार्यक्रम एवं पुनर्वास प्रभारी/ उप निरीक्षक डॉ. अशोक कुमार वर्मा ने प्रशिक्षणार्थियों को सम्बोधित करते हुए बताया कि नशे को प्रतिबंधित और चेतावनी युक्त नशों में विभाजित किया जा सकता है। दोनों प्रकार के नशे मनुष्य के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल।

हरियाणा राज्य नारकोटिक्स कण्ट्रोल ब्यूरो द्वारा नशे के विरुद्ध अभियान के अंतर्गत प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित

विपिन ने प्रथम, हिमांशी ने द्वितीय और प्रिया ने पाया तीसरा स्थान

>> प्रतिस्पर्धा की भावना का विकास और नशे का नाश- यही है हमारा प्रयास- डॉ अशोक कुमार वर्मा

करनाल सुखविंदर सोही

नूंह। हरियाणा राज्य स्वापक नियंत्रण ब्यूरो प्रमुख/ पुलिस महानिदेशक श्री ओपी सिंह, भापुसे साहब के दिशानिदेर्शों एवं मार्गदर्शन में पुलिस अधीक्षक श्री मोहित हांडा, भापुसे और श्रीमती पंखुडी कुमार जी के आदेशानुसार हरियाणा भर में नशे के विरुद्ध जागरूकता कार्यक्रम आयोजित कर लोगों को नशे से दूर रहने के लिए जागरूक किया जा रहा है। ब्यूरो के जागरूकता कार्यक्रम एवं पुनर्वास प्रभारी/ उप निरीक्षक डॉ. अशोक कुमार वर्मा साइकिल के साधन का प्रयोग करते हुए इस अभियान को आगे बढ़ा रहे हैं। वे एक गाँव से दूसरे गाँव, एक शहर से दूसरे शहर और एक विद्यालय से दूसरे विद्यालय तक यह अभियान लेकर पहुँच रहे हैं। आज वे राजकीय आदर्श संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में पहुंचे हुए थे। विद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना के अंतर्गत एकत्रित विद्यार्थियों के साथ एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें 50 विद्यार्थियों ने भाग लिया। ये प्रतियोगिता नशा मुक्त हरियाणा अभियान के अंतर्गत कराई गयी। ब्यूरो के जागरूकता कार्यक्रम एवं पुनर्वास प्रभारी डॉ अशोक कुमार वर्मा ने प्रश्न पत्र तैयार किया जिसमें 10 प्रश्न पूछे गए। प्रत्येक प्रश्न का उचित उत्तर देने पर 2 अंक निर्धारित किये गए तो दूसरी और उचित उत्तर न देने पर 3 अंक काटने का प्रावधान रखा गया। यदि कोई प्रतिभागी किसी प्रश्न का उत्तर नहीं देता तो कोई अंक नहीं काटा गया। प्रतियोगिता में 12 वीं कक्षा के विपिन ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। हिमांशी।

डॉ. अंबेडकर मेधावी छात्रवृत्ति योजना के तहत आवेदन आमंत्रित, वंचित वर्गों के छात्रों को दी जा रही आर्थिक सहायता : उत्तम सिंह

करनाल बीटू संधू

करनाल। उपायुक्त उत्तम सिंह ने कहा कि वंचित वर्ग के मेधावी छात्रों के हितों में प्रदेश सरकार द्वारा डॉ. अम्बेडकर मेधावी छात्रवृत्ति योजना चलाई जा रही है। प्रदेश सरकार का उद्देश्य है कि किसी भी मेधावी छात्र की आर्थिक कारणों से पढ़ाई प्रभावित ना हो। उन्होंने बताया कि यह योजना सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग की तरफ से चलाई जा रही है। उपायुक्त ने छात्रवृति योजना की विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि वर्ष 2024-25 की अवधि के लिए डॉ. अम्बेडकर मेधावी छात्र संशोधित योजना के तहत सरल पोर्टल पर ऑनलाइन आवेदन शुरू हो चुके हैं। अनुसूचित वर्ग के जिन शहरी विद्यार्थियों के कक्षा दसवीं में 70, कक्षा बारहवीं में 75 व स्नातक कक्षाओं में 65 प्रतिशत अंक हैं, वे इस छात्रवृत्ति के लिए आवेदन कर सकते हैं। इसी प्रकार गांवों में अनुसूचित वर्ग के विद्यार्थी के कक्षा दसवीं में 60, बारहवीं में 70 व स्नातक कक्षा में 60 प्रतिशत अंक होने चाहिए। इसी प्रकार पिछड़ा वर्ग-ए के शहर में रहने वाले विद्यार्थी ने मैट्रिक में 70 प्रतिशत और ग्रामीण क्षेत्र में 60 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हों। पिछड़ा वर्ग-बी के शहरी छात्र या छात्रा के मैट्रिक में 80 एवं ग्रामीण विद्यार्थी के 75 प्रतिशत अंक होने चाहिए, तभी वह योजना का पात्र होगा। उन्होंने बताया कि इन विद्यार्थियों को 8 हजार रुपए दसवीं पास होने पर, एससी आवेदक को बारहवीं पास करने पर 8 से दस हजार रुपए तथा स्नातक पास होने के बाद 9 से 12 हजार रुपए आगे की पढ़ाई के लिए दिए जाएंगे। आवेदन के साथ लगाने होंगे ये दस्तावेज डॉ. अम्बेडकर मेधावी छात्र संशोधित योजना के लिए विद्यार्थी के परिवार की वार्षिक आय चार लाख रुपए से कम का प्रमाण-पत्र, रिहायशी।

सीएम नायब सैनी और केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल के नॉन स्टॉप विजन से आगे बढ़ रहा हरियाणा : विधायक जगमोहन आनंद

विधायक ने अपने कैंप कार्यालय में सुनी आमजन की समस्याएं

करनाल बीटू संधू

करनाल। के विधायक जगमोहन आनंद ने कहा कि हरियाणा के सीएम नायब सिंह सैनी और केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल के नॉन स्टॉप विजन से हरियाणा आगे बढ़ रहा है। कृषि, उद्योग, शिक्षा, स्वास्थ्य, पंचायत हर क्षेत्र में विकास कार्य हो रहे हैं। हर क्षेत्र में बिना किसी भेदभाव के विकास हो रहा है। विधायक जगमोहन आनंद बुधवार को कैंप कार्यालय में आमजन की समस्याओं को सुनने के उपरांत मीडिया से बातचीत करते हुए यह बयान दिए। उन्होंने कहा कि पहले की सरकारों में सरकारी नौकरियों की लिस्ट जारी होने से पहले ही अखबारों की हैडलाइन बन जाती थी। ऐसी व्यवस्था से पात्र युवा नौकरी से वंचित रह जाता था। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में इस व्यवस्था को बदलने का काम भाजपा सरकार ने किया है। आज हरियाणा में बिना खर्ची-पर्ची के गरीब परिवार का युवा मेरिट के आधार पर एचसीएस भर्ती हो रहा है। अब किसी भी युवा को नौकरी के लिए किसी की सिफारिश की आवश्यकता नहीं पड़ती। वर्तमान सरकार ने नौकरियों में पारदर्शी भर्ती सिस्टम खड़ा करके युवाओं की मेहनत को सम्मान दिया है। मेरिट के आधार पर खर्ची-पर्ची के बिना नौकरी का यह अधिकार वर्तमान सरकार ने उपलब्ध करवाया है। विधायक जगमोहन आनंद ने नॉन स्टॉप गति से विकास कार्य हो रहे हैं। हर इलाके में विकास परियोजनाओं का उद्घाटन या शिलान्यास किया जा रहा है। उन्होंने अपने कैंप कार्यालय में आमजन की समस्याओं को भी सुना। कुछ समस्याओं का मौके पर ही समाधान किया और कुछ समस्याओं को संबंधित अधिकारियों को भेजा गया।

आशीष मलिक एंटी करप्शन फाउंडेशन ऑफ इंडिया के स्टेट चेयरमैन नियुक्त

नैशनल सुप्रीमो नरेंद्र अरोड़ा ने सौंपा नियुक्ति पत्र

करनाल बीटू संधू

करनाल। एंटी करप्शन फाउंडेशन ऑफ इंडिया के नैशनल सुप्रीमो नरेंद्र अरोड़ा ने हरियाणा टीम का विस्तार करते हुए करनाल के युवा समाजसेवी आशीष मलिक को फाउंडेशन का स्टेट चेयरमैन, हरियाणा नियुक्त किया। नैशनल सुप्रीमो नरेन्द्र अरोड़ा ने आशीष मलिक को नियुक्ति पत्र सौंपकर पद की गरिमा में रहकर भ्रष्टाचार उन्मूलन जागरूकता के लिए कार्य करने की शपथ दिलाई। इस अवसर पर आशीष मलिक ने कहा कि वह अपने पद की गरिमा में रहकर फाउंडेशन के भ्रष्टाचार उन्मूलन जागरूकता के उद्देश्यों को जन जन तक लेकर जाएंगे और अपनी टीम का देश भर में विस्तार करेंगे। इस अवसर पर नरेंद्र अरोड़ा ने कहा कि एंटी करप्शन फाउंडेशन ऑफ इंडिया देशभर में अवेयरनेस अगेंस्ट करप्शन के लिए कार्य कर रहा है। फाउंडेशन की टीम देश के सभी राज्यों में स्थित है। फाउंडेशन द्वारा करप्शन फ्री इंडिया अभियान के माध्यम से शिक्षण संस्थानों में करप्शन फ्री इंडिया शीर्षक पर भाषण,स्लोगन, ड्राइंग, निबंध आदि प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं, हस्ताक्षर अभियान चलाए जाते हैं एवं सत्यनिष्ठा शपथ अभियान के माध्यम से लोगों को सत्यनिष्ठा की शपथ दिलाई जाती हैं एवं उनसे सत्यनिष्ठा की शपथ के फॉर्म भरवाएं जाते हैं। उन्होंने कहा कि फाउंडेशन द्वारा देश भर में सच्चाई एवं ईमानदारी से जीवन जीने का संदेश प्रसारित किया जाता है। उन्होंने कहा कि एंटी करप्शन फाउंडेशन ऑफ इंडिया को भ्रष्टाचार उन्मूलन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यों के लिए वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड लंदन यूके एवं टाइम्स ऑफ इंडिया ग्रुप द्वारा उत्तराखंड के गवर्नर लेफ्टीनेंट जनरल गुरमीत सिंह द्वारा सम्मानित किया गया है । इस अवसर पर सतिंदर विर्क मुख्य रू?

मानवता की भलाई के लिए प्लेटलेट्स दान किए

करनाल बीटू संधू

करनाल। लक्ष्य जनहित सोसाइटी के फाउंडर एंव समाजसेवी दिनेश बक्शी ने आज एक बार फिर मानवता की भलाई के लिए प्लेटलेट्स दान किए। उल्लेखनीय हैं कि आज दिनेश बक्शी को एक फोन कॉल कल्पना चावला राजकीय मेडिकल कॉलेज एंव अस्पताल से आई। उन्होंने कहां कि हमें एक मरीज के लिए इ+ प्लेटलेट्स की जरूरत है और मरीज के प्लेटलेट्स 5000 रह गए है। उसे जल्द प्लेटलेट्स चढाने होंगे। जिस के बाद दिनेश बक्शी ने बिना देर किए कल्पना चावला राजकीय मेडिकल कॉलेज एंव अस्पताल के ब्लड सेंटर में जाकर अपने प्लेटलेट्स दान किए। ज्ञात रहे कि दिनेश बक्शी जो कि रक्तदान व पर्यावरण के लिए काफी समय से काम करते है और महामहिम राज्यपाल के साथ-साथ कई नेशनल व इंटरनेशनल स्तर पर सम्मानित हो चुके है। उनके द्वारा अब तक 134 ब्लड व 83 बार प्लेटलेट्स दान किए गए है। दिनेश बक्शी का कहना है कि कोई भी स्वस्थ व्यक्ति 3 महीने के अंतराल पे ब्लड डोनेट कर सकता है, जबकि प्लेटलेट्स देने के 72 घंटे बाद दोबारा प्लेटलेट्स दान कर सकता है तथा महीने में 2 से 3 बार प्लेटलेट्स दान कर सकता है इससे शरीर में कोई कमजोरी नहीं आती। दिनेश बक्शी ने कहा कि इंसान को इंसान के काम आना चाहिए और ब्लड,प्लेटलेट्स ऐसी नायाब चीज प्रभु ने इंसान के शरीर में बनाई है जो आज तक किसी फैक्टरी या लैब में नहीं बन पाई। ये एक इंसान ही दूसरे इंसान को दे सकता है।

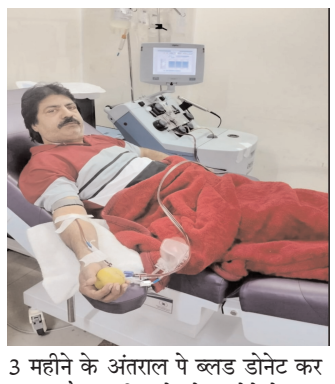

हमारी सांस्कृतिक विरासत को अंतरराष्ट्रीय पटल तक पहुंचाने में अहम भूमिका निभा रहा सूरजकुंड मेला

सूरजकुंड परिसर में 07 से 23 फरवरी तक लगेगा अंतरराष्ट्रीय क्राफ्ट मेला

चंडीगढ़ जनवरी : हरियाणा अपनी सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विरासत को सहेजे है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हरियाणा की पावन धरा पर लगने वाला सूरजकुंड मेला हमारी सांस्कृतिक विरासत को अंतरराष्ट्रीय पटल तक पहुंचाने में अहम भूमिका निभा रहा है। हरियाणा पर्यटन निगम की प्रधान सचिव कला रामचंद्रन 38वें सूरजकुंड अंतरराष्ट्रीय क्राफ्ट मेले की तैयारियों को लेकर फरीदाबाद जिला प्रशासन के अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक कर रही थी। फरीदाबाद स्थित सूरजकुंड परिसर में 07 से 23 फरवरी तक अंतरराष्ट्रीय क्राफ्ट मेले का आयोजन किया जाएगा। हरियाणा के लिए गौरव की बात है कि वे अंतरराष्ट्रीय स्तर के मेले के आयोजन की जिम्मेवारी प्रभावी रूप से निभा रहे हैं। उन्होंने बताया कि इस बार 38वें सूरजकुंड अंतरराष्ट्रीय क्राफ्ट मेले में उड़ीसा व मध्यप्रदेश थीम स्टेट हैं और बिम्सटेक-बांग्लादेश, भूटान, इंडिया,म्यांमार, नेपाल, श्रीलंका व थाईलैंड इंटरनेशनल ऑर्गेनाइजेशन हैं। नार्थ ईस्ट हैंडलूम एंड हैंडीक्राफ्ट एसोसिएशन मेले का कल्चरल पार्टनर है। साथ ही दिल्ली मेट्रो टिकटिंग पार्टनर रहेगा। मेला पूर्ण रूप से डिजीटलाइज्ड रहेगा। मेले से जुड़े हर पहलू की जानकारी सूरजकुंडमेला डॉट कॉ डॉट इन पर उपलब्ध रहेगी। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के मार्गदर्शन में मेले को भव्य ढंग से मनाने के लिए सभी तैयारियां प्रभावी रूप से की जा रही हैं। मेले के दौरान जहां हरियाणवी संस्कृति का संप्रेषण अन्य राज्यों व बिम्सटेक देशों तक पहुंचेगा, वहीं वहां की संस्कृति से भी रूबरू होने का अवसर हरियाणा वासियों को मिलेगा।

नो वेंडिंग जोन से नगर निगम ने हटाई सभी रेहड़ी-फड़ी, सड़कों को किया गया अतिक्रमण मुक्त- अशोक कुमार, अतिरिक्त निगमायुक्त।

दुकानदारों व रेहड़ी-फड़ी वालों को अतिक्रमण न करने की दी सख्त हिदायत।

करनाल सुखविंदर सोही

करनाल। नगर निगम आयुक्त डॉ. वैशाली शर्मा के निर्देश पर शहर में घोषित हुए नो वेंडिंग जोन से रेहड़ी-फड़ी हटाने की कार्रवाई नगर निगम की टीम द्वारा शुरू कर दी गई है। यह कार्रवाई पिछले करीब 10 दिनों से चल रही आई.ई.सी. व मुनादी करवाने के बाद अमल में लाई गई है। यह जानकारी अतिरिक्त निगम आयुक्त अशोक कुमार ने दी। उन्होंने बताया कि बुधवार को जोन नम्बर 2 में पड़ने वाले पुराने कमेटी चैक से रणबीर हुड्डा चैक तक सड़क पर लगी सभी रेहड़ी-फड़ी वालों को हटाया गया है। इसके साथ-साथ दुकानदारों द्वारा सड़क पर किए गए अतिक्रमण को भी हटाकर सामान को कब्जे में लिया गया है। उन्होंने बताया कि प्रवर्तन दल द्वारा सभी दुकानदारों व रेहड़ी-फड़ी वालों को दोबारा अतिक्रमण न करने की सख्त हिदायत भी दी गई है। कार्रवाई के दौरान कमेटी चैक के समीप श्री श्याम 56 भोग के दुकानदार द्वारा सड़क पर किए गए अतिक्रमण को हटाने के साथ-साथ उसका सामान भी कब्जे में लिया गया। परंतु सम्बंधित दुकानदार द्वारा नगर निगम के वाहन से सामान को जबरन तरीके से उतारा जाने लगा। टीम सदस्यों द्वारा मना करने पर दुकानदार ने हाथापाई शुरू कर दी, परंतु टीम द्वारा उसे समझाया गया और सरकारी कार्य में बाधा न डालने की बात कही गई। अतिरिक्त निगमायुक्त ने ऐसे दुकानदार, जो सरकारी कार्य में बाधा डालने की कोशिश करेंगे, को चेतावनी देते स्पष्ट किया कि ऐसा करने पर उनके विरूद्ध प्रशासन द्वारा कानूनी कार्रवाई अमल में लाई जाएगी। उन्होंने बताया कि शहर की मुख्य सडकों से भीड़-भाड़ कम करने व यातायात व्यवस्थित करने के मकसद को लेकर चार मुख्य।

नशे को लेकर पुलिस विभाग की ओर से हुआ बैठक

जगाधरी वर्कशाप जनवरी : शहर के थाना परिसर में मंगलवार को पुलिस विभाग की ओर से एक बैठक का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता डीएसपी रादौर आशीष चौधरी ने की। बैठक में शहर के केमिस्ट एसोसिएशन से जुड़े दुकानदारों ने भाग लिया। डीएसपी आशीष चौधरी ने स्थानीय केमिस्टों से अपील की कि वे शहर व क्षेत्र में फैल रहे नशे को दूर करने में अपना सहयोग करें। उन्होंने कहा कि कोई भी कैमिस्ट नशीली दवाइयां न बेचे। न ही किसी को नशीले पदार्थों का सेवन करने के लिए इंजेक्शन उपलब्ध करवाए। यदि कोई केमिस्ट शहर व क्षेत्र में नियमों का उल्लंघन करेगा,तो उसके विरुद्ध कड़ी कानूनी कार्रवाई की जायेगी। नशे को दूर करने के लिए सभी अपना सहयोग करे। इस अवसर पर थाना रादौर प्रभारी सब इंस्पेक्टर संदीप कुमार, केमिस्ट एसोसिएशन की ओर से सुरेश अमलोहा, संजय गुप्ता, वासुदेव मलिक, अभिषेक गुप्ता, सुरेंद्र मेहता, रवि आर्य, राजेश गुप्ता बोबी, योगेश कुमार, साहिल, बसंत मिगलानी, गुरनाम सिंह, आशीष कांबोज, शुभम शर्मा, गुलशन कुमार आदि मौजूद रहे।

साइकिल पर जा रहा अधेड़ अचानक चक्कर खाकर गिरा

यमुनानगर जनवरी : महाराणा प्रताप चौंक के पास साइकिल पर जा रहा अधेड़ अचानक से चक्कर खाकर गिर पड़ा। उसका सिर सडक में लगने से गंभीर घायल हो गया। राहगीरों ने उसे अस्पताल में भिजवाया,जहां उसकी इलाज के दौरान मौत हो गई। मृतक की पहचान बैंक कालोनी निवासी 42 वर्षीय विक्रम के रूप में हुई। वह मजदूरी करता था। सोमवार की दोपहर वह खाना खाने के लिए घर पर गया। वहां से साइकिल पर लौट रहा था। जब वह महाराणा प्रताप चौंक के पास पहुंचा। तभी उसे अचानक चक्कर आ गए और वह सडक पर गिर पड़ा। सडक में उसका सिर लगा। उसे अस्पताल में भिजवाया गया, जहां उसकी देर रात मौत हो गई।

वाहन दुर्घटनाओं में मानव त्रुटि कम करने के लिए परिवहन मंत्री हरियाणा के सुझाव की केंद्रीय मंत्री ने की सराहना

हरियाणा के परिवहन मंत्री केंद्रीय परिवहन मंत्री की अध्यक्षता में हुई बैठक में हिस्सा लेते हुए।

अनिल विज बोले, मानव त्रुटि के कारण हमारे देश में होती है 80 प्रतिशत दुर्घटनाएं

चंडीगढ़/नई दिल्ली जनवरी : देश की परिवहन प्रणाली और वाहन दुर्घटनाओं में मानव त्रुटि को कम करने के लिए हरियाणा के परिवहन मंत्री अनिल विज के सुझाव की केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने प्रशंसा करते हुए कहा कि अनिल विज के सुझाव का वे स्वागत करते हैं। इस दिशा में वाहन दुर्घटनाओं में मानव त्रुटि को कम करने के साथ-साथ यात्रियों और वाहन चालकों की सुविधा के लिए विभिन्न कदम केंद्रीय मंत्रालय उठाने जा रहा है। विज ने नई दिल्ली में भारत मंडपम में केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी की अध्यक्षता में सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के परिवहन मंत्रियों की बैठक और परिवहन विकास परिषद की 42वीं बैठक के दौरान हरियाणा की ओर से सुझाव दिया। बैठक में हरियाणा परिवहन विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव अशोक खेमका भी उपस्थित रहे।

ऐसी प्रणाली करनी होगी विकसित, जिससे मानव त्रुटि हो कम

अनिल विज ने कहा कि मानव त्रुटि के कारण हमारे देश में 80 प्रतिशत दुर्घटनाएं होती हैं। हमें ऐसी प्रणाली विकसित करनी चाहिए, जिससे मानव त्रुटि कम से कम हो और जानमाल का नुकसान कम हो। वाहन चालकों को शुद्ध और साफ सुथरा भोजन मिले और आरामदायक ठहराव का स्थान होना चाहिए ताकि अनरेस्ट (आरामदायक न होने से) होने वाली वाहन दुर्घटनाओं में कमी लाई जा सके। जब से वे परिवहन मंत्री बने हैं, तब से उन्होंने हरियाणा के सभी बस अड्डों में यात्रियों को साफ सुथरा खाने पीने का सामान उपलब्ध करवाने के निर्देश दिए हैं। हमने हरियाणा टूरिज्म से जुड़ने के लिए कहा है ताकि यात्रियों और वाहन चालकों को सही और स्वच्छ खाने पीने की चीजें मिलें। जिस प्रकार से रेलवे में खाने पीने का सामान मिलता है, उसी प्रकार से वाहन चालकों को मिलना चाहिए। इस बारे में अध्ययन होना चाहिए। वाहन चालकों और यात्रियों के लिए फूट्स की भी सुविधा दी जा सकती है।

हरियाणा में डायल 112 की सुविधा की गाड़ियों में स्ट्रेचर ले जाने की भी सुविधा

अनिल विज के सुझाव का स्वागत करते हुए केंद्रीय मंत्री ने कहा कि हम आपके सुझाव के साथ-साथ यात्रियों विशेषतौर पर महिलाओं के लिए शौचालय व्यवस्था पर जोर देने वाले हैं। एक योजना लाने वाले है ताकि महिलाओं को साफ सुथरा टॉयलेट भी मिल सके। विज ने बैठक के दौरान बताया कि हरियाणा में वाहन दुर्घटना होने पर डायल 112 की सुविधा की गाड़ियों में स्ट्रेचर ले जाने की भी सुविधा है ताकि दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति को तुरंत उपचार मिल सके। उन्होंने बैठक में देश की ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन को आहवान करते हुए कहा कि ये सही है कि हर मौसम में ट्रांसपोर्ट के लोग काम करते हैं। ट्रांसपोर्ट क्षेत्र का देश की अर्थव्यवस्था में अहम योगदान है। लेकिन ट्रांसपोर्ट क्षेत्र को अनुशासन में लाना हम सबकी साझी जिम्मेदारी है इसलिए ट्रांसपोर्टरों को अपने ड्राइवर और क्लीनर्स के कार्य के घंटों, ओवर लोडिंग, ओवर साइजिंग, को देखना होगा, क्योंकि इन सब चीजों से भ्रष्टाचार का जन्म होता है। हमें भ्रष्टाचार मुक्त समाज को आगे लेकर जाना होगा और ये ट्रांसपोर्टरों की भागीदारी के बिना मुमकिन नहीं होगा। केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्रालय ने हरियाणा द्वारा रजिस्टर्ड व्हीकल स्क्रैपिंग फैसिलिटी पर किए जा रहे कार्य के क्रियान्वयन की तारीफ की कि हरियाणा द्वारा इस संबंध बेहतर कार्य किया जा रहा है।

पीजीआई रोगियों की सहायता के लिए आरंभ की गई सारथी परियोजना सराहनीय: डॉ. विवेक जोशी

चंडीगढ़ जनवरी : मरीजों की सहायता के लिए पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टीच्यूट ऑफ मेडिकल एजुकेशन एंड रिसर्च (पीजीआईएमईआर) चंडीगढ़ द्वारा आरंभ किया गया प्रोजेक्ट सारथी सराहनीय कदम है। इससे पीजीआई आने वाले मरीजों का डॉक्टर तक पहुंचने के लिए मार्गदर्शन मिलेगा। इस संबंध में पीजीआईएमईआर के निदेशक और न्यूरोलॉजी विभाग के डॉ. विवेक लाल ने हरियाणा के मुख्य सचिव डॉ. विवेक जोशी को पत्र लिखकर प्रोजेक्ट सारथी बारे आम जनता तक जानकारी पहुंचाने के लिए हरियाणा सरकार से सहयोग मांगा है। प्रो. विवेक लाल ने कहा कि प्रोजेक्ट सारथी में एनएसएस के छात्रों और गैर सरकारी संगठनों की भागीदारी शामिल है, जो मरीजों का मार्गदर्शन करने, प्रतीक्षा समय को कम करने और समग्र रोगी अनुभव को बेहतर बनाने के लिए अपना समय देते हैं। पीजीआईएमईआर द्वारा किए गए एक अध्ययन में इस प्रोजेक्ट के आशाजनक परिणाम आए हैं। मई 2024 में कार्यक्रम की शुरूआत के बाद से आउट पेशेंट विभागों (ओपीडी) में औसत प्रतीक्षा समय में उल्लेखनीय कमी आई है। इसमें विभिन्न चौनलों के माध्यम से कार्यक्रम को सक्रिय रूप से बढ़ावा देना और इसके सफल प्रसार को सुनिश्चित करने के लिए स्थानीय अधिकारियों के साथ सहयोग करना शामिल है।

भूकंप जैसे प्राकृतिक आपदाओं से बचाव के लिए प्रत्येक जिले में 10000 क्षमता का आपदा क्लिनिक स्थापित करने की सत्याग्रह रिसर्च फाऊंडेशन मदर ताहिरा चैरिटेबल ट्रस्ट एवं विभिन्न सामाजिक संगठनों ने पुनः सरकार से की मांग।

भूकंप में तिब्बत में मारे गए लोगों की सम्मान में विशेष सर्वधर्म प्रार्थना सभा का आयोजन।

(वर्ल्ड न्यूज फीचर नेटवर्क)

बेतिया। सत्याग्रह भवन में तिब्बत में भूकंप में मारे गए लोगों के सम्मान में सर्वधर्म प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया इस अवसर पर भूकंप जैसे विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं से बचने के लिए प्रत्येक जिलों में 10000 क्षमता का आपदा क्लीनिक स्थापित करने की मांग पुन?: मांग करते हुए सत्याग्रह रिसर्च फाऊंडेशन के सचिव डॉ एजाज अहमद अधिवक्ता, वरिष्ठ पत्रकार सह संस्थापक मदर ताहिरा चैरिटेबल ट्रस्ट डॉ अमानुल हक, डॉ शाहनवाज अली, डॉ अमित कुमार लोहिया ने कहा कि विगत कई वर्षों से विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं से बचने के लिए देश के प्रत्येक जिलों में 10000 क्षमता का आपदा किलिनिक स्थापित करने की मांग सरकार से करते रहे? है।भूकंप के केंद्र बिंदु तिब्बत मंगलवार की सुबह तिब्बत के शिगाजे शहर के पास उत्तरी हिमालय की तलहटी में 6.8 तीव्रता का शक्तिशाली भूकंप आया, वैसे बिहार समेत भारत के विभिन्न राज्यों में भूकंप के

झटके महसूस किए गए। भारत नेपाल भूटान बांग्लादेश चीन एवं तिब्बत में भी भूकंप के झटके महसूस किए गए ।जिससे काफी तबाही हुई और जान-माल का नुकसान हुआ। नेपाल, भूटान और भारत सहित पड़ोसी क्षेत्रों में इमारतों के हिलने से कम से कम 130 लोगों की जान चली गई एवं सेकडो लोगों के घायल होने के समाचार उपलब्ध हो रहे हैं।

तिब्बत भूकंपः क्षति और आपातकालीन प्रतिक्रिया शुरूआती आकलन से पता चला है कि तिब्बत के शिगात्से क्षेत्र में 3,609 घर नष्ट हो गए हैं, जिसकी आबादी करीब 800,000 है।

साइबर ठगी से बचने के लिये साइबर एक्सपर्ट और बैंक कर्मियों द्वारा दिया गया प्रशिक्षण

■ उरई

वर्तमान में साइबर ठग लोगों को अपने झांसे में लेकर भोले भाले लोगों से लाखों रुपए की ठगी कर लेते हैं, इस ठगी से बचाव के लिए जिलाधिकारी राजेश कुमार पाण्डेय व पुलिस अधीक्षक डॉ0 दुर्गेश कुमार ने विकास भवन स्थित रानी लक्ष्मीबाई सभागार में साइबर एक्सपर्ट और बैंक कर्मियों द्वारा ग्राम प्रधानों, बैंक सखी, क्षेत्र पंचायत सदस्य और संबंधित अधिकारियों को प्रशिक्षण दिया गया, जिससे वह ग्रामीणों, बुजुर्ग व्यक्तियों को जागरुक कर सके और साइबर ठगों से उन्हें सुरक्षित रख सकें।आयोजित इस कार्यशाला में जनपद स्तरीय उपस्थित अधिकारियों और वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम जनपद के 574 ग्राम पंचायत के प्रधान, क्षेत्र पंचायत सदस्य तथा बैंक सखियों को साइबर एक्सपर्ट द्वारा बारीकी से ई डिस्टिक मैनेजर पुष्पेंद्र,सचिन रघुवंशी शाखा प्रबंधक उरई आई सी आई सी आई बैंक उरई, अभय शुक्ला क्षेत्रीय प्रबंधक, शरद गुप्ता डिजिटल इको सिस्टम,

सुरीत चौधरी गवर्मेंट बैंकिंग इको सिस्टम ने प्रशिक्षण दिया, जिसमें ग्राम प्रधानों को फर्जी क्रेडिट मैसेज फ्रॉड फेसबुक सोशल मीडिया पर अनजान दोस्ती फर्जी लोन एप टेलीग्राम चैनल वर्क फ्रॉम होम फ्रॉड गूगल पर पड़े फर्जी हेल्पलाइन नंबर गूगल आदि सर्च इंजन पर फर्जी वेबसाइट न्यूड वीडियो कॉल फ्रॉड फर्जी फोन कॉल फ्रॉड ऑनलाइन खरीदारी ऑनलाइन बिक्री साइबर अपराध का नया ट्रेंड डिजिटल अरेस्ट फेक नोटिस शहर गांव में घूम कर धोखाधड़ी जीवनसाथी डेटिंग एप से फ्रॉड फर्जी फेसबुक सोशल मीडिया अकाउंट बनाकर चार्जिंग केबल वाई-फाई से डाटा चोरी एसएमएस फॉरवर्ड सहित साइबर अपराध से जुड़े हुए 22 अपराधों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई साथ ही उन्हें ऐसी स्थिति में क्या करना चाहिए इसके बारे में भी अवगत कराया गया।

प्रशिक्षण के दौरान हुए जिलाधिकारी ने कहा कि वर्तमान में साइबर ठग विभिन्न तरीकों से भोले भाले लोगों को अपने जाल में फंसा लेते हैं, जिस कारण उनका आर्थिक और सामाजिक नुकसान होता है, इसीलिए इस तरह का प्रशिक्षण दिया गया है, जिससे ग्राम प्रधान बैंक सखी क्षेत्र पंचायत सदस्य और जिला स्तरीय अधिकारी व्यक्तियों को ज्यादा से ज्यादा जागरूक कर सकें और उन्हें इस फर्जी वाणी से बचाए जा सके वहीं पुलिस अधीक्षक ने कहा कि यदि किसी भी तरह से फर्जी बड़ा हो जाता है या उन्हें डिजिटल अरेस्ट किया जाता है तो इसके बारे में तत्काल सूचना दें जनपद में साइबर अपराधों से जुड़ी एक सेल बनी हुई है जो लगातार इस पर काम कर रही है ऐसी कोई भी शिकायत मिलने पर वह तत्काल पुलिस को सूचित कर सकते हैं साथ ही यदि उनके हाथों से पैसे भी निकल जाते हैं तो 1930 पर कॉल करके इस साइबर अपराध के बारे में जानकारी दे सकते हैं।

इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी राजेन्द्र कुमार श्रीवास, नगर मजिस्ट्रेट राजेश कुमार वर्मा, जिला विकास अधिकारी महेंद्र चौबे आदि सहित सम्बंधित अधिकारी मौजूद रहे।

अजय खरे ने की रघुवीर सहाय के परिवार से मुलाकात

(वर्ल्ड न्यूज फीचर नेटवर्क)

रीवा। देश की राजधानी दिल्ली प्रवास के दौरान समता संपर्क अभियान के राष्ट्रीय संयोजक लोकतंत्र सेनानी अजय खरे ने साप्ताहिक दिनमान के संपादक रहे प्रख्यात साहित्यकार लेखक कवि स्वर्गीय रघुवीर सहाय जी के निवास स्थान प्रेस एंक्लेव नई दिल्ली में 3 जनवरी शुक्रवार को पहुंचकर उनकी धर्मपत्नी श्रीमती विमलेश्वरी सहाय जी का दर्शन एवं आशीर्वाद प्राप्त किया। चित्र में बाई ओर से सहाय जी की बेटी प्रख्यात दूरदर्शन समाचार वाचिका मंजरी सहाय जोशी , विमलेश्वरी सहाय , लोकतंत्र सेनानी अजय खरे, सहाय जी के दामाद भाषा विज्ञान के प्रोफेसर हेमंत जोशी मौजूद हैं। श्री खरे ने रघुवीर सहाय के संपादनकाल में दिनमान में लेखन कार्य किया था। हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में दिनमान ने विश्वस्तरीय पहचान अर्जित की थी।

संक्षिप्त समाचार

महिला के साथ अश्लील हरकतें की, विरोध करने पर गाली-गलौज व मारपीट की

जालौन-उरई। घर में घुसकर युवक द्वारा महिला के साथ अश्लील हरकतें करने एवं विरोध करने पर गाली, गलौज व मारपीट कर धमकी देने की शिकायत पीड़िता ने कोतवाली में तहरीर देकर की है। पीड़िता की तहरीर पर पुलिस मामले की जांच कर रही है। कोतवाली क्षेत्र के एक गांव निवासी महिला ने पुलिस को बताया कि वह मोहल्ला चिमनदुबे में अपने भाई के यहां गई थी। वह व भाई की पत्नी घर में बैठकर बातें कर रहे थे। तभी मोहल्ला नारोभास्कर निवासी एक युवक वहां आया और जबरन घर में घुस गया। घर में घुसते ही उसने गाली, गलौज शुरू कर दी। मना करने पर वह अश्लील हरकतें करने लगा। जब उन दोनों ने विरोध किया तो उसने मारपीट कर दी साथ ही धमकी देकर भाग गया। पीड़िता ने बताया कि शाम को जब भाई घर आए तो उन्होंने भाई से इस घटना के बारे में बताया। जब भाई युवक के घर शिकायत करने पहुंचे तो उसने भाई के साथ भी गाली, गलौज करते हुए मारपीट की। पीडिता की तहरीर पर पुलिस मामले की जांच कर रही है।

खाद लेने आए किसानों ने मजदूर के साथ गाली-गलौज की

जालौन-उरई। खाद लेने आए किसानों ने मजदूर के साथ गाली-गलौज कर दी। जब मजदूर के भतीजे ने मना किया तो किसानों ने उसके साथ मारपीट कर कर लहुलुहान कर दिया। पीड़ित ने घटना की शिकायत पुलिस से कर दी है। चौकी पुलिस ने मौके पर पहुंचकर पूछताछ की। बंगरा मार्ग पर कृषि उत्पादन मंडी समिति के पास मोहल्ला रावतान में सईद की खाद की दुकान है। कुछ किसानों ने आकर दुकान से खाद की खरीदारी की। खरीदी गई खाद को दुकान में मजदूरी कर रहे पंजाब सिंह ट्रैक्टर ट्राली में लाद रहे थे। तभी किसानों ने मजदूरों के साथ गाली, गलौज शुरू कर दी। जब पंजाब सिंह के भतीजे दीपक कुमार निवासी खंडेराव ने मना किया तो किसानों ने मिलकर युवक के साथ गाली-गलौज कर मारपीट कर दी। मारपीट के दौरान युवक के सिर में गंभीर चोटें आने के कारण वह जमीन पर गिर गया। उसे जमीन पर गिरा देख सभी आरोपी ट्रैक्टर लेकर भाग निकले। दुकान पर बैठे लोगों ने घायल युवक को सीएचसी में भर्ती कराया। लेकिन हालत गंभीर होने पर उसे मेडिकल कालेज के लिए रेफर कर दिया गया है। घटना की सूचना मिलते ही चौकी प्रभारी जितेंद्र सिंह पुलिस फोर्स के साथ मौके पर पहुंचे और घटना की जानकारी ली। सीसीटीवी फुटेज के आधार पर आरोपियों की तलाश शुरू की।

औरेखी में अज्ञात चोरों ने घर में घुसकर 60 हजार रुपये नकद व सोने चांदी के आभूषण उड़ाये

जालौन-उरई। छिरिया मलकपुरा चौकी क्षेत्र के ग्राम औरेखी में अज्ञात चोर घर में घुसकर 60 हजार रुपये नकद व सोने, चांदी के आभूषण चोरी कर ले गए। पीड़ित ने चोरी की सूचना पुलिस को दी है। चौकी क्षेत्र के ग्राम औरेखी निवासी पंकज सिंह ने पुलिस को बताया कि वह दो दिन से घर पर नहीं थे। घर में नाबालिक बेटा व बेटी थे। सोमवार की मध्य रात्रि के करीब चोर उनके घर में घुस आए और घर में रखे खेत जुताई के 60 हजार रुपये नकद, चांदी की दो तोड़िया, सोने की दो अंगूठी मनचली चुरा ले गये हैं। घर से लगभग डेढ़ लाख की हुई चोरी के मामले में पीड़ित ने पुलिस को बताया कि जब उनके घर में चोर चोरी कर रहा था तो उनके बेटे ने उसे देख लिया और उसे पहचान भी लिया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

पत्नी के साथ मारपीट के आरोपियों पर कार्यवाही

जालौन-उरई। अलग अलग मामलों में पत्नी के साथ मारपीट करने में पुलिस ने आरोपी पतियों के खिलाफ कार्रवाई की है। कोतवाली क्षेत्र के ग्राम मोहनपुर निवासी पार्वती ने पुलिस को बताया कि उनके पति महेश कुमार एवं मोहनपुर निवासी रश्मी ने बताया कि उनके पति सतेंद्र कुमार उसके साथ आए दिन मारपीट करते हैं। जिसके चलते वह परेशान हैं। पीड़िताओं की तहरीर पर पुलिस ने आरोपी पतियों के खिलाफ कार्रवाई की है।

विकास कार्यों का सदर विधायक व कालपी विधायक ने किया सयुक्त रूप से लोकार्पण

■ जालौन-उरई

विकास खंड के 10 ग्राम पंचायत में कराए गए विकास कार्यों व पंचायत भवनों का ग्राम विकास मंत्री केशव प्रसाद मौर्य के मार्ग दर्शन में सदर विधायक गौरीशंकर वर्मा व कालपी विधायक विनोद चतुर्वेदी ने द्वारा संयुक्त रूप से लोकार्पण किया गया। क्षेत्र पंचायत कार्यालय में आयोजित लोकार्पण कार्यक्रम में विधायकों ने कहा कि डबल इंजन की सरकार सबका साथ व सबका विकास के तहत काम कर रही है। सरकार शहरों के साथ गांवों में भी विकास करा रही है।

सदर विधायक गौरीशंकर वर्मा ने क्षेत्र पंचायत कार्यालय सभागार में आयोजित लोकार्पण कार्यक्रम में बोलते हुए कहा कि प्रदेश की योगी सरकार चहुंमुखी विकास कर रही है। शहरों के साथ गांव में विकास को प्राथमिकता दे रही है। गांव की कच्ची गलियों को पक्का किया जा रहा है। पंचायत व स्कूल भवनों की दशा सुधारी जा रही है। ग्राम्य विकास मंत्री केशव प्रसाद मौर्य के नेतृत्व में आठ गांवों में बनवायी गई सड़कों व दो गांवों में बनवाए गए पंचायत भवनों को लोकार्पण किया गया। बीडीओ अरूण कुमार ने कहा कि विकास खंड के ग्राम मांडरी, प्रतापपुरा, खनुआं, हरकौती, जगनेवा, पर्वतपुर दमां में इंटरलाकिंग निर्माण, ऊद में स्कूल मार्ग पर सीसी सड़क व सिहारी पडैया व हीरापुर में बने पंचायत भवन का फीता काटकर लोकार्पण किया गया है। इस मौके पर कालपी विधायक विनोद चतुर्वेदी, ब्लाक प्रमुख रामराजा निरंजन, राजवीर सिंह राजावत, अवर अभियंता वर्षा वर्मा, एडीओ आईएबी संदीप गुप्ता, एडीओ कोऑपरेटिव शैलेंद्र सिंह, लक्ष्मीकांत चतुर्वेदी, लल्ला तिवारी, रामू गुप्ता, अशोक पटेल आदि उपस्थित रहे।

प्रबंधक ने विद्यालय की प्री बोर्ड परीक्षाओं का औचक निरीक्षण कर लिया जायजा

कालपी -उरई। मंगलवार को सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज सदर बाजार कालपी मे प्री बोर्ड परीक्षा का पांचवें दिन विद्यालय के प्रबंधक हरिभूषण सिंह चौहान ने सभी परीक्षा कक्षों का निरीक्षण किया और सभी व्यवस्थाओ की हकीकत को देखा। विदित हो कि चाक चौबंद इंतजाम के साथ विधालय के कक्षों में प्री बोर्ड परीक्षाएँ कुशलतापूर्वक संचलित हो रही है। परीक्षा के पांचवें दिन कक्षा 10 की अंग्रेजी तथा कक्षा 12 की रसायन विज्ञान की परीक्षा का संचालन हो रहा था। इसी प्रबंधक औचक तरीके से विधालय में पहुंचे। प्रबंधक ने सभी परीक्षा कक्षों का घूम-घूम कर निरीक्षण किया।इस अवसर पर विद्यालय के सभी आचार्य आचार्या बहने अपने अपने दायित्वो का भलि भांति निर्वाहन करते हुये पाये गये। प्रधानाचार्य देवेंद्र सिंह के साथ निरीक्षण के दौरान प्रबंधक ने निर्देश दिया है कि परीक्षार्थियों की सुविधाएं उचित होनी चाहिये।

फीनिक्स यूनाइटेड मॉल में 'एंड ऑफ सीजन सेल' का शानदार आगाज

06 जनवरी से 26 जनवरी तक ग्राहकों के लिए खरीदारी पर खास ऑफर्स

पसंदीदा ब्रांड्स पर 60% तक की छूट, शानदार घड़ी और पैकेज जीतने का मौका

(वर्ल्ड न्यूज फीचर नेटवर्क)

बरेली। फीनिक्स यूनाइटेड मॉल, बरेली, ने अपने ग्राहकों के लिए "एंड ऑफ सीजन सेल" का आयोजन किया है, जो 6 जनवरी से 26 जनवरी 2025 तक चलेगी। इस सेल में शानदार ब्रांड्स पर बेहतरीन डील्स और छूट के साथ खरीदारी का अनोखा अनुभव मिलेगा। इस बीच प्रत्येक सोमवार से शुक्रवार, सुबह 11 बजे से रात 10 बजे तक ?12,999 या उससे अधिक की खरीदारी पर सभी ग्राहकों को आकर्षक गिफ्ट्स जीतने का मौका मिलेगा। साथ ही, सप्ताह के सबसे बड़े ग्राहक को मिलेगा एक एक्सक्लूसिव घड़ी जीतने का अवसर और ये सप्ताह के सभी दिनों में मान्य होगा। इस सेल का सबसे शानदार ऑफर 5 भाग्यशाली विजेताओं को क्लब महिंद्रा की ओर से डोमेस्टिक स्टे वेकेशन का तोहफा है। अपने पसंदीदा ब्रांड्स पर 60% तक की छूट का लाभ के साथ इतने शानदार ऑफर्स का फायदा उठाने के लिए जल्द से जल्द फीनिक्स यूनाइटेड मॉल आएँ। फीनिक्स यूनाइटेड मॉल में यह सेल हर शॉपिंग प्रेमी के लिए अपने पसंदीदा ब्रांड्स पर बड़ी बचत करने का एक शानदार मौका है। फैशन, होम डेकोर, इलेक्ट्रॉनिक्स और लाइफस्टाइल प्रॉडक्ट्स में बेस्ट डील्स के साथ इस जनवरी खरीदारी का पूरा आनंद उठाने के लिए तैयार रहिए। फीनिक्स मिल्स के सीनियर सेंटर डायरेक्टर श्री संजीव सरीन ने कहा, "हमारे एंड ऑफ सीजन सेल का उद्देश्य केवल छूट प्रदान करना नहीं, बल्कि ग्राहकों को खरीदारी का बेहतरीन अनुभव देना है। यह सेल ने साल की शुरूआत में सभी परिवारों के लिए खुशियों का जश्न मनाने और अपने प्रियजनों के साथ शानदार समय बिताने का मौका है। हम बरेलीवासियों को इस शानदार सेल का हिस्सा बनने के लिए आमंत्रित करते हैं।" फीनिक्स यूनाइटेड मॉल में खरीदारी करें और नए साल की शुरूआत को खास बनाएँ।

संघ के पूर्वी उप्र क्षेत्र प्रचारक को मातृ शोक

■ कोंच

तहसील क्षेत्र के ग्राम इमलौरी के निवासी और संघ के पूर्वी उप्र क्षेत्र के प्रचार प्रमुख राजेंद्र सिंह निरंजन की 90 वर्षीय माता किशोरी देवी का लंबी उम्र के चलते निधन हो जाने पर क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ गयी। तमाम लोगों ने गाँव पहुंचकर प्रचारक जी की माता जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की और अंतिम संस्कार में शामिल हुए। इस दौरान संघ के प्रांत प्रचारक श्रीराम, वरिष्ठ प्रचारक राजेंद्र सक्सेना, विभाग संघ चालक चित्रकूट गोपालदास, विभाग संघ चालक झांसी ओमनारायण जालौन, जिला संघ चालक रामकृष्ण निरंजन, जिला कार्यवाह गौतम त्रिपाठी, जिला प्रचारक जालौन शिवम, माधौगढ़ विधायक मूलचंद निरंजन, जिला पंचायत अध्यक्ष घनश्याम अनुरागी, पूर्व विधायक सन्तराम सेंगर, पूर्व नगर कार्यवाह शैलेश सोनी, प्रांतीय गौरक्षा प्रमुख रामबहादुर निरंजन, विभाग सेवा प्रमुख पूरनलाल, जिला उपाध्यक्ष भाजपा वीरेंद्र चमरसेना, जिला मंत्री अमित निरंजन, पूर्व पिछड़ा वर्ग मोर्चा जिलाध्यक्ष बृजेंद्र कुशवाहा, उपवन सिह, शिव कुमार निरंजन आदि शामिल रहे।

भव्य कलश यात्रा के साथ शिव पुराण एवं ज्ञान यज्ञ कथा का शुभारंभ

■ कोंच

नगर में शिव पुराण कथा एवं ज्ञान यज्ञ की कलशयात्रा बडी धूमधाम के साथ निकाली गयी।

कलशयात्रा का शुभारंभ महाकालेश्वर मंदिर नायक के मठ से प्रारंभ हुआ यात्रा रेलवे क्रॉसिंग, मारकंडेश्वर तिराहा होते हुए उरई रोड पर स्थित पंचमुखी हनुमान मंदिर के सामने कुशवाहा ट्रांसपोर्ट पर पहुंची जहां राष्ट्रीय कथा व्यास पं. प्रदीप मिश्रा कानपुर वाले ने कथा का शुभारंभ किया। पहले दिन की कथा में कथा श्रवण कराते हुए प्रदीप मिश्रा ने श्रद्धालुओं को शिव पुराण का महात्म्य बताया। आगामी 14 जनवरी को शिव बारात भ्रमण एवं प्राण प्रतिष्ठा, 15 जनवरी को हवन पूर्णाहुति और 16 जनवरी को भंडारे का आयोजन किया जाएगा। कलशयात्रा में परीक्षित रामप्रकाश कुशवाहा, शीला रानी, जिला पंचायत अध्यक्ष डॉ. घनश्याम अनुरागी, नगर पालिका अध्यक्ष प्रदीप गुप्ता, सभासद विक्रम ठाकुर, मनीष नगरिया, सुजीत पाठक, सौरभ कुशवाहा, अनूप कुशवाहा, अनिल वर्मा, निर्मल कुशवाहा, शीतला शरण कुशवाहा, शिव सिंह कुशवाहा, दीप सिंह कुशवाहा आदि मौजूद रहे।

स्लॉटर हाउस पुताई मामला

पालिका के किसी कर्मचारी की मिलीभगत होगी तो उस पर की जाएगी कठोर कार्रवाई- पालिकाध्यक्ष

■ कोंच

स्लॉटर हाउस की रंगाई पुताई का मामला शांत होने का नाम नही ले लहा है रंगाई पुताई मामले में पालिकाध्यक्ष भी पत्रकारो से रूबरू हुए उन्होंने स्पष्ट दो टूक शब्दो में कहा कि इस मामले में नगरपालिका से जुड़े किसी कर्मचारी की मिलीभगत सामने आती है तो उसके खिलाफ कठोर कार्यवाही की जाएगी।पालिकाध्यक्ष प्रदीप गुप्ता ने नगरपालिका कार्यालय में पत्रकारों से वार्ता के दौरान कही। पालिकाध्यक्ष से पत्रकारो ने पूंछा कि क्या ये संभव है कि बिना पालिका प्रशासन की जानकारी में लाए या किसी पालिका कर्मी की संलिप्तता के बगैर कोई स्लॉटर हाउस को पोतने और उस पर राज्य सरकार द्वारा स्लॉटर हाउस पशुवध शाला लिखवाने का काम कर सकता है, इस पर पालिकाध्यक्ष ने कहा कि एकांत इलाके में इस स्लॉटर हाउस की जर्जर बिल्डिंग खड़ी हुई है इसलिए वहां कौन क्या कर रहा है इसकी जानकारी उन्हें बिल्कुल नहीं हो सकी। उन्होंने खुद अखबारों में खबर पढ़ी तब प्रकरण मालूम हुआ। ईओ से कहकर उन्होंने अज्ञात लोगों के खिलाफ मुकदमा भी दर्ज कराया है और पुलिस पूरे मामले की गहराई

से छानबीन कर रही है। वह अपने स्तर से भी इसकी जांच करा रहे हैं, अगर इसमें पालिका के किसी कर्मचारी की संलिप्तता सामने आती है तो उसके विरुद्ध कठोरतम कार्यवाही की जाएगी। उन्होंने स्पष्ट कहा कि कोंच में किसी भी कीमत पर वह पशुवध नहीं होने देंगे। बैसे भी उक्त स्लॉटर हाउस की जमीन वह पार्क विकसित करने के लिए नगर विकास विभाग को दे चुके हैं।ज्ञात हो कि मीडिया में ये मामला सुर्खियों में आने के बाद पालिका ईओ पवन किशोर मौर्य ने अज्ञात के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया था। स्लॉटर हाउस रंगाई पुताई मामले में प्रभारी निरीक्षक अरुण कुमार राय जांच में जुटे हैं। उन्होंने बताया कि पुलिस कार्यवाही में अब तक 3 लोगों आजाद पुत्र नत्थू व उसका पुत्र शाहरुख एवं अफसर पुत्र अनवर निवासीगण आराजी लेन कोंच के नाम प्रकाश में आए हैं। नामों की यह सूची और भी लंबी हो सकती है।उन्होंने बताया कि पालिका को नोटिस भेज कर जानकारी की जा रही है कि स्लॉटर हाउस में पड़े तालों की चाभियों का जिक्र एफआईआर में क्यों नहीं किया गया है और तालों की चाभियां किसके पास हैं।इसकी भी गहनता से जांच पड़ताल की जा रही है।

कर्नाटक के श्री क्षेत्र धर्मस्थल में श्री सानिध्य क्यू कॉम्प्लेक्स के उद्घाटन समारोह में उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़।

राजनीतिक प्रतिस्पर्धा में किसानों का अहित नहीं हो: शिवराज

● नई दिल्ली,

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने दिल्ली की आम आदमी पार्टी सरकार से केंद्र सरकार की कृषि योजनाओं के लाभ स्थानीय किसानों को देने का आह्वान करते हुए कहा है कि राजनीतिक प्रतिस्पर्धा में किसानों का अहित नहीं होना चाहिए।

चौहान ने मंगलवार को यहां किसानों से संवाद के अपने नियमित कार्यक्रम में दिल्ली राज्य के किसान संगठनों, किसान प्रतिनिधियों और बड़ी संख्या में आए किसानों के साथ चर्चा में कहा कि दिल्ली की आप पार्टी सरकार को केंद्र सरकार की किसान कल्याण की योजनाएं लागू करनी चाहिए और किसानों को उनका लाभ देना चाहिए। उन्होंने कहा कि केंद्र की योजनाएं राज्य ही लागू करते हैं। दिल्ली में किसान हित में व्यवस्था परिवर्तन होना चाहिए। उन्होंने कहा कि बहन आतिशी,

राजनीतिक प्रतिस्पर्धा में किसानों का अहित न करो। चर्चा में किसानों ने चौहान को अनेक गंभीर समस्याएं बताई। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि उन्हें पहले भी दिल्ली के किसानों ने समस्याएं बताईं थी, जिस पर उन्होंने तुरंत ही दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी को पत्र लिखा था। सिंह ने कहा कि दिल्ली में ट्रैक्टर भी कमर्शियल माना जाता है, इससे रजिस्ट्रेशन का ज्यादा पैसा लगता है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार ने बागवानी विकास मिशन लागू की है, जिसमें किसानों को बीज-खाद, कृषि यंत्रों, पाली हाऊस, ग्रीन हाऊस आदि पर सब्सिडी मिलती है, लेकिन यह मिशन दिल्ली की राज्य सरकार ने लागू नहीं किया है।

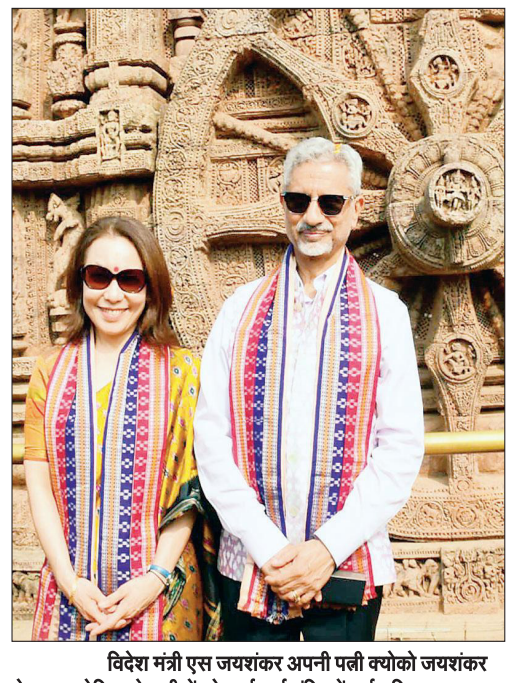

विदेश मंत्री एस जयशंकर अपनी पत्नी क्योको जयशंकर के साथ ओडिशा के पुरी में कोणार्क सूर्य मंदिर में दर्शन किए।

सार संक्षेप

46 वर्ष की हुई अभिनेत्री बिपाशा बसु

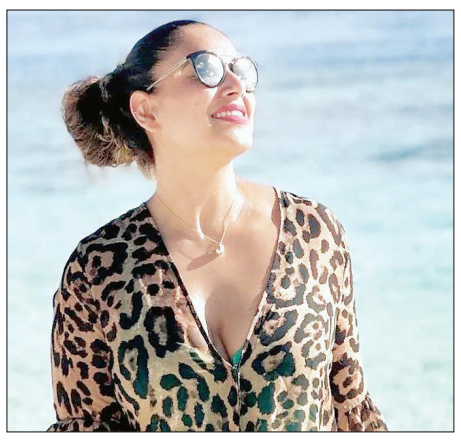

मुंबई: बॉलीवुड की जानीमानी अभिनेत्री बिपाशा बसु मंगलवार को 46 वर्ष की हो गयी। 07 जनवरी 1979 को दिल्ली में जन्मीं विपाशा बसु ने अपनी शुरुआती पढ़ाई कोलकाता से पूरी की है। उन्होंने अपने मॉडलिंग करियर की शुरुआत वर्ष 1996 में कोलकता से ही की थी। मॉडलिंग करियर के दौरान उनकी मुलाकात अर्जुन रामपाल की पत्नी और मॉडल मेहर जासिया से हुई। उन्होंने उन्हें गोदरेज सिंथोल सुपर मॉडल में भाग लेने को कहा और बिपासा बसु इस इसकी विजेता भी बनी। बॉलीवुड में विपाशा बसु ने अपने करियर की शुरूआत वर्ष 2001 में प्रदर्शित फिल्म अजनबी से की।इस फिल्म में विपाशा बसु के अपोजिट अक्षय कुमार थे। फिल्म में विपाशा का किरदार ग्रे शेड्स लिये हुए था। बावजूद इसके विपाशा ने अपने दमदार अभिनय से दर्शकों को रोमांचित कर दिया। इस फिल्म के लिये विपाशा को फिल्म फेयर की ओर से डेब्यू पुरस्कार भी दिया गया। वर्ष 2002 में विपाशा बसु को विक्रम भट्ट के निर्देशन में बनी फिल्म राज में काम करने का अवसर मिला। थ्रिलर से भरपूर राज भी दर्शकों को बेहद पसंद आयी साथ हीं विपाशा अपने दमदार अभिनय के लिये सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के फिल्मफेयर पुरस्कार के लिये नामांकित की गयी।

पुलिस ने की तस्कर की संपत्ति कुर्क

श्रीनगर: जम्मू कश्मीर के अनंतनाग जिले में मादक पदार्थों की तस्करी और उसके वित्तीय नेटवर्क के खिलाफ जारी कार्रवाई में पुलिस ने नार्को अधिनियम के तहत एक कथित नशा तस्कर के आवासीय घर को कुर्क किया है। पुलिस ने मंगलवार को बताया कि सतकीपोर निवासी खुर्शीद अहमद डार की एक कनाल जमीन पर बने दो मंजिला घर को स्वापक औषधि और मन प्रभावी पदार्थ (एनडीपीएस) अधिनियम के तहत जब्त कर लिया गया है, जिसकी कीमत लगभग एक करोड़ रुपये तक आंकी गयी है। उन्होंने बताया कि यह मकान मादक पदार्थों की तस्करी के लिए उपयोग मे लाया गया और इसे नार्को अधिनियम की धारा 68-एफ के तहत जब्त किया गया है। आरोपी को श्रीगुफवारा पुलिस थाने एफआईआर के तहत दर्ज मामले में गिरफ्तार किया गया है, जिसमें भारी मात्रा में प्रतिबंधित पदार्थों की बरामदगी शामिल है।

बजट में महंगाई कम करने की योजना बताएं पीएम मोदी : खड़गे

नई दिल्ली: कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा है कि महंगाई चरम पर है और इससे लोगों का जीवन कठिन हो गया है, इसलिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को बताना चाहिए कि बजट में जनता की बचत बढ़ाने के क्या प्रावधान किए जा रहे हैं। खड़गे ने लगातार बढ़ रही महंगाई को लेकर प्रधानमंत्री से सवाल किया और कहा कि नरेंद्र मोदी क्या बजट में जनता की बचत बढ़ाने का है कोई प्लान या कमरतोड़ महंगाई से जनता को करते रहेंगे परेशान। उन्होंने कहा कि पिछले 6 महीनों में रोज़मर्रा की चीज़ों में गगनचुंबी उछाल, जरूरी दवाइयां, तेल, चाय, कॉफ़ी, बिस्कुट, साबुन, आदि...सबकी क़ीमतों बनी जनता के जी का जंजाल। खड़गे ने कहा कि जीएसटी के बेसमझ रेट और टैक्स के बोझ से पिसता हर इंसान खपत गिरा, आर्थिक सुस्ती से चिंतित पूरा हिंदुस्तान। नौ-नौ 9 प्री-बजट कंसल्टेशन की कोई नहीं है अहमियत, जब 'महंगाई कैसे घटेगी' इस पर चर्चा की नहीं है आपकी नीयत। जनता को लूटकर अरबपति मित्रों को फायदा पहुंचाना है भाजपा का काम, आने वाले चुनावों में जागृत जनता भाजपा को सबक सिखाएगी, देगी ऐसा परिणाम।

तमिलनाडु के राज्यपाल आरएन रवि को बर्खास्त करे केंद्र : भाकपा

पटना: भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (भाकपा)के राज्य सचिव रामनरेश पाण्डेय ने केंद्र सरकार से तमिलनाडु के राज्यपाल आरएन रवि को बर्खास्त करने की मांग करते हुए आरोप लगाया है कि मोदी सरकार के कार्यकाल में राजभवन भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) कार्यालय के रूप में कार्य कर रहा है और संवैधानिक संस्थाओं को बर्बाद किया जा रहा है। पाण्डेय ने मंगलवार को कहा कि खासकर जिस राज्य में विपक्षी पार्टियों की सरकार है, वहां के राज्यपाल संवैधानिक मर्यादाओं को तार तार कर रहे हैं। नये साल के सत्र की शुरुआत में तमिलनाडु विधानसभा में राज्यपाल का दिया जाने वाला पारंपरिक संबोधन साल दर साल एक अप्रिय घटना में तब्दील होता जा रहा है।

चीन में भूकंप ने ली 126 की जान

188 घायल, नेपाल-भूटान समेत सिक्किम और उत्तराखंड में भी असर

● नई दिल्ली, एजेंसी

चीन के तिब्बत प्रांत में मंगलवार सुबह आए भूकंप से 126 लोगों की मौत हो गई, जबकि 188 घायल हो गए। चीन की सरकारी न्यूज एजेंसी शिन्हुआ के मुताबिक सुबह 9.05 बजे (भारतीय समयानुसार सुबह 6.30 बजे) आए इस भूकंप का केंद्र तिब्बत के शिजांग में जमीन से 10 किलोमीटर नीचे था।

भारत के नेशनल सेंटर फॉर सीस्मोलॉजी (एनसीएस) के मुताबिक रिक्टर स्केल पर इसकी तीव्रता 7.1 थी। भूकंप का असर नेपाल, भूटान सहित भारत के सिक्किम और उत्तराखंड में भी दिखा। फिलहाल भारत में इससे जानमाल के नुकसान की कोई खबर नहीं है। एनसीएस ने बताया कि पहले भूकंप के तुरंत बाद इस क्षेत्र में दो और भूकंप आए। लोकल अधिकारी लगातार हालात का जायजा ले रहे हैं, इस वजह से हताहतों की संख्या भी लगातार बढ़ रही है।रिपोर्ट के मुताबिक भूकंप के बाद बड़ी संख्या में लोग मलबे में फंस गए हैं। इन्हें रेस्क्यू किया जा रहा है। चीन की न्यूज एजेंसी के अनुसार चीन की स्टेट काउंसिल ने भूकंप प्रभावित इलाके में टास्क फोर्स भेजी है और लेवल-3 इमरजेंसी घोषित कर दी है। चीनी वायुसेना भी प्रभावित क्षेत्र में रेस्क्यू में जुटी है। भूकंप की वजह से इलाके का इन्फ्रास्ट्रक्चर बुरी तरह डैमेज हो गया है, जिससे यहां बिजली और पानी दोनों की सप्लाई

बाधित हो गई हैं। भूकंप के मद्देनजर चीन ने माउंट एवरेस्ट के टूरिस्ट क्षेत्रों को पर्यटकों के लिए बंद कर दिया है। लेवल-3 की इमरजेंसी तब डिक्लेयर की जाती है जब दुर्घटना इतनी बड़ी हो कि लोकल एडमिनिस्ट्रेशन और स्टेट की सरकार उससे नहीं निपट सकती। ऐसे हालात में केंद्र सरकार अपनी तरफ से तत्काल मदद भेजती है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक भूकंप के नुकसान का आकलन कर रहे हैं। भूकंप के झटके इतने तेज थे कि 400 किमी दूर नेपाल की राजधानी काठमांडू में भी इसका असर महसूस किया गया। मंगलवार का भूकंप पिछले 5 साल में 200 किलोमीटर के दायरे में दर्ज किया गया सबसे शक्तिशाली भूकंप था। इसका सेंटर उस जगह पर मौजूद है जहां भारत और यूरेशियाई टेक्टोनिक प्लेट्स टकराती हैं।

क्यों आता है भूकंप?

हमारी धरती की सतह मुख्य तौर पर 7 बड़ी और कई छोटी-छोटी टेक्टोनिक प्लेट्स से मिलकर बनी है। ये प्लेट्स लगातार तैरती रहती हैं और कई बार आपस में टकरा जाती हैं। टकराने से कई बार प्लेट्स के कोने मुड़ जाते हैं और ज?यादा दबाव पड़ने पर ये प्लेट्स टूटने लगती हैं। ऐसे में नीचे से निकली ऊर्जा बाहर की ओर निकलने का रास्ता खोजती है और इस डिस?टर्बेंस के बाद भूकंप आता है।

एचएमपीवी को लेकर झारखंड सरकार अलर्ट

स्वास्थ्य मंत्री अंसारी बोले हालात पर हमारी निगाह

● रांची, वार्ता

भारत के चार राज्यों में 'मन मेटान्यूमो वायरस (एचएमपीवी) के कन्फर्म केस मिलने के बाद झारखंड का स्वास्थ्य विभाग अलर्ट हो गया है।

स्वास्थ्य मंत्री डॉ इरफान अंसारी ने मंगलवार को कहा कि एचएमपीवी से जुड़ी तमाम सूचनाओं पर राज्य सरकार की निगाह है। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को संभावित स्थितियों का आकलन करते हुए तैयार रहने को कहा गया है। इस संबंध में हमें केंद्र सरकार की ओर से कोई गाइडलाइन्स नहीं मिली है। जैसे ही कोई गाइडलाइन आती है, हम उसी के अनुरूप आवश्यक कदम उठाएंगे। इस बीच राज्य के स्वास्थ्य सचिव अजय कुमार सिह ने राज्य के सभी जिलों के सिविल सर्जनों, मेडिकल कॉलेजों और विभाग के अधिकारियों को अलर्ट रहने को कहा है। विभाग ने इसे लेकर इंडियन काउंसिल मेडिकल रिसर्च (आईसीएमआर) के मानदंडों के अनुसार एडवाइजरी भी जारी की है। सभी हॉस्पिटल्स में एहतियाती तौर

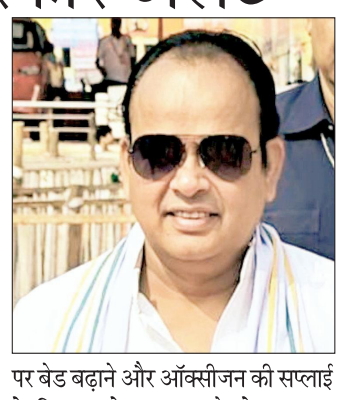

पर बेड बढ़ाने और ऑक्सीजन की सप्लाई के सिस्टम को दुरुस्त रखने को कहा गया है।इसमें कहा गया है कि यह वायरस नया नहीं है। सर्दी के दिनों में इस तरह के केस पहले भी आए हैं, पैनिक होने की जरूरत नहीं है। एडवाइजरी में भीड़ वाले इलाकों में मास्क का प्रयोग करने, सैनिटाइजर से समय-समय पर हाथों की सफाई करें, भीड़ वाले इलाकों में जाने से परहेज करने की सलाह दी गई है। रिम्स के माइक्रोबॉयोलॉजी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ मनोज कुमार ने तैयारियों का आकलन किया है। उन्होंने बताया कि फिलहाल यहां एचएमपीवी की जांच नहीं हो रही है, लेकिन एहतियातन जांच किट का ऑर्डर भी दे दिया गया है। एनआईवी पुणे को चिट्ठी लिखकर किट उपलब्ध कराने का आग्रह किया गया है।

बिहार में भी भूकंप के झटके

पटना: बिहार में पटना समेत कई जिलों में मंगलवार की सुबह भूकंप के झटके महसूस किए गए। आधिकारिक सूत्रों ने यहां बताया कि राजधानी पटना सहित कई जिलों में धरती हिली। सुबह- सुबह झटके लगने से लोग अचानक नींद से जग गए। सुबह करीब साढ़े छह बजे भूकंप के झटके लगे। बिहार में रिक्टर पैमाने पर भूकंप की तीव्रता 5.3 बताई जा रही है। इसका केंद्र नेपाल की सीमा के पास तिब्बत में रहा। हालांकि, तिब्बत में भूकंप की तीव्रता 7.1 मापी गई। पटना में भूकंप महसूस होने के बाद डर के मारे लोग अपने घर से बाहर निकल गए। सुबह-सुबह ठंड में सड़कों पर भीड़ जमा हो गई। आपदा प्रबंधन विभाग के अनुसार बिहार में अभी तक क्षति की सूचना नहीं है।

प्रशांत किशोर की तबीयत खराब

पटना: बिहार लोक सेवा आयोग (बीपीएससी) अभ्यर्थियों के समर्थन में आमरण अनशन पर बैठे जनसुराज के सूत्रधार प्रशांत किशोर की तबीयत सोमवार रात खराब हो गयी, जिसके बाद उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है। बीपीएससी 70वीं पीटी परीक्षा को रद्द करने की मांग को लेकर दो जनवरी से अनशन पर बैठे श्री किशोर को सोमवार को गिरफ्तार कर लिया गया था। इसके बाद दिन भर चले नाटकीय घटनाक्रम के बाद अदालत ने उन्हें कल शाम जमानत दे दी। अदालत से जमानत मिलने के बाद श्री किशोर ने प्रेसवार्ता में कहा था उनका अनशन जारी था, जारी है, और जारी रहेगा। किशोर के अनशन का छठवां दिन है। किशोर की तबीयत सोमवार की देर रात बिगड़ गई। इसके बाद उन्हें पटना के मेदांता अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

अमेरिका में बर्ड फ्लू से एक व्यक्ति की मौत

लॉस एंजिल्स: अमेरिक के लुइसियाना प्रांत में बर्ड फ्लू (एच5एन1) से एक मरीज की मौत हो गयी। अधिकारियों ने सोमवार को बताया कि इस बीमारी से प्रांत में इस साल यह पहली मौत है। लुइसियाना के स्वास्थ्य विभाग ने प्रेस विज्ञप्ति में कहा है कि मरीज को अत्यधिक रोगजनक एवियन इंफ्लूएंजा से ग्रसित होने के कारण अस्पताल में भर्ती कराया गया था। प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार इस साल राज्य में इस संक्रमण से किसी मानव के ग्रसित होने का यह पहला मामला है। विभाग ने कहा कि मरीज की आयु 65 वर्ष से अधिक थी और उसे पहले से ही कई अन्य बीमारियां थीं। विभाग ने कहा कि मरीज को गैर-व्यापारिक बैकयार्ड झुंड और जंगली पक्षियों के संपर्क में आने के बाद एच5एन1 संक्रमण हुआ।

उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने नई दिल्ली में केंद्रीय पेट्रोलियम मंत्री हरदीप पुरी से मुलाकात की.

देश में नए युग की शुरुआत: अमित शाह

केंद्रीय गृह मंत्री ने 'भारतपोल' पोर्टल का किया शुभारंभ

● नई दिल्ली,

केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा है कि 'भारतपोल' पोर्टल से अंतर्राष्ट्रीय जांच के मामले में भारत में एक नए युग की शुरूआत हो रही है और यह पोर्टल तथा तीनों नये आपराधिक कानून विदेश भागने वाले अपराधियों को पकड़ने का मजबूत माध्यम बनेंगे।

शाह ने मंगलवार को यहां केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) द्वारा विकसित भारतपोल पोर्टल का शुभारंभ किया। उन्होंने सीबीआई के 35 पुरस्कार विजेता

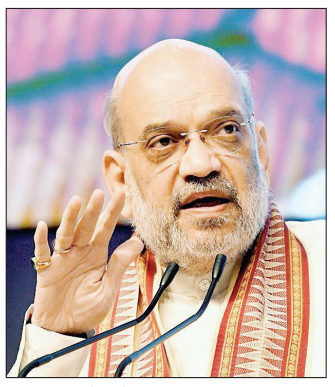

अधिकारियों को पुलिस पदक भी प्रदान किए, जिन्हें विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति पुलिस पदक और जांच में उत्कृष्टता के लिए केन्द्रीय गृह मंत्री पदक से सम्मानित किया गया है। इस अवसर पर केन्द्रीय गृह सचिव और सीबीआई निदेशक सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। केन्द्रीय गृह मंत्री ने कहा कि इस पोर्टल की शुरूआत के साथ अंतर्राष्ट्रीय जांच के मामले में भारत एक नए युग में प्रवेश कर रहा है। उन्होंने कहा कि भारतपोल के माध्यम से भारत की हर एजेंसी और पुलिस बली बहुत सरलता के साथ इंटरपोल के साथ समन्व्य कर जांच को गति दे सकेगी। शाह ने कहा कि सरकार की नीतियों से 'साइंटिफिक रोडमैप' और समयबद्ध कार्यक्रम के तहत 'रीजनल लीडर' से 'ग्लोबल लीडर' बनने की भारत की यात्रा को आकार मिला है और इस रास्ते पर हम आगे भी बढ़े हैं। उन्होंने कहा कि इस दिशा में आगे बढ़ते और वैश्विक चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए हमें अपनी व्यवस्थाओं को अपग्रेड करना होगा और भारतपोल इसी दिशा में एक कदम है।

दिल्ली में नौवां सीएम चुनने के लिए बिछी बिसात

किसी भी राजनीतिक दल ने मुख्यमंत्री पद के लिए अपने चेहरे की घोषणा नहीं की

● नई दिल्ली, वार्ता

दिल्ली विधानसभा के चुनाव पांच फरवरी को कराने की घोषणा के साथ ही अंतर्राष्ट्रीय पहचान रखने वाली ऐतिहासिक राष्ट्रीय राजधानी का नौवां मुख्यमंत्री चुनने के लिए मंगलवार को बिसात बिछ गयी।

निर्वाचन आयोग ने ि्ल्ली विधानसभा चुनाव - 2025 कराने की सारी तैयारियां पूरी कर ली हैं। ि्ल्ली विधानसभा में कुल 70 सीटें है। पिछला विधानसभा चुनाव फरवरी 2020 को हुआ था जिसमें आम आदमी पार्टी (आप) को भारी सफलता मिली थी। दिल्ली में अभी तक किसी भी राजनीतिक दल ने मुख्यमंत्री पद के लिए अपने चेहरे की घोषणा नहीं की है। हालांकि आम आदमी पार्टी, भाजपा और कांग्रेस के बीच त्रिकोणीय मुकाबला है। बहुजन समाज पार्टी ने भी सभी 70 सीटों पर उम्मीदवार उतारने की घोषणा की है। पांच फरवरी को दिल्ली के लगभग एक करोड़ 55 लाख मतदाता 13 हजार से अधिक मतदान केंद्रों पर उम्मीदवारों और नौवें मुख्यमंत्री के लिए मतदान करेंगे। दिल्ली में अभी तक अलग-अलग राजनीतिक दलों के आठ नेता मुख्यमंत्री के पद पर आसीन रहे हैं। दिल्ली विधानसभा की नांगलोई सीट के विधायक चौधरी ब्रहमप्रकाश 17 मार्च 1952 से 12 फरवरी 1955 तक दिल्ली के मुख्यमंत्री रहे। दरियागंज विधानसभा सीट के विधायक गुरूमुख निहाल सिंह 12 फरवरी 1955 से एक नवंबर 1956 तक मुख्यमंत्री बने। मोतीनगर सीट के विधायक मदन लाल खुराना दो दिसंबर 1993 से 26 जनवरी 1996 तक मुख्यमंत्री रहे। शालीमार विधानसभा के विधायक साहिब सिंह वर्मा 26 फरवरी 1996 से 12 अक्टूबर 1998 तक मुख्यमंत्री रहे।

भाजपा की तेज तर्रार नेता श्रीमती सुषमा स्वराज 12 अक्टूबर 1998 से लेकर 03 दिसंबर 1998 तक दिल्ली की मुख्यमंत्री रही। कांग्रेस की वरिष्ठ नेता तथा दिल्ली विधानसभा की नई दिल्ली विधानसभा सीट से विधायक रहने वाली श्रीमती शीला दीक्षित लगातार 15 साल 25 दिन तक मुख्यमंत्री रही थीं। श्रीमती दीक्षित 03 दिसंबर 1998 से लेकर 28 दिसंबर 2013 तक मुख्यमंत्री रही थीं। नई दिल्ली विधानसभा सीट से विधायक बनने वाले अरविंद केजरीवाल 28 दिसंबर 2013 से 21 सितंबर 2024 तक दिल्ली के मुख्यमंत्री रहे हैं। कालकाजी विधानसभा सीट से विधायक सुश्री आतिशी मार्लेना 21 सितंबर 2024 को दिल्ली की मुख्यमंत्री है।

दिल्ली के उपराज्यपाल वी.के. सक्सेना ने नई दिल्ली में सूफी संत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती के उर्स के लिए अजमेर शरीफ दरगाह पर एक 'चादर' भेजी।

संपादकीय

सवालों के जवाब

मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार ने दिल्ली में विधानसभा चुनाव के लिए तारीखों का ऐलान करने के साथ ही उन सवालों का भी जवाब दिया, जो उनसे किए जाते रहे हैं। जवाब के बीच सवाल है कि उन्होंने उस वक्त ही जवाब क्यों नहीं दिए, जब सवाल किए जा रहे थे? भारत के मुख्य चुनाव आयुक्त ने पांच बजे के बाद वोटर टर्नआउट बढ़ने, बैट्री का मुद्दा, बूथ पर वोटर की संख्या के मिसमैच और काउंटिंग के मिसमैच पर उठने वाले सवालों का एक साथ जवाब दिया। जवाब कितने सही हैं, कितने गलत हैं, यह जांचने का कोई तरीका किसी के पास नहीं है। उन्होंने एकतरफा जवाब दिए और एक शेर कह कर बात खत्म कर दी। उन्होंने कहा- *आरोप और इल्जामात का दौर चले, कोई गिला नहीं, झूठ के गुब्बारों को बुलंदी मिलें, कोई शिकवा नहीं, हर परिणाम में प्रमाण देते है, पर वो बिना सबूत शक की नई दुनिया रौनक करते हैं और शक का इलाज तो हकीम लुकमान के पास भी नहीं!* यानी उन्होंने यह कह कर बात खत्म कर दी हर सवाल सिर्फ वहम हैं और कुछ नहीं। चुनाव आयुक्त के पास इस वहम को खत्म करने का एक तरीका है-वह किसी राज्य का चुनाव एक बार बैलेट पेपर पर करा लें। उससे सभी का वहम खत्म जाएगा। लेकिन सरकार उन्हें ऐसा नहीं करने देगी और वह खुद भी नहीं करना चाहेंगे। चुनाव आयुक्त ने इस सवाल का जवाब नहीं दिया कि दुनिया के सभी विकसित देश क्यों ईवीएम के बजाए बैलेट पेपर पर चुनाव कराते हैं? क्यों कुछ देशों ने अपने यहां ईवीएम से चुनाव कराने बंद कर दिए। इन देशों में जर्मनी जैसा विकसित देश भी शामिल है। अगर ईवीएम से चुनाव कराना एक दम सटीक होता है, जैसा राजीव कुमार कह रहे हैं, तो दुनिया भर के देश क्यों ईवीएम से चुनाव नहीं कराते? क्या ये देश तकनीक के मामले में पिछड़े हैं? चुनाव आयुक्त ने इस सवाल का जवाब भी नहीं दिया कि चुनाव की तारीखों का ऐलान करने बाद क्यों चुनाव की तारीख बदली जाती है? क्या चुनाव आयोग पूरी तरह जांच परख के चुनाव की तैयारियां नहीं करता? चुनाव आयुक्त ने फिर वही बात दोहरा दी कि ईवीएम हैक नहीं हो सकती, इसमें अविश्वसनीयता या किसी कमी का कोई प्रमाण नहीं, ईवीएम में वायरस या बग डालने का कोई सवाल नहीं, ईवीएम में अवैध वोट का कोई सवाल नहीं, धांधली संभव नहीं, ट्रोजन हॉर्स एक्टिवेट कर परिणाम बदलने का कोई सवाल नहीं। फिर हमारा सवाल है-अगर ईवीएम प्रणाली इतनी ही अच्छी है तो पूरी दुनिया इसे क्यों नहीं अपना रही?

चुनाव आयुक्त ने इस सवाल का जवाब नहीं दिया कि दुनिया के विकसित देश क्यों ईवीएम के बजाए बैलेट से चुनाव कराते हैं? क्यों ईवीएम से चुनाव कराने बंद कर दिए?

पाठकवाणी

आर्थिक अस्थिरता के गंभीर प्रभाव

आर्थिक अस्थिरता और ग्राहकों की व्यय घटाने की प्रवृत्ति ने आईटी क्षेत्र की प्रमुख कंपनियों को वेतन वृद्धि टालने पर विवश कर दिया है। इनफोसिस और एलटीआई माइंडट्री जैसे प्रतिष्ठानों का यह कदम वित्तीय संतुलन बनाए रखने का प्रयास है, किंतु इसका दीर्घकालिक प्रभाव गंभीर हो सकता है। कर्मचारियों के मनोबल पर आघात होने से उनकी सृजनात्मकता और कार्यक्षमता में कमी आ सकती है। साथ ही, छंटनी और कार्यदिवसों में कटौती जैसे कदम श्रम शक्ति के प्रति असुरक्षा उत्पन्न कर सकते हैं। आवश्यकता है कि कंपनियां वित्तीय स्थिरता के साथ मानवीय पक्ष को ध्यान में रखकर संतुलित निर्णय लें, जिससे समग्र विकास संभव हो सके।

-प्रो. आरके जैन 'अरिजीत', बड़वानी (मप्र)

जानलेवा हुआ चीनी मांझा

सरकार के लाख कड़ी कार्रवाई के दावों के बावजूद बाजार में चीनी मांझा धड़ल्ले से बिक रहा है। पतंगों को उड़ाने में जिस चीनी धागे का उपयोग हो रहा है, वह जानलेवा है। इससे होने वाली घटनाओं की खबरें आए दिन सुर्खियां बनती हैं। वाहनों से चलने वाले लोग चीनी मांझे में उलझ कर दुर्घटना के शिकार हो जाते हैं। चीनी मांझा बेचने वालों को कड़ी सजा के साथ बड़ा आर्थिक दंड लगाया जाना चाहिए।

-अमित मणि मारू, इंदौर

कुछ खास

जब आम आदमी पार्टी और कांग्रेस जो इंडिया गठबंधन के सदस्य हैं, लड़ रहे हैं तो हम अपनी ऊर्जा क्यों बर्बाद करें? दोनों में अखाड़ा चल रहा है, यह ठीक नहीं है। लगता है दोनों मिलकर भाजपा की मदद करने वाले हैं। हमारी लड़ाई भाजपा से होनी चाहिए।

-संजय राउत, शिवसेना (यूबीटी) सांसद

आज का ट्वीट

''जिनका (भाजपा) दिल्ली का कार्यालय 700 करोड़ का हो और जिन्होंने बाइडेन की पत्नी को करीब 18 लाख रुपये का हीरा दिया, वे कुछ भी बोलने वाले कौन होते हैं?''

-रीना गुप्ता

साइबरवर्ल्ड

राजनीति के लिए धर्म का इस्तेमाल

किसी भी देश का बौद्धिक स्तर वहां की राजनीतिक व्यवस्था को देखकर लगाया जा सकता है। इस हिसाब से मैं अपने देश का बौद्धिक स्तर लगातार गर्त में जाते हुए देख रही हूं। कम से कम मैं खुद से ही अंदाजा लगा सकती हूं कि मैं जिस शांत वातावरण और आजाद परिवेश में पली बढ़ी हूं वो मेरे बच्चों को नही मिला। हमें धर्म में राजनीति और राजनीति में धर्म के कॉकटेल के बारे में नही पता था। आज के समय को देखते हुए ये तो समझ आता ही है कि धर्म और जाति जैसे ही राजनीति के साथ जुड़ती है वो संकुचित हो जाती है क्योंकि जाति से जुड़कर हम बाकियों से कट जाएंगे दुनियाभर में बिरादरी ढूंढेगे तब भी दुनिया का एक बहुत छोटा सा अंश ही होंगे। इतनी बड़ी दुनिया में हम किसी एक छोटी सी जगह पर कैसे सीमित होकर रह सकते हैं? इस तरह के संकुचित जीवन में क्या हम लोगों को खुश रहने की गारंटी दे सकते हैं या कोई अच्छी राजनीतिक व्यवस्था? कोई राजनीतिक व्यवस्था ऐसी नहीं है, जिसने नागरिक को मनुष्य मान कर अपनी कार्यप्रणाली बनाई हो। धर्म के नाम पर राजनीति करने वाले प्रतिनिधि लोगों को बस धोखा दे रहे हैं। क्योंकि इस समाज में शुरू से ही जीवन की कल्पना को धर्म और जाति के संदर्भों से छोटा कर दिया जाता है इसलिए पीछे छूटने के काल्पनिक भय से पीड़ित होकर लोग इस गंदी मनुष्य विरोधी राजनीति में साथ साथ देने लगते हैं। अगर राजनीतिक फैसले पक्षपात से लिए जाते हैं तो हमेशा सरकारें अपना पक्ष ही चुनती रहेंगी कभी आप सुरक्षित महसूस करेंगे तो कभी असुरक्षित। दुनिया के साथ हमारी इनफार्मेशन एंड टेक्नोलॉजी का भी विस्तार हुआ पर हमने इसका उपयोग कैसे किया? सोशल साइटों का उपयोग तो हमने आतंक और नफरत फैला कर लोगों में भय ही पैदा करने के लिए ही किया है। हमारे समाज में धर्म को लेकर लोग बातें कितनी भी करें पर सच यही है कि लोग सही से धर्म का मतलब भी नही जानते। ज्यादातर लोगों का ज्ञान कुछ धर्म ग्रन्थों से निकला है जो कि उनके ही जैसे किसी इंसान ने ही तो लिखा है। सच तो ये है कि धर्म का अर्थ बहुत ही व्यापक है। राजनीति के लिए धर्म की जरूरत ही नहीं है।

-**रश्मि त्रिपाठी** की फेसबुक वॉल से

सामयिक

भारत के पड़ोस में चीनी घुसपैठ

शाहीन सबा

भारत के पड़ोसी देशों की अशांत स्थिति चिंताजनक है। ऐसे में सतर्क कूटनीति, आधुनिकतम रक्षा तैयारियां और व्यापार तथा अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करके ही अपनी स्थिति मजबूत की जा सकती है। इस सम्बन्ध से कूटनीतिक फायदे लिये जा सकते हैं। अमेरिका का सार्थक हस्तक्षेप पाकिस्तान, अफगानिस्तान व बांग्लादेश में स्थितियां बदल सकता है।

वैश्विक आंकलन करने वाली संस्थाओं के अनुसार भारत आज विश्व की पांचवीं आर्थिक महाशक्ति है। अनुमान यह भी लगाया जा रहा है कि शीघ्र ही यह जापान को पछाड़ कर चौथी महाशक्ति और तीन साल के भीतर संभवतः जर्मनी को भी पछाड़ कर तीसरी आर्थिक महाशक्ति बन सकता है। दुनिया भारत की इस आर्थिक छलांग को कौतूहल भरी नजरों से परख रही है। इस आर्थिक उपलब्धि से कई तरह के वैश्विक स्तर की सुविधाएं और सहूलियतें भी देश को मिल रही हैं। भारतीय उपमहाद्वीप के देशों में भारत ने जिस तरह की राजनीतिक स्थिरता और आर्थिक मजबूती दिखाई है, उसके अपने निहितार्थ हैं।

लेकिन विकास को भी अपनी कीमत चुकानी पड़ती है। भारत के पड़ोसी देशों में राजनीतिक उथल-पुथल के फलस्वरुप अस्थिरता है और ऐसे में ये देश भारत को भी हर तरह से अस्थिर करने की कोशिशों में लगे रहते हैं। इस कड़ी में सबसे ताजा मामला बांग्लादेश का है। हालिया तख्तापलट के बाद से वहां पाकिस्तान के प्रभाव वाले कट्टरपंथियों का तेजी से उभार है और वे न सिर्फ भारत पर निर्वासित पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना को सौंपने का मूर्खतापूर्ण दबाव बना रहे हैं, बल्कि मानो इस मांग का दबाव बढ़ाने के लिए वे वहां के अल्पसंख्यक हिंदुओं का बहुविधि उत्पीड़न भी कर रहे हैं। दशकों से चला आ रहा भारत-बांग्लादेश का व्यापार भी गिरावट पर है। बांग्लादेश के जन्म से लेकर आज तक दुश्मन राष्ट्र के तौर पर घोषित पाकिस्तान का अब वहां खुला दखल हो गया है।

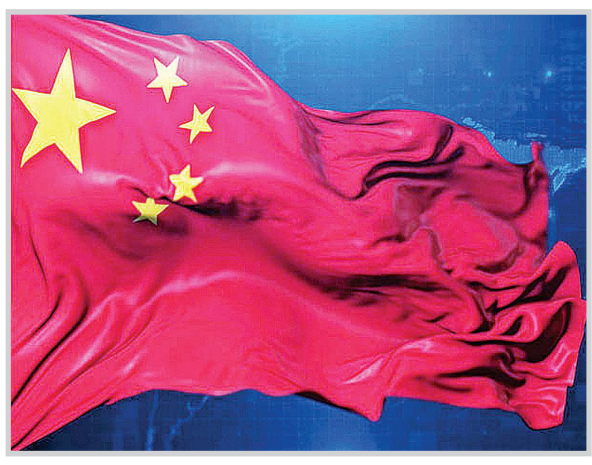

दूसरा पड़ोसी पाकिस्तान है जो आज की तारीख में एक 'फेल्ड नेशन' कहा जा रहा है और जिसकी 3323 किमी लम्बी सीमा भारत से लगती है। कर्ज के दलदल में आकंठ डूबा पाकिस्तान आज न सिर्फ हाहाकारी महंगाई बल्कि चौपट हो चुकी अर्थ व्यवस्था में फंस चुका है। पाकिस्तान पर मई 2024 तक लगभग 680 खरब पाकिस्तानी रुपये या 244 अरब डॉलर का बाहरी कर्ज बताया जाता है। इसके अलावा वर्ष 2013 से चीन ने पाकिस्तान को अपने शिकंजे में लेना शुरू किया जब उसने अरब सागर में सामरिक महत्त्व वाले पाकिस्तान के ग्वादर बंदरगाह का अधिग्रहण कर लिया। दक्षिण एशिया में चीन की अति महत्त्वाकांक्षी योजना वन बेल्ट, वन रोड के तहत पाकिस्तान इकोनॉकिक कॉरीडोर या संक्षेप में सीपीईसी एक उपक्रम है जिसमें चीन वहां ढांचागत, ऊर्जा तथा औद्योगिक क्षेत्रों का विकास करेगा और अब तक लगभग 65 बिलियन डॉलर से अधिक का निवेश कर चुका है।

ध्यान रखने की बात है कि पाकिस्तान को मदद करने के नाम पर चीन ने जो पैसा वहां लगाया है, उसका 98 प्रतिशत से अधिक कर्ज के रूप में है! अभी सितम्बर 2024 में आईएमएफ से पाकिस्तान को 07 बिलियन डॉलर के बेलआउट कर्ज को दिलवाने में भी चीन का ही हाथ था अन्यथा आईएमएफ ने तो इनकार ही कर दिया था। चौपट अर्थव्यवस्था के साथ ही साथ पाकिस्तान में विकट राजनीतिक रस्साकशी है और वहां घरेलू आतंकवाद की नर्सरी भी फल-फूल रही है और आम लोगों के अलावा वहां काम कर रहे चाइनीज अधिकारी व कर्मचारी भी निशाना बनाये जा रहे हैं। रही सही कसर इधर अफगानिस्तान के तालिबानियों ने हमला कर पूरी कर दी है।

आजादी से पूर्व भारत का ही हिस्सा रहे और अब पृथक राष्ट्र बांग्लादेश के राजनीतिक हालात भारत के लिये चिन्ता का कारण बनते जा रहे हैं। अगस्त 2024 में वहां हुए तख्तापलट के बाद वजूद में आया वहां का निजाम पाकिस्तान की राह पर चल निकला है और खुलकर भारत का विरोध कर रहा है। दशकों से परस्पर सहयोग, व्यापार और सुरक्षा को लेकर जो द्विपक्षीय सम्बन्ध भारत बांग्लादेश के बने थे वे अब समाप्तप्राय हैं। सबसे बड़ी चिंता सीमा को लेकर है। भारत के पश्चिम बंगाल, असम, त्रिपुरा, मिजोरम और मेघालय राज्यों की लगभग 4097 किमी लंबी सीमा बांग्लादेश से लगी है और यह बहुत सी जगहों पर सुरक्षित भी नहीं है। शेख हसीना के सत्ता में रहने तक भारत के लिए सीमायें ज्यादा चिन्ता की बात नहीं थीं लेकिन उनके अपदस्थ होने के बाद अब यह चिन्ता का विषय है। जिस पाकिस्तान द्वारा किए गए नरसंहार व उत्पीड़न के विरोध में भारत की सैन्य मदद से बॉग्लादेश का जन्म हुआ था, उसी पाकिस्तान से अब वर्तमान बांग्लादेश ने व्यापार और राजनीतिक मेल मिलाप शुरू कर दिया है और अब वहां चीन का सीधा दखल भी हो गया है। बांग्लादेश में अगर राजनीतिक परिस्थितियां न बदलीं तो चीन की धमक भारत के इस बार्डर पर भी सुनाई पड़ने लगेगी।

तीसरे पड़ोसी चीन की 3488 किमी लम्बी सीमा भारत से लगती है। चीन सिर्फ पड़ोसी होने के कारण ही नहीं कई अन्य प्रकार से भी भारत के लिए चैलेन्ज रहा है। चीन से भारत का पुराना सीमा विवाद चला आ रहा है और भारत की आर्थिक और तकनीकी प्रगति से वह चिढ़ता है। यही कारण है कि भारत के सभी पड़ोसी देशों यथा नेपाल, बांग्लादेश, श्रीलंका और पाकिस्तान में वह आर्थिक और राजनीतिक दखल देकर भारत को घेरना चाहता है। चिंता की बात है कि वह इसमें सफल होता भी दिख रहा है। भारत का एक और पड़ोसी नेपाल है जहां पिछले कुछ वर्षों से चीन रणनीतिक रुप से दखल दे रहा है। नेपाल के नये प्रधानमन्त्री केपी शर्मा ओली के पदस्थ होने के बाद से उनकी चीन से नजदीकियां और बढ़ी है तथा भारत का नेपाल पर पारम्परिक प्रभाव घटता दिख रहा है। नेपाल और भारत की 1850 किमी लम्बी सीमा है और दोनों देशों के बीच मुक्त आवागमन है। नेपाली अभी भी शिक्षा, चिकित्सा और रोजगार के लिये भारत को सुलभ मानते हैं।

यही हाल श्रीलंका का भी है। लगभग 400 किमी लम्बी सीमा वाले श्रीलंका में वर्ष 2022 में हुए राजनीतिक प्रदर्शन और तख्तापलट के बाद यद्यपि अभी राजनीतिक स्थिरता है लेकिन आर्थिक रुप से कमजोर श्रीलंका को भी चीन अपनी गिरफ्त में धीरे-धीरे ले रहा है। हिन्द महासागर में श्रीलंका की महत्त्वपूर्ण भौगोलिक व सामरिक स्थिति को देखते हुए चीन ने वहां के हम्बनटोटा बन्दरगाह तथा कोलम्बो पोर्ट सिटी को एक तरह से अधिगृहीत ही कर लिया है। आरोप तो यह भी है श्रीलंका में वर्ष 2015 में हुए चुनाव में चीन ने तत्कालीन राष्ट्रपति महिन्द्रा राजपक्षे के पक्ष में अप्रत्यक्ष तौर पर बहुत धन खर्च किया था।

भारत के पड़ोसी देशों की अशांत स्थिति चिन्ताजनक है। ऐसे में निश्चित तौर पर सतर्क कूटनीति, आधुनिकतम रक्षा तैयारियां और व्यापार तथा अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करके ही अपनी स्थिति मजबूत की जा सकती है। अमेरिका में इसी माह नेतृत्व परिवर्तन होने जा रहा है। नये राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प से प्रधानमन्त्री मोदी के सम्बन्ध पहले से ही अच्छे रहे हैं। इस सम्बन्ध से कूटनीतिक फायदे लिये जा सकते हैं। अमेरिका का सार्थक हस्तक्षेप पाकिस्तान, अफगानिस्तान व बांग्लादेश में स्थितियां बदल सकता है।

अमृतवाणी

कथनी करनी

एक पंडितजी महाराज क्रोध न करने पर उपदेश दे रहे थे। कह रहे थे, क्रोध आदमी का सबसे बड़ा दुश्मन है, उससे आदमी की बुद्धि नष्ट हो जाती है। जिस आदमी में बुद्धि नहीं रहती, वह पशु बन जाता है। लोग बड़ी श्रद्धा से पंडितजी का उपदेश सुन रहे थे। पंडितजी ने कहा, क्रोध चांडाल होता है। उससे हमेशा बचकर रहो। भीड़ में एक ओर एक जमादार बैठा था, जिसे पंडितजी प्रायः सड़क पर झाड़ू लगाते हुए देखा करते थे। जमादार उनकी बात से बहुत प्रभावित हुआ। वह सोचने लगा कि अब रोज पंडितजी का प्रवचन सुनने आया करेगा। अपना उपदेश समाप्त करके जब पंडितजी जाने लगे तो जमादार भी हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। लोगों की भक्ति-भावना से फूले हुए पंडित भीड़ के बीच में से आगे आ रहे थे। इतने में पीछे से भीड़ का रेला आया और पंडितजी गिरते-गिरते बचे! धक्के में वे जमादार से छू गए। फिर क्या था। उनका पारा चढ़ गया। बोले, दुष्ट! तू यहां कहां से आ मरा? मैं भोजन करने जा रहा था। तूने छूकर मुझे गंदा कर दिया। अब मुझे स्नान करना पड़ेगा। उन्होंने जमादार को जी भरकर गालियां दीं। असल में उनको बड़े जोर की भूख लगी थी और वे जल्दी-से-जल्दी यजमान के घर पहुंच जाना चाहते थे। पास ही में गंगा नदी थी लाचार होकर पंडितजी उस ओर तेजी से लपके। तभी देखते हैं कि जमादार उनसे आगे-आगे चला जा रहा है। पंडितजी ने कड़ककर पूछा, क्यों रे जमादार के बच्चे! तू कहां जा रहा है? जमादार ने जवाब दिया, नदी में नहाने। अभी आपने कहा था न कि क्रोध चांडाल होता है। मैं उसे चांडाल को छू गया इसलिए मुझे नहाना पड़ेगा। पंडितजी को जैसे काठ मार गया। वे आगे एक भी शब्द न कह सके और जमादार का मुंह ताकते रह गए।

तीखी नजर

गालों जैसी सड़कें और गला बजाई

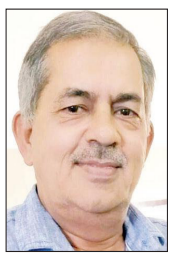

सुधाकर आशावादी

नारी सौंदर्य में चेहरे और शरीर की बनावट की प्रमुख भूमिका रहती है। सौंदर्य अनुभूति का विषय है। न जाने किसे सौंदर्य के किस प्रकार दर्शन हों। फिर भी शारीरिक संरचना के आधार पर सौंदर्य आकर्षक होता ही है। सिनेमा देखकर सिनेमा हाल से बाहर निकलते दर्शक कई बार अभिनेत्री की छवि को मन में बसा लेते हैं, किन्तु उस छवि के आधार पर सौंदर्य का अपमान करने का ख्याल किसी के मन मस्तिष्क में नहीं आता। सियासत में सब चलता है। शब्दों की मर्यादा का ख्याल विरले ही करते हैं। एक आदमी में होते हैं दस बीस आदमी, जानना हो किसी को तो बार बार देखिए। यह कहावत यूं ही नहीं बनी, एक ही चेहरा अनेक मुखौटे पहनता है, तो उसकी असलियत समझने के लिए अनेक कोणों से देखना जरूरी होता है।

एक अरसा हुआ, जब मानव जाति को किसी ने हरिजन की संज्ञा दी। हरि से आशय परम पिता परमात्मा से ही रहा होगा, किन्तु किसी को यह बुरा लगा, उसने कहा कि मानव को हरिजन कहने वाला क्या शैतान की संतान है ? चर्चा हुई, रातों रात हरिजन शब्द और शैतान की संतान में बहस छिड़ गई, जिसे कोई नहीं जानता था, वह शैतान की संतान वाले वक्तव्य से प्रख्यात हो गया। उसके बाद दौर चला कि शब्दों की मसखरी से किस प्रकार जनमानस में स्थान बनाया जाए, तो राजनीति के विदूषक ने कह दिया कि यदि मैं सत्ता में आया तो अपने प्रदेश की सड़कें प्रख्यात अभिनेत्री के गालों की तरह चिकनी बना दूंगा। न जाने किस आवेग में कोई कुछ कहता है। जब तक वह खेद व्यक्त करने की स्थिति में आता है, तब तक उसके शब्दों की कड़ी निंदा हो चुकी होती है तथा उसका वक्तव्य इतिहास में अंकित हो चुका होता है।

जहां तक किसी भी अभिनेत्री या सेलिब्रिटी के गालों की तुलना सड़क निर्माण की गुणवत्ता से करने का प्रश्न है, तो समझ नहीं आता, कि क्या ऐसे लोग गालों के सौंदर्य या गालों की गुणवत्ता से परिचित होते हैं, जो गालों को लेकर गाल बजाई करते हैं। सामान्य नजर से गालों का महिमामंडन गुलाबी गाल, गोरे गाल, चिकने गाल, मोटे गाल के रूप में किया जाता है, गालों को कोई काले गाल, खुरदुरे गाल, कुरूप गाल के रूप में परिभाषित नहीं करता। अब गालों जैसी सड़कें बनाने की बात करने वाले कौन से गालों जैसी सड़क बनाने का आश्वासन देते हैं, यह समझना मुश्किल है, कि गोरी और चिकनी सड़क बनाने की बात की जा रही है या काली खुरदुरी सड़क बनाने की बात।

एक सवाल यह भी है कि गालों जैसी सड़क बनाने के नाम पर गाल बजाई करने वालों को खास किरदारों के गाल ही क्यों दिखाई देते हैं? अपने गाल, अपनी श्रीमती जी के गाल, अपने परिवार से जुड़े आकर्षक गाल उन्हें उदाहरण देने योग्य प्रतीत क्यों नहीं होते? बहरहाल जो भी हो, मगर गालों जैसी सड़कों की बात वही कर सकता है, जिसका गालों के प्रति विशेष आकर्षण हो, अन्यथा किसे पड़ी है, जो सड़कों की तुलना गालों से करता फिरे?

नजरिया

छात्रों के मुद्दे पर नीतीश-भाजपा चुप क्यों?

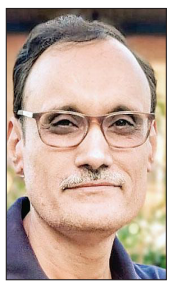

केपी मलिक

जहां भी भाजपा या एनडीए की सरकार होती है, वहां पेपर लीक की घटनाएं क्यों होती हैं? हालांकि ये कोई पहली बार नहीं है, जब बिहार में पेपर लीक की घटना हो रही है और न ही पहली बार है कि छात्रों पर लाठीचार्ज हो रहा है। बिहार तो नकल करने के लिए भी बदनाम रहा है।

बिहार में जिस प्रकार से एक बार फिर पिछले करीब एक हफ्ते से छात्रों पर लाठियां भांजी जा रही हैं और जिस प्रकार से कड़कड़ाती सर्दी में उन पर ठीक वैसे ही ठंडे पानी की चोट करने वाली वाटर कैनन से बौछार की जा रही है, जिस प्रकार से किसानों पर उनके द्वारा किए जा रहे आंदोलन के दौरान बार-बार की गई थी। मुझे समझ नहीं आ रहा है कि एक तो सरकारें छात्रों को और उन्हें जिनकी पढ़ाई पूरी हो चुकी है, उन्हें नौकरियां देने में नाकाम हैं, ऊपर से पेपर लीक और तमाम तरह की परीक्षा पारदर्शिता को लेकर अव्यवस्थाएं इतनी हैं कि छात्रों को तमाम तरह की परेशानियां आती हैं। ऊपर से अगर कोई भर्ती होती भी है, तो उसमें उन्ही बच्चों का सिलेक्शन हो पाता है, जो मोटी रिश्वत दे पाने में समर्थ होते हैं। और इस प्रकार से कर्ज लेकर या जैसे-तैसे खुद मेहनत मजदूरी करके जो छात्र पढ़ाई करते हैं, उनके साथ तो न्याय होता ही नहीं है, उनके साथ भी न्याय नहीं हो पाता, जो कड़ी मेहनत करके सरकारी नौकरियों के लिए दिन-रात तैयारी करते हैं। बिहार में इस बार जिस प्रकार से बीपीएससी यानि बिहार लोक सेवा आयोग की परीक्षा में पेपर लीक और उसके बाद इसके खिलाफ जांच और दोबारा परीक्षा आयोजित कराने की मांग को लेकर शांति से धरने पर बैठे, तो नीतीश कुमार के नेतृत्व वाली बिहार की एनडीए सरकार ने छात्रों की मांगें मानने की जगह उन पर लाठियां भंजवा दीं। लेकिन इसके बाद हालात बेकाबू हो गए।

बहरहाल, बीपीएससी की 70वीं प्रारंभिक परीक्षा 13 दिसंबर 2024 को आयोजित हुई थी। इस परीक्षा में गड़बड़ी और लापरवाही को स्वीकार भी सरकार की तरफ से किया गया है और छात्रों को शांत करने के लिए बिहार सरकार ने बीपीएससी की इस 70वीं संयुक्त (प्रारंभिक) प्रतियोगिता पुनर्परीक्षा का आयोजन 4 जनवरी को पटना के 22 केंद्रों पर दोपहर 12 बजे से करा तो दिया, लेकिन पूरे बिहार में तमाम छात्र आंदोलन जारी रखे हुए हैं और ऐसा कहा जा रहा है कि परीक्षा के बाद छात्र फिर से आंदोलन पर बैठ सकते हैं। बिहार सरकार की तरफ से मिली जानकारी के मुताबिक, 4 जनवरी को बीपीएससी परीक्षा में करीब 12 हजार छात्र परीक्षा दी। परीक्षा से वाले दिन बिहार सरकार के आदेश पर सुबह 8 बजे से शाम 5 बजे तक परीक्षा केंद्रों के चारों तरफ 100 मीटर के दायरे में धारा-144 लागू रही, जिससे परीक्षा केंद्रों के पास कोई खड़ा नहीं हो सका। यहां तक कि परीक्षा केंद्रों के 100 मीटर दूर तक सभी फोटो स्टेट की दुकानें और साइबर कैफे बंद रहे। बहरहाल, सवाल ये है कि क्या परीक्षा दोबारा कराने से छात्र आंदोलन खत्म होगा? हो सकता है कि बिहार सरकार जल्द ही इस परीक्षा के रिजल्ट घोषित कर दे, लेकिन क्या इससे छात्र शांत हो सकेंगे? छात्रों का आरोप है कि उनके साथ न सिर्फ धोखा हुआ है, बल्कि उन पर बिना कारण के अत्याचार भी हो रहा है, जिसका जवाब विधानसभा चुनाव में दिया जाएगा। छात्रों के आंदोलन में कई विपक्षी नेता भी कूद पड़े हैं। इन नेताओं में लोकसभा चुनाव में हार चुके चुनावी रणनीतिकार प्रशांत किशोर, पूर्णिया के सांसद पप्पू यादव, कांग्रेस और आरजेडी के कई नेता बढ़-चढ़कर भाग ले रहे हैं। छात्रों के साथ आंदोलन करने को लेकर बिहार में करीब 10 विपक्षी विधायकों के खिलाफ एफआईआर भी दर्ज हो चुकी है। सभी विधायकों के खिलाफ छात्रों को भड़काने, तोड़फोड़ कराने, चक्का जाम का आह्वान करने और सरकार के खिलाफ काम करते हुए विधि व्यवस्था में व्यवधान डालने के आरोप लगे हैं।

लेकिन सरकार ने अपनी गलतियों को अभी नहीं माना है। नीतीश कुमार कुछ बोल नहीं रहे हैं और न ही भाजपा के दो-दो उप मुख्यमंत्री कुछ बोल रहे हैं। चारों तरफ नीतीश सरकार की जब निंदा होने लगी और जब बिहार सरकार को लगा कि उसे आने वाले इस साल 2025 के विधानसभा चुनाव में इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा, तो उसने तुरत-फुरत बीपीएससी की परीक्षा दोबारा आयोजित करा दी, लेकिन न तो छात्रों से माफी मांगी है और न ही उनके खिलाफ कार्रवाई करने वाली पुलिस और उसके अधिकारियों के खिलाफ कोई कार्रवाही नहीं की गई। रोजगार अधिकार अभियान की संचालन समिति की तरफ से जारी किए गए एक वक्तव्य में राजेश सचान ने कहा है कि पटना में जिस प्रकार से बीपीएससी परीक्षार्थियों और उनका साथ देने आए छात्रों पर बर्बर तरीके से लाठीचार्ज किया गया और भयंकर सर्दी के मौसम में वाटर कैनन से पानी फेंका गया है, वो गलत है। छात्रों के दमन पर तत्काल रोक लगनी चाहिए।

सवाल ये भी है कि जहां भी भाजपा या एनडीए की सरकार होती है, वहां पेपर लीक की घटनाएं क्यों होती हैं? हालांकि ये कोई पहली बार नहीं है, जब बिहार में पेपर लीक की घटना हो रही है और न ही पहली बार है कि छात्रों पर लाठीचार्ज हो रहा है। बिहार तो नकल करने के लिए भी बदनाम रहा है। लेकिन कभी भी बिहार में किसी सरकार ने छात्रों के हित में कोई ऐसा काम नहीं किया, जिससे उनका पलायन रुक सके और वो अपने राज्य यानि बिहार में रोजगार पा सकें। और जब-जब छात्रों ने अपनी मांगों को लेकर आवाज उठाई है, तब-तब उन पर लाठियां बरसाई गई हैं। इस बार भी पेपर लीक और दूसरी परेशानियों को लेकर जब हजारों की तादाद में छात्र गांधी मैदान में जुटे, तो सरकार ने उनकी आवाज नहीं सुनी, उल्टा पुलिस भेजकर उन पर लाठियां बरसवा दीं। छात्रों ने फिर भी बिहार सरकार को पूरे विवाद को सुलझाने के लिए 48 घंटे का समय दिया था, जिसके बाद ही वो आमरण-अनशन पर बैठे थे। लेकिन सरकार ने इस मामले को बिना ये सोचे ही बढ़ा दिया कि छात्रों के आंदोलन से सरकारें गिर भी जाती हैं।

6 महीने से भारतीय बल्लेबाजी फ्लॉप

गावस्कर बोले - रोहित और कोहली का टेस्ट भविष्य सिलेक्टर्स पर

● मुंबई,

भारत के पूर्व कप्तान सुनील गावस्कर का मानना है की रोहित शर्मा और विराट कोहली का क्रिकेटिंग भविष्य अब सिलेक्टर्स के हाथों में हैं। पिछले छह महीनों से आउट ऑफ फॉर्म चल रहे दोनों बल्लेबाजों की वजह से टीम के प्रदर्शन में कमी आई है।

न्यूजीलैंड से घर पर क्लीन स्वीप और 10 साल बाद बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी गंवाने के बाद विराट और रोहित के टेस्ट फ्यूचर पर सवाल उठ रहे हैं। 6 महीने से बल्लेबाजी फ्लॉप गावस्कर ने कहा कि भारत डब्ल्यूटीसी (वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप) फाइनल के लिए क्वालीफाई नहीं कर पाया है। टीम को उन कारणों पर विचार करना होगा कि ऐसा क्यों हुआ, जिससे हमारी बल्लेबाजी खराब रही। न हम खुद बनाए गए स्पिनिंग ट्रैक पर खेल पाए और न ही बाउंसी ट्रैक पर अच्छा परफॉर्म कर पाए। बैटिंग यूनिट के दो मुख्य बल्लेबाज रोहित और कोहली टीम की सबसे बड़ी कमजोरी साबित हुए। बीजीटी में कोहली ने 9 पारियों में एक नाबाद शतक सहित 190 रन बनाए। जबकि रोहित से 5 पारियों में मात्र 31 रन बन सके। भारतीय टीम सीरीज की 9 इनिंग में 6 बार 200 का आंकड़ा पार न कर सकी। पूर्व कप्तान ने कहा कि पिछले छह महीनों में बल्लेबाजी खराब रही और यही मुख्य कारण था कि हम मैच हार गए जो हमें जीतने चाहिए थे।

इसलिए, यदि 2027 डब्ल्यूटीसी के फाइनल में हमें पहुंचना है तो जून से इंग्लैंड में शुरू हो रही टेस्ट सीरीज में सिलेक्टर्स को तय करना होगा कि टीम कैसी बनानी है। 75 वर्षीय ने कहा कि डोमेस्टिक सर्किट में अच्छे प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ी को मौका देने का समय आ गया है। गावस्कर ने नीतीश कुमार रेड्डी जैसे टैलेंटेड खिलाड़ी के चयन के लिए सिलेक्टर्स की सराहना की। डब्ल्यूटीसी में इस बार भारत के तरफ तीन शतक लगे थे। नीतीश के अलावा यशस्वी जायसवाल और विराट कोहली ने शतक लगाया था। गेंदबाजों को लेकर गावस्कर ने कहा कि बॉलिंग अटैक में भारत के पास बहुत टैलेंट हैं। लेकिन यह तय किया जाना चाहिए कि जसप्रीत बुमराह जैसे गेंदबाज पर ज्यादा वर्कलोड न हो। बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी 2025 में नीतीश भारतीय टीम के दूसरे टॉप स्कोरर थे। उन्होंने 9 इनिंग 298 रन बनाए थे। वहीं गावस्कर ने कहा कि भारतीय क्रिकेट में स्टार क्रिकेटर को ऊंचे स्थान पर रखने की प्रथा समस्या रही है। यह पिछले कुछ वर्षों में आया है। सभी को अपने रोल का पता होना चाहिए।

चैंपियंस ट्रॉफी से वापसी कर सकते हैं मोहम्मद शमी

● नई दिल्ली,

तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी चैंपियंस ट्रॉफी से भारतीय टीम में वापसी कर सकते हैं। उन्होंने मंगलवार को एक वीडियो पोस्ट के जरिए अपनी फिटनेस अपडेट दी है। 27 सेकंड के वीडियो में शमी फुल स्ट्रेंथ गेंदबाजी करते दिखे।

34 साल के इस गेंदबाज ने अपनी पोस्ट में लिखा- 'सटीकता, गति और जुनून... दुनिया से टकराने के लिए पूरी तरह तैयार!' शमी वनडे वर्ल्ड कप 2023 के बाद से टीम इंडिया से बाहर चल रहे हैं। पूरी तरह फिट नहीं होने के कारण उन्हें बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी (बीजीटी) के लिए भारतीय टीम में नहीं चुना गया था, हालांकि उन्होंने रणजी ट्रॉफी, सैयद मुश्ताक अली और विजय हजारे ट्रॉफी में अपने प्रदर्शन से वापसी की दावेदारी की थी। शमी ने चोट के बाद बंगाल की ओर से रणजी ट्रॉफी के राउंड-1 में मप्र के खिलाफ मैच से वापसी की। उन्होंने सैयद मुश्ताक अली (टी-20) और विजय हजारे ट्रॉफी (वनडे) में प्रभावशाली प्रदर्शन किया था, जिससे भारतीय टीम में उनकी वापसी की उम्मीद बढ़ गई हैं। वहीं पूर्व भारतीय कोच रवि शास्त्री और

वीडियो पोस्ट कर लिखा- दुनिया से टकराने के लिए तैयार

ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान रिकी पोंटिंग ने आईसीसी रिव्यू में कहा कि अगर मोहम्मद शमी को 5 मैचों की बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के आखिरी दौर में टीम में शामिल किया जाता, तो भारत का पलड़ा भारी हो सकता था। दोनों ने उनके इंजरी मैनेजमेंट सिस्टम पर सवाल भी उठाए। ऐसे में सिलेक्टर्स को शमी के बारे में सोचना होगा। मोहम्मद शमी ने एक साल पहले 19 नवंबर 2023 को आखिरी इंटरनेशनल मैच खेला था। वह वनडे वर्ल्ड कप का फाइनल मुकाबला था। शमी ने उस मुकाबले में एक विकेट लिया था। भारतीय टीम उस मुकाबले में 6 विकेट की करारी हाल झेलनी पड़ी थी। वनडे वर्ल्ड कप 2023 के फाइनल में मोहम्मद शमी ने ऑस्ट्रेलिया को पहला झटका दिया था। उन्होंने डेविड वॉर्नर (7 रन) को कोहली के हाथों कैच कराया। पिछले साल जनवरी में एंकल सर्जरी कराई थी।

सार संक्षेप

शनिवार से शुरू होगा डीपी वर्ल्ड इंटरनेशनल लीग का तीसरा सत्र

दुबई : डीपी वर्ल्ड इंटरनेशनल लीग टी-20 का बहुप्रतीक्षित तीसरा सत्र नये उत्साह और रोमांच के साथ 11 जनवरी से शुरु होगा। दुबई इंटरनेशनल स्टेडियम में होने वाली डीपी वर्ल्ड आईएल टी-20 सीजन के उद्घाटन समारोह में बॉलीवुड सुपरस्टार शाहिद कपूर, अभिनेत्री पूजा हेगड़े और सोनम बाजवा प्रस्तुति देंगे। प्रसिद्ध बॉलीवुड निर्माता और अभिनेता जैकी भगनानी और रिधिमा पाठक समारोह की मेजबानी करेंगे। समारोह का सीधा प्रसारण जी नेटवर्क और उसके भागीदारों के जरिए डिजिटल एवं अन्य प्लेटफॉर्म पर किया जाएगा। इस सीजन का पहला मैच मौजूदा चैंपियन एमआई एमिरेट्स और दुबई कैपिटल्स के बीच होगा। इस सत्र को लेकर कमेंट्रेटर वीरेंद्र सहवाग ने कहा कि मुझे डीपी वर्ल्ड आईएल टी-20 में कार्निवल जैसा माहौल पसंद है, यह मेरे लिए घर से दूर घर जैसा है। डीपी वर्ल्ड आईएल टी-20 हमेशा क्रिकेटरों और आयोजन स्थलों की गुणवत्ता के कारण बहुत प्रतिस्पर्धी होता है और मैं दुनिया भर के प्रशंसकों से आग्रह करता हूं कि वे इसे देखें और बेहतरीन क्रिकेट का लुत्फ उठाएं। वसीम अकरम ने कहा कि मैं डीपी वर्ल्ड आईएल टी-20 के साथ अपने तीसरे सीजन के लिए उत्साहित हूं। इस क्षेत्र ने क्रिकेट में कई यादगार पल देखे हैं, जिनमें से कई मेरे करियर के मुख्य आकर्षण का केंद्र रहे हैं।

रैकेट फेंकने के लिए नोरी ने मांगी माफी

ऑकलैंड : कैमरून नोरी ने ऑकलैंड क्लासिक में फेकुंडो डियाज अकोस्टा से सीधे सेट में पिछड़ने के बाद हताशा में अपना रैकेट फेंका जो कि गलती से एक दर्शक को लगा और उन्होंने इसके लिए माफी मांगी। यह घटना उस समय हुई जब अर्जेंटीना के फाकुंडो डियाज अकोस्टा से सीधे सेट में 6-2, 5-3 से पिछड़ने पर नोरी ने हताशा अपना रैकेट फेंका जोकि बॉक्स में बैठक एक महिला को जा लगा। अम्पायर ने नोरी को चेतावनी दी। नोरी को इस मुकाबले में 6-2, 6-3 से हरा मिली। मैच के बाद नोरी ने कहा कि मेरा ऐसा करने का कोई इरादा नहीं था और ऐसा करना मेरे स्वभाव में बिलकुल भी नहीं है। मैं अपने इस व्यवहार के माफी मांगता हूं।

आईएसएल : मुंबई सिटी एफसी ने ईस्ट बंगाल एफसी को 3-2 से हराया

कोलकाता : मुंबई सिटी एफसी ने इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) के रोमांचक मुकाबले में ईस्ट बंगाल एफसी को 3-2 से हराया। विवेकानंद युवा भारती क्रीड़ांगन में खेले गये मैच में मुंबई सिटी एफसी ने पहले हाफ में आक्रामक खेल का शानदार प्रदर्शन कर शुरुआती 45 मिनट में ईस्ट बंगाल एफसी के बॉक्स के अंदर 12 बार प्रवेश किया। मुंबई सिटी के लिए एल छंगटे ने 39वें मिनट में गोल दागकर अपनी टीम को बढ़त दिलाई। इसके चार मिनट बाद निकोस करेलिस ने 43वें मिनट में गोलकर बढ़त को दोगुना कर दिया। ईस्ट बंगाल के लिए साहिल पनवर ने 66वें मिनट में गोल किया। इसके बाद डेविड लाहलंसांगा ने कॉर्नर किक के जरिए 83वें मिनट में गोलकर स्कोर को 2-2 से बराबर कर दिया। 87वें मिनट में मुंबई सिटी के निकोसल करेलिस ने गोल कर अपनी टीम की जीत सुनिश्चित कर दी। मैच में यह करेलिस का दूसरा गोल था।

अनाहत सिंह ने जीता ब्रिटिश जूनियर ओपन अंडर- 17 का खिताब

बर्मिंघम : भारत की अनाहत सिंह ने ब्रिटिश जूनियर ओपन 2025 स्क्वैश टूर्नामेंट के फाइनल में मिस्र की मलिका एल्काराक्सी को हराकर महिलाओं का अंडर-17 खिताब जीता। बर्मिंघम विश्वविद्यालय के ग्लास कोर्ट में खेले गए मुकाबले शीर्ष वरीयता प्राप्त 16 वर्षीय भारतीय स्क्वैश खिलाड़ी ने मिस्र की दूसरी वरीयता प्राप्त मलिका एल्काराक्सी को 3-2 (4-11, 11-9, 6-11, 11-5, 11-3) से हराया। इससे पहले अनाहत ने सेमीफाइनल में मिस्र की रुकैया सलेम को 4-1 (9-11, 11-6, 11-8, 11-6) से हराने पहले अंतिम आठ में मिस्र की नादिया टैमर पर 3-0 (11-6, 11-7, 11-7) से सीधी जीत दर्ज की थी।

पूर्व क्रिकेटर युवराज सिंह ने रोहित-कोहली का किया सपोर्ट

● मुंबई,

पूर्व भारतीय ऑलराउंडर युवराज सिंह ने आलोचनाओं का सामना कर रहे रोहित शर्मा और विराट कोहली का समर्थन किया है। 43 साल के युवराज ने कहा कि हम अपने महान खिलाड़ियों के बारे में बात कर रहे हैं, हम उनके बारे में बहुत बुरी बातें कह रहे हैं। लोग भूल जाते हैं कि उन्होंने अतीत में क्या हासिल किया है। वे इस समय के महानतम क्रिकेटरों में से एक हैं। ठीक है, वे हार गए, उन्होंने अच्छा क्रिकेट नहीं खेला। वे हमसे ज्यादा आहत हैं। टीम इंडिया को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 10 साल बाद बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में 3-1 की हार झेलनी पड़ी है। सीरीज में भारतीय कप्तान रोहित

शर्मा ने 31 और विराट कोहली ने 190 रन बनाए। खराब प्रदर्शन के कारण दोनों को क्रिटिसाइज किया जा रहा है। युवराज सिंह ने कहा कि न्यूजीलैंड के

कहा- लोग भूल जाते हैं कि दोनों ने क्या अचीव किया, इंडिया ने लगातार 2 सीरीज गंवाई

हाथों घरेलू मैदान पर क्लीन स्वीप (3-0) होना टीम इंडिया के लिए बीजीटी की हार से भी बड़ी असफलता है। उन्होंने कहा कि मुझे लगता है कि कीवियों से हारना अधिक पीड़ादायक है। वे घरेलू मैदान पर 3-0 से हार गए। यह स्वीकार्य नहीं है। बीजीटी हारना तब भी स्वीकार किया जा सकता है, क्योंकि आप ऑस्ट्रेलिया में 2 बार इस जीत चुके हैं और इस बार हार गए।

आईसीसी प्लेयर ऑफ द मंथ बन सकते हैं जसप्रीत बुमराह

● दुबई,

जसप्रीत बुमराह दिसंबर की परफॉर्मेंस के लिए आईसीसी प्लेयर ऑफ द मंथ का अवॉर्ड जीत सकते हैं। आईसीसी ने उनके साथ दक्षिण अफ्रीका के गेंदबाज डैन पैटरसन और ऑस्ट्रेलिया के कप्तान पैट कमिंस को भी नॉमिनेट किया है। महिला क्रिकेटर में भारत की स्मृति मंधाना भी रेस में हैं। उनके साथ ऑस्ट्रेलिया की एनाबेल सदरलैंड और दक्षिण अफ्रीका की एन मलाबा भी नॉमिनेट हुई हैं।

जसप्रीत बुमराह ने दिसंबर में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 3 टेस्ट खेले। इनमें उन्होंने 22 विकेट अपने नाम किए। मेलबर्न और ब्रिस्बेन में तो उन्होंने 18 विकेट लिए। एडिलेड में वह 4 ही विकेट ले सके, क्योंकि दूसरी पारी में ऑस्ट्रेलिया ने 2 ही ओवर बैटिंग कर मैच जीत लिया था। जसप्रीत बुमराह ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ प्लेयर ऑफ द सीरीज बने थे। प्लेयर ऑफ द मंथ की रेस में दक्षिण अफ्रीका के डैन पैटरसन भी शामिल हैं। उन्होंने श्रीलंका और पाकिस्तान के खिलाफ 2 ही टेस्ट में 13 विकेट झटक लिए। वहीं ऑस्ट्रेलिया

कमिंस और पैटरसन भी रेस में महिला क्रिकेटर्स में स्मृति मंधाना का नाम शामिल

के कप्तान पैट कमिंस ने भारत के खिलाफ 3 टेस्ट में 17 विकेट लिए। तीनों प्लेयर्स में बुमराह की परफॉर्मेंस बेहतर रही, इसलिए वह इस अवॉर्ड को जीत सकते हैं। वहीं भारत की ओपनिंग बैटर स्मृति मंधाना ने दिसंबर में 9 मैच खेले और 463 रन बना दिए। उन्होंने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ एक शतक भी लगाया।

'बुमराह को उकसाना मेरी गलती'

ऑस्ट्रेलियन ओपनर कोंस्टास बोले- ख्वाजा बैटिंग में टाइम काट रहे थे जसप्रीत ने रोका तो मैंने उन्हें गुस्सा दिलाया

सिडनी,

19 साल के ऑस्ट्रेलियाई ओपनर सैम कोंस्टास ने जसप्रीत बुमराह के साथ सिडनी में हुए विवाद पर अपनी गलती मान ली है। उन्होंने कहा कि उस्मान ख्वाजा बैटिंग के लिए ज्यादा वक्त ले रहे थे, बुमराह ने उन्हें जल्दी बैटिंग करने के लिए कहा। मैंने नॉन-स्ट्राइकर एंड पर बुमराह से बहस की तो वह गुस्सा हो गए। अगली गेंद पर उन्होंने ख्वाजा को पवेलियन ही भेज दिया।

भारत को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी 3-1 से गंवानी पड़ी। सीरीज का आखिरी मैच 3 जनवरी से सिडनी में खेला गया। मैच के पहले दिन के आखिरी ओवर में कोंस्टास बेवजह बुमराह

से भिड़ गए थे। कोंस्टास ने इस मामले में ऑस्ट्रेलियाई चैनल पर कहा कि बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में सिडनी टेस्ट के पहले दिन का खेल चल रहा था। बुमराह गेंदबाजी कर रहे थे। ऑस्ट्रेलियाई टीम के लिए उस्मान ख्वाजा और सैम कोंस्टास ओपनिंग करने आए। बुमराह चाह रहे थे कि वह फटाफट ओवर फेंके और भारत को दिन का खेल खत्म होने से पहले एक ओवर गेंदबाजी करने के लिए और मिल जाए। इसी दौरान ख्वाजा स्ट्राइकर एंड पर समय लेने लगे, वह टाइम काट रहे थे ताकि उन्हें अगला ओवर न खेलना पड़ा। बुमराह ने उन्हें बैटिंग करने के लिए कहा कि तभी मैंने बुमराह को भड़काने के लिए नॉन स्ट्राइकर एंड से ही कुछ कह दिया। जिसके बाद दोनों में विवाद बढ़ गया। अंपायर को बीच में आकर दोनों को अलग करना पड़ा। बुमराह मेरी बात से गुस्से में आ गए और अगली ही गेंद पर ख्वाजा को स्लिप में केएल राहुल के हाथों कैच करा दिया। यह क्रिकेट का हिस्सा है।

महिला प्रीमियर लीग लखनऊ और बड़ोदा में

बीसीसीआई ने वेन्यू फाइनल किए, 2 फेज में टूर्नामेंट, 6 या 7 फरवरी को पहला मैच

● मुंबई,

महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) के तीसरे सीजन के लिए बीसीसीआई ने 2 वेन्यू फाइनल कर लिए हैं। बड़ौदा और लखनऊ में 5 टीमों के बीच सभी मैच खेले जाएंगे। टूर्नामेंट 6 या 7 फरवरी से शुरू हो सकता है। बड़ौदा में सेकेंड फेज के मैच होंगे, जिनमें क्वालिफायर और फाइनल भी शामिल हैं।

टूर्नामेंट का ऑफशियल शेड्यूल रिलीज होना बाकी है। हालांकि, बोर्ड ने उत्तर प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन (यूपीसीए) और बड़ौदा क्रिकेट एसोसिएशन (बीसीए) को उनके ग्राउंड पर मैच कराने की जानकारी दे दी है। शेड्यूल का ऑफिशियल अनाउंसमेंट कुछ ही दिनों में हो जाएगा है। बड़ौदा के कोटाम्बी स्टेडियम में भारत और वेस्टइंडीज के बीच दिसंबर 2024 में विमेंस वनडे के 3 मैच खेले गए थे। बड़ौदा में कोटाम्बी स्टेडियम है, जिसका उद्घाटन पिछले महीने ही हुआ था। यहां भारत और वेस्टइंडीज के बीच मैच खेला गया था। यहां 3 वनडे हुए थे। इस स्टेडियम

8 या 9 मार्च को हो सकता है टूर्नामेंट का फाइनल

में सीनियर महिला टी-20 टूर्नामेंट और रणजी ट्रॉफी के मैच भी हो चुके हैं। स्टेडियम में फ्लड लाइट्स लग चुके हैं। 9 जनवरी से शुरू होने वाले विजय हजारे ट्रॉफी के नॉकआउट मैच यहां होंगे, इसमें इन लाइट्स की टेस्टिंग भी हो जाएगी। डब्ल्यूपीएल के शुरूआती 2 सीजन में 5 टीमों के बीच 23-23 मैच खेले गए थे। इस बार भी 23 मैच ही होंगे, जिसके लिए लखनऊ का इकाना स्टेडियम पहला ऑप्शन है। जहां फर्स्ट फेज के 10 या 11 मैच खेले जाएंगे। बड़ौदा में सेकेंड फेज के मैच खेले जाएंगे। टूर्नामेंट का फाइनल 8 या 9 मार्च को हो सकता है। जिसके बाद 14 मार्च से ही आईपीएल भी शुरू हो जाएगा। डब्ल्यूपीएल का पहला सीजन मुंबई में ही हुआ था। जबकि दूसरे सीजन में बेंगलुरु और दिल्ली को वेन्यू बनाया गया था। बेंगलुरु डिफेंडिंग चैंपियन है, वहीं मुंबई ने पहले सीजन का खिताब जीता था।

अफगान के साथ मैच खेलने के बहिष्कार को ईसीबी ने किया खारिज

लंदन, वार्ता : ईसीबी ने चैंपियंस ट्रॉफी में अफगानिस्तान के खिलाफ होने वाले मैचों के बहिष्कार के आहवान को खारिज कर दिया है। ईसीबी ने अफगानिस्तान के खिलाफ कार्रवाई के लिए एकजुट प्रतिक्रिया का आहवान किया है, जबकि इंग्लैंड की पुरुष टीम से अगले महीने दोनों टीमों के बीच होने वाले चैंपियंस ट्रॉफी मैच का बहिष्कार करने की मांग की गई है। इंग्लैंड के 160 से अधिक राजनेताओं के हस्ताक्षर वाले पत्र के जवाब में ईसीबी के मुख्य कार्यकारी रिचर्ड गोल्ड ने कहा कि शासी निकाय ऐसा समाधान खोजने के लिए प्रतिबद्ध है, जो अफगानिस्तान में महिलाओं के अधिकारों को बनाए रखता है। चैंपियंस ट्रॉफी में इंग्लैंड को 26 फरवरी को लाहौर में अफगानिस्तान के खिलाफ मैच खेलना है। तालिबान शासन द्वारा महिलाओं के अधिकारों पर किए जा रहे हमले को लेकर ब्रिटेन के राजनेता चाहते हैं कि ईसीबी अफगान के साथ चैंपियंस ट्रॉफी के मैच खेलने से इनकार करे।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सैयद ज़की हैदर के लिए इरानीयन आर्ट प्रिंटर्स 1534 कासिमजान स्ट्रीट दरियागंज नई दिल्ली 11006 से मुद्रित कराकर, 2684 गली काले खां कूचा चलान दरियागंज नई दिल्ली 02 से प्रकाशित किया।
संपादक : सैयद ज़की हैदर- हैड ऑफिस :- एफ19/4 सेकेंड फ्लोर नफीश रोड जामिया नगर दिल्ली- 110025., सम्पर्क सूत्र :- 9911371802, 9810383593
जितेन्द्र कुमार बिस्वाल ब्यूरो चीफ उड़ीसा/ गोविंद कनोडिया/ पटना/ सैय्यद यूसुफ अली नक़वी-पॉलिटिकल एडिटर। ई-मेल:- dailyloktantra@gmail.com

किसी भी प्रकार के विवाद हेतु निपटारे के लिए केवल दिल्ली न्यायालय ही मान्य होगी।
नोट- किसी भी समाचार/आलेख पर दावा प्रति दावा/आपत्ति समाचार प्रकाशन के 15 दिनों के अन्तराल तक ही मान्य होगा। समाचार पत्र में प्रकाशित आलेख से संपादक/प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

क्षेत्रीय कार्यालय अनवार मंजिल नया टोला गंज नंबर 01 बेतिया/ बिहार/ पिन नंबर 84 5438/>> संवाददाता, सना खान/(डॉ. अमानुल हक) स्थानीय संपादक/बिहार)